रेडियो पत्रिका
हमारी आवाज़
N.F.L.C
NEW DELHI
Second Edition....
न्यू फ्रेन्डस क्लब नई दिल्ली की पेशकश
S.M. Khan

जून 2005, द्वितीय अंक

रेडियो पत्रिका

हमारी आवाज़

सम्पादक मंडल

★ एस० मुजाहिद ख़ान
★ बबलू कश्यप
★ तुषार गुप्ता

विशेष सहयोगी

★ पिन्टू दीवाना 9313974383

मुख्य सम्पादकीय कार्यालय

बबलू कश्यप
सी-390, मंगोलपुरी, नई दिल्ली-83
Mobile : 9810059319

उ०प्र० कार्यालय

एस. मुजाहिद ख़ान
कुलिनजन, दौराला, मेरठ
पिन-250221,
Ph. : (01237) 235313, 237435
(0121) 5524503 Mobile : 09319249840

तुषार गुप्ता
436/6, जागृति विहार, मेरठ

कवर डिजाइन व रेखांकन
एस. मुजाहिद ख़ान

इबादतों की तरह मैं ये काम करता हूँ
मेरा उसूल है सबको सलाम करता हूँ
मुख़ालिफ़त से मेरी शख़्सियत संवरती है
मैं दुश्मनों का बड़ा एहतराम करता हूँ

खुदा का अहसान-ए-अज़ीम है कि एक बार फिर हम आपसे मुख़ातिब हैं। ये मुमकिन हुआ है आप श्रोताओं और FM रेडियो के उद्घोषकों की बेपनाह मदद, सहयोग से। जब हमने 'हमारी आवाज़' का प्रथम अंक प्रकाशित करने की योजना बनाई तो काफ़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा, कुछ शुभचिंतकों ने तो हम पर अजीब तरह का इल्ज़ाम भी लगाया-जैसे हम पत्रिका छापने के बहाने से लड़कियों के पते हासिल करना चाहते हैं। कुछ दोस्तों ने कहा कि हमारा तो धंधा ही यही है। बहर हाल हमें बुरा नहीं लगा। क्योंकि ये सारे तर्जुबे हमें आगे बढ़ने में सहायक हैं। यहाँ मैं एक शेर अर्ज़ करना चाहूँगा -

ख़ार जो भेजे उसने सौगात में
और शिद्दत बढ़ी मेरे जज़्बात में

दोस्तो ! ठोकरें इंसान को जगाने के लिये होती हैं जो लोग ज़माने की तेज़ खिलाफ़त के बावजूद अपना संतुलन बनाए रखते हैं और गिर-गिर कर संभलते हुए कामयाबी की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं ऐसे लोग महानता की ऐसी मीनारें हैं जिनकी ऊँचाई से उनकी कामयाब ज़िन्दगी का अंदाज़ा लगाया जाता है।

ज़िन्दगी में घटने वाली घटनाएँ अपने अंदर एक नया सबक छुपाए रखती हैं। हमें उनसे तर्जुबा हासिल करना चाहिये। यदि कोई घटना हमारे साथ घटित होती है चाहे वो कुदरती हो या किसी इंसान के कारण तो हमें उस घटना का शुक्रिया अदा करना चाहिए, क्योंकि उस घटना के कारण एक इंसान के अंदर छुपे रूप को हमने पहचाना ......

ये प्रयास आपको कैसा लगा ...... ?

आपकी राय, सुझावों के इंतज़ार में -

आपके अपने दोस्त, मुजाहिद ख़ान, बबलू कश्यप, तुषार गुप्ता

के.एस. सर्मा
मुख्य कार्यकारी
K.S. Sarma
Chief Executive
Tel. : 2373 7603
2335 2558
Fax : 2335 2549

पी.टी.आई. बिल्डिंग
संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001
2nd Floor, PTI Building
Sansad Marg
New Delhi

सं० : 05/05/05
हिन्दी एकक/508

प्रसार भारती
PRASAR BHARTI
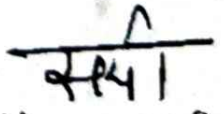
संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'न्यू फ्रैंडस लिस्नर क्लब' अपनी रेडियो पत्रिका "हमारी आवाज़" का दूसरा प्रकाशन शीघ्र प्रकाशित कर रहा है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका में रोचक सामग्री प्रकाशित होगी। कई उदीयमान रचनाकारों को इस पत्रिका के माध्यम से अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

"हमारी आवाज़" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

(के०एस० सर्मा)

श्री एस० मुजाहिद ख़ान
(मुख्य सम्पादक)
सी–390, मंगोलपुरी,
नई दिल्ली– 110084
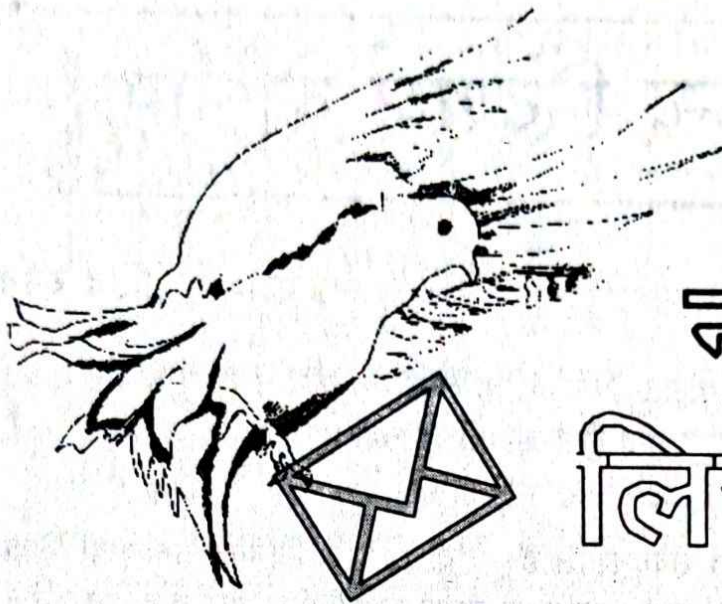
हमारा पैग़ाम - दोस्ती

हमारा धर्म - इंसानियत

हमारा काम - प्यार बाँटना

हमारा उद्देश्य - रंग भेद, जात-पात रहित समाज का निर्माण

हमारा सपना - शान्ति

हमारी आवाज़ - हम सब एक हैं

अगर आपके साथ मुहब्बत, प्यार, अपनाईयत जैसे कीमती जज़्बे नहीं हैं। तो आप हज़ार लोगों के बीच भी तन्हा, अकेले हैं।

मुहब्बत एक ऐसी खुशबू है जिसे मिल जाए वो इंसान कभी अकेला नहीं होता।
ये हमारी खुश नसीबी है कि हम कभी भी अकेले नहीं होते।
तो हमारे पास आईये और "न्यू फ्रेंड लिस्नर क्लब" के सदस्य बन जाईये।

★ न्यू फ्रेंडस लिस्नर क्लब ★

नई दिल्ली : बबलू कश्यप सी–390, मंगोलपुरी, नई दिल्ली–83 M. : 9810059319

उत्तर प्रदेश : तुषार गुप्ता 436/6, जागृति विहार, मेरठ (उ० प्र०)

एस. मुजाहिद ख़ान, कुलिनजन, दौराला, मेरठ– 250221

दूरभाष : यू.पी. : 01237-235313-237435 (एस. मुजाहिद ख़ान)

आकाशवाणी, केन्द्र निदेशक के नाम

❑ एस० मुजाहिद ख़ान

रेडियो श्रोता दो तरह के होते हैं। एक वो जो चलते–फिरते यात्रा के दौरान कार में या यूं ही घर में बैठे समय गुज़ारी के लिए सुनते हैं। इन श्रोताओं को इस बात से कोई मतलब नहीं होता कि चैनल कौन सा है अथवा प्रज़ेन्टर्स कौन है ?

दूसरी कैटेगरी श्रोताओं की वो है जो अत्यन्त संवेदनशील है। ये वो श्रोता है जिनका सम्बंध या लिंक स्टूडियों के भीतर बैठे प्रेज़ेन्टर से भावनात्मक जुड़ा होता है। हवाओं के सहारे हज़ारों मील दूर बैठे इंसान लाखों श्रोताओं के चहैते होते हैं। श्रोता और प्रेज़ेन्टर का रिश्ता कितना गहरा और जज़्बाती होता है इस की मिसाल पेश की है केवल आकाशवाणी–ऑल इण्डिया रेडियो ने। कल्पना कीजिए भारत में पहला आकाशवाणी प्रसारण 1927 में शुरू हो गया था। उस वक़्त रेडियो एक अजूबा ही था। धीरे–धीरे लोगों का शौक बढ़ता गया। आज भी आकाशवाणी के ऐसे नियमित श्रोता हैं जिनकी उम्र 60 वर्ष से अधिक हैं और वे आज भी रेडियो सुनते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में नियमित पत्र लिखते हैं। ये श्रोता कार्यक्रमों को ध्यान से सुनते हैं फिर अपनी प्रतिक्रियाएँ भी व्यक्त करते हैं।

सवाल यह है कि इतना सब कुछ होने के बावजूद क्या आकाशवाणी इन श्रोताओं को कोई अहमियत देता है ? आकाशवाणी के सूत्रधारों की नज़र में इन श्रोताओं की क्या औकात है ?

निजी तौर पर आकशवाणी के उद्‌घोषकों से श्रोता मिलते रहते हैं और उनका रिस्पांस और प्यार अक्सर मिलता रहता है। लेकिन रिश्तों की पहचान के लिए हमारे पास प्रमाण के तौर पर कुछ ऐसा चिन्ह अथवा निशानी है जिस के माध्यम से पुराने श्रोता यह साबित कर सकें कि वे आकाशवाणी से कितने वर्षों से जुड़े हैं और आकाशवाणी में उनकी क्या पहचान है।

मेरे विचार से ऐसा कोई आयोजन नहीं है। केवल एक (राष्ट्रीय प्रसारण सेवा) टोडा पुर, नई दिल्ली प्रतिवर्ष "लिस्नर ऑफ दि इयर" साल का सर्वश्रेष्ठ श्रोता मई माह में घोषित करता है। यह भी महज़ औपचारिकता भर का आयोजन होता है। अचानक ही किसी पुराने श्रोता को यह उपाधि दे दी जाती है अन्य श्रोताओं को समारोह की जानकारी तक नहीं होती। मेरा सुझाव है कि ऑल इण्डिया रेडियो, एफ एम को भी अब इस विषय में विचार करना चाहिए क्योंकि सबसे पुराने श्रोता केवल इकलोते ऑल इण्डिया रेडियो एफ एम के पास ही हैं। जो उसकी सबसे बड़ी जीत है।

जब रेडियो स्टेशन शुरू हुए 1920 में। तब रेडियो स्टेशनों ने यह जानने के लिए कि लोग हमें कहाँ–कहाँ और कितनी दूर तक सुन रहे हैं, उन्होंने अपने पते प्रसारित किये और लोगों की प्रतिक्रियाएं मंगाई। श्रोताओं के पत्रों के जवाब में सभी रेडियो स्टेशन कुछ खास तरह के रंगीन कार्ड श्रोताओं को भेजते थे। इन कार्ड को Q.S.L. कार्ड कहा जाता था। अब श्रोताओं की यह हॉबी हो गई कि वो अपने–अपने देश में अलग–अलग

फ्रिक्वेंसीज पर कार्यक्रम सुनने और पत्र लिखने पर जवाब में उनको कलर फुल Q.S.L. कार्ड भेजे जाते। यह Q.S.L. कार्ड इकट्ठा करना श्रोताओं का शौक बन गया था।

लेकिन आज के दौर में जबकि रेडियो तकनीकी और नई तकनीकों के नये सफर तय कर रहा है। श्रोताओं के पास अपने प्रिय रेडियो स्टेशन की तरफ से ऐसी कोई निशानी या स्मृति चिन्ह नहीं है जिस पर श्रोता गर्व से कह सकें कि हम इतने पुराने श्रोता हैं।

मेरा स्टेशन डायरेक्टर महोदय से अनुरोध है कि प्रति वर्ष पुराने नियमित श्रोताओं को "साल का सर्वश्रेष्ठ श्रोता" घोषित किया जाये उस श्रोता की अपनी भागीदारी, अपनी उपलब्धियों के आधार पर।

अब पत्र भी दो प्रकार के लोग लिखते हैं एक वो हैं जो केवल कार्यक्रम में अपना नाम बुलवाना चाहते हैं उनके पत्र में नामों के अलावा कुछ और नहीं लिखा होता ऐसे श्रोता सैंकड़ो की संख्या में पत्र लिखते हैं दूसरे श्रोता वो हैं जो रचनात्मक पत्र लिखते हैं इन पत्रों की संख्या कम होती है लेकिन इनमें अच्छे संदेश होते हैं। ऐसे क्रिएटिव लैटर्स को अच्छा स्थान मिलना चाहिए। आखिर में ! स्टेशन डायरेक्टर महोदय, को याद दिलाता हूँ कि श्रोताओं की मुहब्बतों को पहचानिये। यह पंक्तियाँ आप ही के लिए हैं –

दर्दे–दिल की दवा कीजिए
आप यूं ही हंसा कीजिए
हमने चाहा है तुम को सनम
इस का कुछ तो सिला दीजिए।

* * *

मैगजीन

मैगजीन, यह शब्द फ्रैंच भाषा का है। इसका अर्थ होता है तहखाना। लेकिन पत्रिका के सन्दर्भ में मैगजीन का अर्थ होता है विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री का संग्रह। सबसे पहली मैगजीन सन् 1665 में पैरिस में प्रकाशित हुई थी। इसका नाम था "जर्नल देस स्कावांस" यानि जर्नल विद्वानों के लिए। मैगजीन शब्द के साथ प्रकाशित होने वाली पत्रिका थी। जैन्टलमैन्स मैगजीन, इसका प्रकाशन सन 1731 में हुआ था। मैगजीन को पत्रिका भी कहा जाता है। पत्रिकाएं अपने प्रकाशन काल के अनुसार साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक तथा द्विवार्षिक कहलाती है। और आजकल तो कई दैनिक समाचार पत्र भी अपनी विशेष पत्रिकाएं निकालते हैं।

जानकारी के अनुसार रॉबिन्सन क्रूसों के लेखक डेनियल डिफो ने "द रिविव" का सम्पादन किया था। यह पत्रिका सन् 1704 में लन्दन से प्रकाशित होने लगी थी। जोसेफ एडिसन ने "स्पेक्टेटर और बैंजामिन फ्रेकलिन ने "जनरल मैगजीन की शुरूआत की थी। राजाराम मोहन राय ने भी एक पत्रिका संवाद "कौमुदी" (1821 बंगला) और मिरातउल अख़बार (1822 फारसी) का सम्पादन किया था।

❏ प्रस्तुति : बबलू कश्यप

एक मुलाकात -

सुधीर त्यागी जी से

❑ वार्ताकार : बबलू कश्यप

प्यारे दोस्तो, आज हमारे साथ हैं एफ एम के एक ऐसे सितारे जिन्होंने हमें "गुल्ली डंडा–गेंद बल्ला" खिलाया, फिर अपनी आवाज़ (कॉमेडी युक्त) से "गुदगुदी" फैलायी, और आजकल (वर्तमान में) वे कुछ खट्टी–कुछ मीठी बातों से हम सब को हंसाते हैं। आप सोच रहे होंगे कि वे कौन हैं ? अजी वे हैं हम सब के दोस्त, मित्र एवम् सखा !

यह सन् 2005 के जनवरी महीने की 4 तारीख थी। नया साल शुरू हुआ था, इसलिए कुछ नया रिकार्ड करने के लिए मैं अपने घर से निकला, बेहद सर्दीली शाम में वे भी अपने ऑफिस से निकले। कुछ हम चले कुछ वे चले बस एक स्थान पर हो गई मुलाकात, चलिए पूछते हैं उनसे उन्हीं के दिल की कुछ बात–सर्वप्रथम मैं आपको नव वर्ष 2005 की शुभकामनाएँ देता हूँ।

बबलू भाई आपको भी एवम् समस्त दोस्तों को भी 2005 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्र० – श्रोताओं को अपना परिचय दे दीजिए और परिवार में कौन–कौन हैं यह भी बता दीजिए?

उ०– मेरा नाम सुधीर त्यागी है और मैं कोई सितारा नहीं हूँ, आप सभी में से एक हूँ। आपका प्यार है मेरे साथ। मेरे परिवार में मेरे माता–पिता, दो बड़े भाई हैं, मेरी पत्नी और एक प्यारा सा बेटा कुणाल है।

प्र० – अपनी डेट ऑफ बर्थ (जन्म–तिथि) बताइये प्लीज़ ?

उ० – (हँसते हुए) डेट ऑफ बर्थ बताना अच्छी बात नहीं है। फिर भी १३ फरवरी है।

प्र० – शिक्षा आपने कहाँ तक प्राप्त की है ?

उ० – मैंने इग्नू से एम०सी०ए० किया है और एम०बी०ए० गाज़ियाबाद से किया है।

प्र० – रेडियो से कैसे जुड़ें एवं कब से कार्य कर रहे हैं ?

उ० – करीब 10 सालों से जुड़ा हुआ हूँ। यह एक संयोग की बात है। क्योंकि मैं शुरू से ही क्रिकेटर रहा हूँ। तो हमारी टीम 13 दिन का एक टूर्नामेंट इंग्लैंड से खेलकर आई थी। और हमारी टीम को कवर करने के लिए खेल सेवा के प्रमुख आदेश गुप्ता जी और आकाशवाणी के पैक्स पहुँचे। उन्होंने मेरे सामने ऑफर रखा कि यदि आप हमारे यहां खेलों से सम्बन्धित कुछ करना चाहें तो करें। बस फिर हल्का–फुल्का सफर शुरू हो गया। युववाणी पर खेल सेवा प्रोग्राम प्रस्तुत करनां शुरू किया। कुद दिनों बाद एफ.एम. में ऑडीशन निकले, ऑडीशन पास किया और एफ.एम. में आ गये।

प्र० – एफ.एम. रेडियो पर पहला कार्यक्रम कौन सा था। और कब किया ?

उ० – पहला तो मैंने रात वाला नॉन स्टाप गीत संगीत किया था। लेकिन एज़ ए प्रेज़ेन्टर प्रस्तुत किया था ज़ीरो आवर शो। और वर्ष **2000** का था (सोचते हुए) महीना सितम्बर का था।

प्र० – आपने अपने अभी तक के कैरियर में एफ.एम. पर कौन–कौन से प्रोग्राम किये हैं ?

उ० – करीब सत्रह–अठारह शो मैं कर चुका हूँ कुछ प्रोग्राम जो याद है गुल्ली डंडा गेंद बल्ला, फरमाईये तो सही, हॉटलाइन, तेरी मेरी बात, और गुदगुदी मुझे बेहद पसन्द था। अब जो कर रहा हूँ कुछ खट्टी कुछ मीठी आदि।

प्र० – वैसे तो सभी श्रोता भाई जानते हैं आपको किन प्रोग्राम्स के लिए अच्छे रिस्पांस मिलें ?

उ० – तीन ऐसे प्रोग्राम हैं जिन्हें बहुत ज़्यादा एवं अच्छा रिस्पांस मिला पहला गुल्ली डंडा–गेंद बल्ला, दूसरा गुदगुदी एवं तीसरा अभी वाला है कुछ खट्टी–कुछ मीठी।

प्र०– सुधीर भाई कुछ खट्टी–कुछ मीठी में आपने तरह तरह के प्रयोग किये हैं। दलजीत सिंह पाजी का किरदार आपको कैसे मिला ?

उ० – मैं प्रोग्राम में कुछ नया करना चाहता था। तो मेरे दिमाग में वही शख्स आया जो मेरे बचपन का दोस्त था। हम साथ पढ़े भी हैं। दलजीत हालांकि सरदार था लेकिन हर समय हँसाता रहता था। उसके काफी ई–मेल मेरे पास कुछ खट्टी–कुछ मीठी के लिए आते थे। तो मैंने सोचा कि दलजीत है ही, यदि मैं दलजीत के साथ पाजी शब्द जोड दूँ तो अच्छा खास किरदार बन सकता है। शुक्रिया आप लोगों का जो आप इस किरदार को पसन्द कर रहे हैं।

प्र० – जानना चाहते हैं एक प्रेज़ेन्टर के लिए सफलता को बरकरार रख पाना कितना आवश्यक है ?

उ० – एक प्रेज़ेन्टर के लिए ही नहीं किसी भी व्यक्ति की सफलता को बरकरार रख पाना बड़ा ही मुश्किल है। जहाँ तक शो की बात हो वहां और भी ज़्यादा मुश्किल है।

प्र०– आज (वर्तमान में) आप एक सफल प्रेज़ेन्टर हैं अपने आप को कहाँ पाते हैं ? क्या गाना भी गाते हैं ?

उ० – (ज़ोर का ठहाका लगाते हुए) सुन्दर आवाज़ है या नहीं यार मैं नहीं जानता। गायिकी की जहाँ तक बात है वो हो सकता है लेकिन हम लोगों के लिए किसी परहेज़ की ज़रूरत नहीं है मैं सब कुछ खाता हूँ। यह ईश्वर की देन है बस।

प्र०– सफलता के साथ–साथ आपके पास सब कुछ है एक ऐसी इच्छा जो पूरी न हो सकी हो ?

उ०– मैं क्रिकेटर बनना चाहता था। काफी सफल भी था लेकिन हालात कुछ ऐसे बन पड़े कि यह इच्छा पूरी न हो सकी।

प्र०– एफ.एम. रेडियो के अलावा आप और किन–किन क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं ?

उ०– मैं टेलीविजन कर रहा हू। नौकरी भी कर रहा था। लेकिन अब मैंने अपना बिजनेस शुरू किया है।

प्र०– सुधीर भाई हर व्यक्ति का कोई न कोई आदर्श होता है आपके आदर्श कौन हैं ?

उ०– मेरे आदर्श मेरे पिता जी हैं। क्योंकि शुरूआत से मेरे पिता जी ज़मीदार परिवार के थे। लेकिन उन्होंने

दिल्ली में आकर पढ़ाई पूरी की फिर स्वयं अपने पैरों पर खड़े होकर, एक ऐसा प्लेटफार्म दिया हम लोगों को कि हमारे पास सब कुछ है।

प्र०— आपके शौक जानना चाहता हूँ ?

उ० — मैं भी नोर्मल व्यक्ति हूँ खाने-पीने का बेहद शौकीन हूँ, अच्छे कपड़े, शूज बेहद पसन्द करता हूँ, मुझे गोल्ड पहनना पसंद है, नई घड़ियाँ और कार तो मैं अक्सर बदलता रहता हूँ। संगीत का भी शौकीन हूँ।

प्र०— भाग्य एवं ईश्वर से कितना यकीन करते हैं आप ?

उ० — भाग्य के बारे में इतना ही कहूँगा यदि व्यक्ति मेहनत करें तो भाग्य अवश्य जागता है। ईश्वर को मैं दिखावे से नहीं दिल से मानता हूँ। ईश्वर जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।

प्र०— सबसे बड़ी कमजोरी जानना चाहता हूँ ?

उ० — मेरी सबसे बड़ी कमजोरी है मेरा गुस्सा, आप लोगों से अलग नहीं हूँ। बस मुझे भी वे लोग पसन्द नहीं हैं जो दोगले किस्म के होते हैं।

प्र०— (हमने भी हंसते हुए पूछ लिया) सबसे बड़ी अच्छाई आप में क्या है ?

उ० — (फिर से हंसते हुए) अच्छाई मुझे खुद नहीं पता दोस्त, आप स्वयं जानें।

प्र०— पसन्दीदा रंग एवं पसन्दीदा पहनावा बतायें ?

उ० — मुझे नीले रंग की जीन्स शर्ट पसन्द है। चूँकि मुझे कपड़ों का शौक है तो मैं सिचुएशन के अनुसार कपड़े पहनता हूँ मुझे तो सफेद रंग का कुर्ता पायजामा भी पसन्द है।

प्र०— फुर्सत के क्षणों में क्या करना पसन्द करते हैं आप ?

उ० — पहले तो फुर्सत के क्षण मिलते ही नहीं हैं। फुर्सत के क्षणों को मैं अपने बेटे के साथ बिताता हूँ।

प्र०— आपके बहुत सारे दोस्त हैं तो दोस्ती आपकी नज़र में क्या है ?

उ० — दोस्ती बहुत बड़ा जज्बा है। यदि इन्सान ईश्वर को मानता है तो उसे दोस्ती भी माननी पड़ेगी। मैं बहुत खुशनसीब हूँ जो मुझे अच्छे-अच्छे दोस्त मिले हैं।

प्र०— अन्त में आप अपने दोस्तों, मित्रों एवम् सखाओं को क्या मैसेज़ देना चाहते हैं ?

उ० — मैं यही सन्देश दूंगा कि आप बेखौफ, निडर होकर मुझे प्यार करते रहें। अपने सुझाव पत्रों द्वारा मुझे बताते रहें, एक शिकायत भी करना चाहता हूँ आप ये न लिखकर भेजा करें "कि पत्र शामिल कर लें या फिर रद्दी की टोकरी में डाल दें" यह बातें मुझे बेहद दुख पहुंचाती हैं। गुदगुदी एवं कुछ खट्टी-कुछ मीठी दोनों प्रोग्राम्स के पत्र जितने मुझे मिले हैं मेरे पास सुरक्षित रखे हुए हैं। मैं पत्रों को संभालकर रखता हूँ शामिल भी करता हूँ। तो कृप्या करके ऐसी शिकायतें न किया करें। जितना प्यार आप सब हमसे करते हैं, हम प्रेज़ेन्टर भी आपसे प्यार करते हैं।

प्र०— सुधीर भाई हमसे बात करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

उ०— बबलू कश्यप दोस्त, मुझे ये मौका देने के लिए मैं आपका धन्यवाद देता हूँ।

★★★

□ प्रस्तुत : बबलू कश्यप

जूझने का मेरा कोई इरादा न था,
मोड़ कर मिलेंगे इसका वादा न था;
रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गयी,
यूँ लगा ज़िन्दगी से बड़ी हो गयी;
मौत की उम्र क्या ? दो पल की नहीं,
ज़िन्दगी–सिलसिला, आजकल की नहीं;
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौट कर आऊँगा, कूच से क्यों उरूँ;
तू दबे पांव, चोरी–छिपे से न आ,
सामने वार कर, फिर मुझे आजमां;
मौत से बेख़बर ज़िन्दगी का सफ़र,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर;
बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,
दर्द अपने–पराये कुछ कम भी नहीं;
प्यार इतना परायों से मुझ को मिला,
न सगों से रहा कोई बाकी गिला;
हर चुनौती से दो–हाथ मैंने किये,
आँधियों में जलाये हैं बुझते दिये;
आज झकझोरता तेज़ तूफान है,
नाव भँवरों की बातों में मेहमान है;
पार पाने का कायम मगर हौसला,
देख तूफां का तेवर नरी तन गयी;
मौत से ठन गयी !

लेखक : श्री अटल बिहारी वाजपेयी

दर्द–ए–दिल की दवा दीजिए
आप यूंही हंसा कीजिए
हमने चाहा है तुमको सनम
इसका कुछ तो सिला दीजिए
ताके हो जाए रंगीन समाँ
अपना आँचल उड़ा दीजिए
वो आते हैं महफ़िल में
अब दियों को बुझा दीजिए
ताके हो जाए दर्द दवा
फ़ासले और बढ़ा दीजिए
कहीं ईद की तारीख़ न बदले
चेहरे को अपने छुपा लीजिए
जामो–मीना की क्या है कमी
अपनी आँखों से पिला दीजिए।

□ एस० मुजाहिद ख़ान

बात

बात ही दर्द बन जाती है
बात ही खुशियों में हँसाती है
बात ही थपकियाँ सी देकर
आग के ढ़ेर पर सुलाती है
बात मीठी हो या कड़वी
अपना असर पूरा दिखाती है
बात संजीवनी सी होती है
बात विष गोली सी कहाती है।

□ निशा बरगोती
बुलन्दशहर, उ०प्र०

चोरी न होने का दुःख

आपको यह जानकर बहुत हैरानी होगी जबकि इसी बात को लेकर हमें घोर दुख है कि हमारे यहां आज तक चोरी नहीं हुई। यहां पर उस चोरी को दरकिनार कर दें जो बीवी द्वारा बिना नागा पति की जेबों में हाथ डालकर मुस्तैदी से की जाती है। हमें दुख है कि चोरी ने हमारे यहां झांका तक नहीं, आप सोच रहे होंगे कि कैसा अहमक है, इसका दिमाग़ तो नहीं फिर गया ? बैठे हाले मौत को दावत दे रहा है ? बैल को बुला रहा है कि 'आ जा प्यारे, मुस्टंडे बैल, आ और मुझे मार ! यही सोच रहे हैं ना आप ? यह खेद की बात है कि आप हमारे मौहल्ले में नहीं रहते, वरना आप भी इच्छा प्रकट करते, जो मैं कर रहा हूँ। थोड़ा खुलासा करना ठीक होगा, वरना बात आपके भेजे में नहीं घुसेगी।

दरअसल पिछले कुछ महीनों से हमारे मौहल्ले में धड़ाधड़ चोरियाँ होने लगी हैं। चोर रात को दबे पांव आते हैं और बिना खटर–पटर किये लुटिया डुबोकर चले जाते हैं। अब आप सोच रहे होंगे कि सारा मौहल्ला ही चोर उचक्कों का होगा। कया हुआ जो भूखों ने नंगों को लूटा ? पर यह बात सरासर गलत है, एकदम शरीफ लोगों का मौहल्ला है हमारा, जहां एक तरफ मुजाहिद ख़ान साहब रहते हैं तो दूसरी तरफ तुषार गुप्ता, तीसरी ओर हरभगवन्त सिंह रहते हैं तो चौथी तरफ रामकिशन व सिराज मिथुन रहते हैं। और इन्हीं सब लोगों के मौहल्ले में एक साइड में मेरा भी मकान है।

हाँ तो मैं कह रहा था कि हमारे यहां चोरी नहीं हुई, हमारे ही पड़ोसी के यहां हुई और दो–दो बार हुई। शुरूआत रामकिशन जी के यहाँ से हुई जो कि पेशे से एक ठेकेदार हैं। वह धड़ाधड़ पुल बनाते हैं। अगला पुल बनाते हैं तो पिछला टूट जाता है। जिसका ठेका फिर उन्हें ही मिल जाता है। एक दम साफ सुथरा धंधा है। लक्ष्मी जी उन पर गद्‌गद् हैं। (वैसे लक्ष्मी रामकिशन जी की पत्नी का नाम भी है मगर वहाँ मैं धन, दौलत वाली लक्ष्मी का जिक्र कर रहा हूँ) हाँ तो चोरों ने रामकिशन जी के घर से ही शुरूआत की, दबे पांव आए और उनकी लुटिया डुबोकर चलते बने। अगले दिन सुबह का नज़ारा दिल दहला देने वाला था। रामकिशन जी की पत्नी छाती पर दोहत्थड़ मार कर विलाप कर रही थी। रामकिशन मुंह उठाये आंगन में उदास मन से खड़े थे। तभी महल्ले वाले दोस्त भी आ पहुँचे। मैं भी सभी दोस्तों के साथ आ गया, सभी ने रामकिशन जी से घटना के बारे में पूछना शुरू किया–

मुजाहिद ख़ान – क्यों भाई साहब क्या हो गया ?

रामकिशन – कुछ मत पूछो खान भाई चोरी हो गयी।

तुषार गुप्ता बोले –क्या–क्या चोरी हो गया ?

रामकिशन – पहले तो खालिस सीमेंट से बना जीना तोड गये, बीवी के 50-60 तोले के जेवर ले गये, करीब 2 लाख नकदी ले गये, मेरी प्यारी बीवी का चश्मा तक ले गये।

हरभगवन्त सिंह बोले – आपको इतनी कीमती चीज़ें घर पर रखनी ही नहीं चाहिए थीं।

रामकिशन – पता होता कि चोर आ रहे हैं तो कतई ऐसी चीज़ें घर में न रखता।

सिराज मिथुन होले से बोले – सरासर झूठ बोल रहा है, रौब जमाना चाहता है।

मैंने कुछ नहीं कहा क्योंकि मैं तो चोरी न होने की वजह से पहले ही दुखी था।

सारी सात्वनाओं के बाद चाय नाश्ते का कार्यक्रम हुआ। बिस्कुट कुतरे जा रहे थे, चाय सुड़की जा रही थी। सभी दोस्त मन ही मन चोरों की सराह रहे थे, जिनके कारण जलपान करने का मौका मिला था।

रामकिशन जी और भी खुश थे कि "चलो इसी बहाने यह तो पता लगा कि अपने चाहने वालों की तादाद कितनी है और फिर मुफ्त का रौब भी झाड़ने को मिल गया। इतने बुद्धू थोडे ही है कि इतना कीमती सामान घर में रखते ?

इसके बाद तो चोरियों का सिलसिला सा शुरू हो गया। चोर आते और अपना काम निबटाकर चले जाते। जिनके यहाँ चोरी होती, वहां पडोसियों द्वारा एकजुट होकर ऊपर लिखी बातें थोड़ी बहुत रद्दो बदल के साथ दोहराई जाती। चाय नाश्ते का कार्यक्रम जिस समय चलता, उस समय लुटे हुए लोग अपने आप को कुछ ऊँचा समझने लगते। हमने भी यही सोचकर अपनी छाती पर पत्थर रख लिया है कि घूरे के भी दिन फिरते हैं, हमारे भी फिरेंगे। बड़ी तमन्ना है कि चोर हमारे यहां तशरीफ लाएं और अपनी ज़रूरत के मुताबिक माल बत्ता ले जायें, सूबुत के तौर पर थोड़ी बहुत तोड़ फोड़ भी कर जायें, इसी बहाने हमें भी शेखी बघारनें का मौका तो मिले।

पर वे कमबख्त आती ही नहीं, अब तो जी में आता है कि थानेदार से ही मिल लूँ और कहूँ ऐ थानेदार साहब, अपने किसी चोर लफंगे मित्र से कहकर हमारे यहां चोरी करवा दीजिए। इस काम को करवाने के लिए आपका जो भी कमीशन बनता हो, उसे मैं खुशी–खुशी देने के लिए तैयार हूँ। इसके बाद मैं बेफ़िक्र हो गया हूँ और खुशी से चोरों का इन्तज़ार करने लगा हूँ शेखी बघारने के साथ–साथ मैं भी देखना चाहता हूँ कि अपने चाहने वाले कितने हैं ? क्यों हैं ना ?

❑ बबलू कश्यप, चन्द्रपाल कश्यप,
जोनी कश्यप, विपिन कश्यप
प्रेमनगर, नई दिल्ली

स्वर्गीय कुमारी पूनम तन्हा

जाने वाले कभी नहीं आते
जाने वालों की याद आती है

प्यारे दोस्तो 11 अक्टूबर 2004 को F.M. श्रोता कुमारी "पूनम तन्हा" हमारे बीच नहीं रही।

न्यू फ्रेंडस लिस्नर क्लब के सम्पादक एस० मुजाहिद खान, बबलू कश्यप, तुषार गुप्ता एवं समस्त F.M. श्रोता पूनम जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति पहुँचाये।

एक मुलाकात

मनीषा दुबे से

प्यारे दोस्तो, दिल थाम के, क्योंकि हमने किया तुम्हें रिकॉर्ड जिन्हें श्रोता कहते हैं "ज़ख्मी दिलों का मरहम" उनका इंटरव्यू रिकॉर्ड करना जितना हमें चैलेंजिंग लग रहा था। उन्होंने उसे बड़ी ही मासूमियत से आसान बना दिया। नियमित श्रोताओं की तरफ से जब हमने एक शिकायती प्रश्न उनसे पूछा तो हमें स्वयं हंसी आ गयी। दोस्तो, जो एक बार उनसे मिल ले वह शिकायतें करना ही भूल जायेगा। उनसे बातें करने के बाद हमने यही जाना। चलिए जानते हैं उनसे उनके बारे में -

❑ वार्ताकार
बबलू कश्यप

प्र०– सर्वप्रथम मैं आपको नमस्ते कहता हूँ एवं आपका परिचय जानना चाहता हूँ ?

उ०– नमस्ते बबलू कश्यप जी ! और मनीषा दुबे का भी सभी को नमस्ते, सलाम और सत श्री अकाल !

प्र०– श्रोताओं को अपनी जन्मतिथि बतायें ?

उ०– (हंसते हुए) किसी लेडी से उम्र नहीं पूछनी चाहिए। चलिए तारीख बता देती हूँ 20 अक्टूबर है।

प्र०– शिक्षा आपने कहाँ तक प्राप्त की है?

उ० – मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन की है गणित में।

प्र०– एफ.एम. रेडियो पर कब से कार्य कर रही हैं ?

उ०– तारीख मुझे याद नहीं है। एफ.एम. जब शुरू हुआ है तभी से एफ.एम. पर हूँ।

प्र०– पहला प्रोग्राम कौन सा किया था ?

उ० – सा–रे–गा–मा जो सुबह 7 बजे आता है।

प्र०– एफ.एम. पर कौन–कौन से प्रोग्राम किये हैं ?

उ०– सरगम, कल आज और कल, ज़ीरो आवर शो, गीत आपके नाम से, गीत मेरे नाम से, पो० बॉक्स 503, साइकॉल्स, बातो–बातों में लिस्ट बहुत लम्बी है मुझे याद नहीं आ रहे हैं।

प्र०– नियमित सुनने वाले सभी जानते हैं। लेकिन आप बतायें एफ.एम. पर पसन्दीदा प्रोग्राम कौन सा है?

उ०– (खिलखिलाते हुए) गीत आपके नाम से।

प्र०– मनीषा जी नियमित लिखने वाले (यहाँ हमें बहुत हंसी आई) यानि नियमित श्रोता आपसे ज़्यादातर नाराज़ रहते हैं। आपको ज़ख्मी दिलों का मरहम भी कहा जाता है। इस बारे में कुछ करना चाहेंगी ?

उ० – हमसे तो बहुत लोग नाराज़ रहते हैं लिस्नर्स भी नाराज़ रहते हैं उनको ऐसा लगता है कि हम खास लोगों के ही पत्र एयर करते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। मैं कोशिश करती हूँ किसी के साथ नाइंसाफी ना हो। दोस्तों आठ या ना श्रोता ही हमें सुनने वाले नहीं है जहां तक एफ.एम. की रेंज है सभी लोग सुनते हैं। हमें सभी का ध्यान रखना होता है। चाहे बूढ़ा हो, चाहे बच्चा हो, गाड़ी चलाने वाला हो, शोरूम में बैठा हो या पान की दुकान वाला हो, सभी का ध्यान रखना होता। फिर हमारा चैनल सरकारी है, इसलिए कुछ नियमों का पालन भी करना होता है।

प्र०– मनीषा जी आप एक सफल उद्‌घोषिका हैं क्या कहना है सफलता के बारे में ?

उ०– मैं अलग–अलग चैनल्स के लिए आवाज़ देती हूँ। टेलीफोन एयरटेल में हमारी आवाज़ सुनियेगा। 15 अगस्त, 26 जनवरी के लिए एंकरिंग करती हूँ। हर एक प्रोग्राम में मेहनत की ज़रूरत होती है। एक एक पत्र पढ़कर चुना जाता है। क्योंकि श्रोता हमारी बातों को सीरियसली लेते हैं। सफलता का यह मतलब नहीं है कि एक मुकाम पर जाकर रूक जायें बल्कि हर प्रोग्राम में आपको प्रूव (साबित) करना होता है।

प्र०– मनीषा जी आपके शौक क्या–क्या हैं ?

उ० – मेरा पहला शौक, पहला फैशन है "गीत आपके नाम से" लोगों को पता भी है। इसके अलावा मुझे खाना बनाने का शौक है। मैं खाना बहुत अच्छा बनाती हूँ। मैं गाना भी अच्छा गा लेती हूँ, मैंने क्लासिकल म्यूज़िक सीखा है। मुझे वाइल्ड जीवन (पण्डित जी) के बारे में काफी जानकारी है।

प्र०– बहुत लोगों से यह प्रश्न किया है हमने , "गीत आपके नाम से" में भी दोस्ती भरे पत्र आते हैं आपसे जानना चाहते हैं आपकी नज़र में दोस्ती की परिभाषा क्या है ?

उ० – दोस्ती की परिभाषा बहुत बड़ी है। किसी के साथ बार–बार मिलने का मन करे, कभी गुस्सा भी, मज़ाक भी, हर बात शेयर करने का मन करे, ये सरल सी परिभाषा है।

प्र०– हम श्रोताओं की आपकी नज़रों में क्या जगह (स्थान) है ?

उ० – (हंसते हुए) जान है। सच कहूँ तो आप सब श्रोता हमारी जान हैं।

प्र०– आपको क्या बुरा लगता है ?

उ०– दोस्ती में विश्वासघात बुरा लगता है।

प्र०– मनीषा जी वैसे तो आप प्रोग्राम में बताती रहती हैं आपके प्रेरणास्रोत कौन हैं ?

उ०– मेरे परिवार वाले।

प्र०– अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में बतायें ?

उ०– बस ऐसे ही ज़िन्दगी चलती रहे, आप लोगों का प्यार मिलता रहे, खुदा करे "गीत आपके नाम से" मेरे हाथों से न निकले।

प्र०– जीवन में बहुत कुछ जीता है, आपने, अब क्या जीतना चाहती हैं ?

उ०– आप सब श्रोताओं का दिल, इस पर कभी किसी का अधिकार न हो।

प्र०– मनीषा जी जैसा कि आप शेरो शायरी की भी शौकीन हैं। तो आप श्रोताओं के लिए सन्देश दें और एक शेर जरूर कहें।

उ०– सन्देश मैं यह देना चाहूँगी हम रहे या न रहें, चाहे मैं बूढ़ी हो जाऊँ, लेकिन जितनी मौहब्बत से मैं आप सब को चाहती हूँ। अपने दिल के कोने में मुझे भी रखना। तो अपनी ज़िन्दगी जो श्रोताओं के प्यार में चल रही है उन्हीं के लिए यह शेर –

ना संगे मील कोई, ना कोई नक्शे कदम।
तमाम उम्र सफर में रहो, हवा की तरह।।

मनीषा जी, हमसे बातें करने के लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

बहुत–बहुत शुक्रिया अच्छा लगा और जब आप लोग बात करते हैं तो फीलिंग्स मन से निकलती है, इमोशनल हो जाती हूँ। थैंक्स सो मच बबलू जी।

★★★

शेर

तेरी उम्मीद से दिल लगा रखा है
दर्द दिल बताने में क्या रखा है
अब तो आदत पड़ गई उदास रहने की
वर्ना उदास रहने में क्या रखा है
आँखों से तुम समझ नहीं पाते
होंठों से हम कह नहीं पाते
शायद ये दिल की ही बेबसी है
कि तुम्हारे बिना हम रह नहीं पाते
खुशी मिले हरदम तुम्हें
ग़म का भी अहसान न हो
दुआ मेरी यही है कि तुम
ज़िन्दगी में कभी उदास न हो

सपना

काश मैं एक पंछी होती
तिनकों का अपना आशियां होती
ना होती ज़िन्दगी में परेशानियाँ
हर ग़म अपने से जुदा होता
खुले आकाश में उड़ती
खुली फिज़ा में सांस लेती
ना होती ज़माने की बंदिशें
सारी धरती पे अपना कारवां होता
लेकिन ये सिर्फ एक सपना है
क्योंकि हम धरती के पंछी हैं
जो संस्कारों में जकड़े हैं
उड़ नहीं सकते
काश .... ? यह सब सपना न होकर सच होता

प्रस्तुति : यू०पी गर्ल रूपम त्यागी
मेरठ

बुफे की दावत

❑ नम्रता डबास

रात हमें भी जाना पड़ा बारात में, बीवी बच्चे थे साथ में।
सभी के सभी बाहर से शो पीस, अन्दर से रूखे थे।
मगर क्या करें, भाई साहब सुबह से भूखे थे।
जैसे ही खाने का संदेशा आया हॉल में, भगदड़ मच गयी पंडाल में
एक के ऊपर एक बरसने लगे जिसने झपट लिया सो झपट लिया बाकी सब तरसने लगे।
एक व्यक्ति हाथ में प्लेट लिए इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।
खाना लेना तो दूर उसे देख भी नहीं पा रहा था।
दूसरा अपनी प्लेट में चावल की तश्तरी झाड़ लाया था उससे कहीं ज़्यादा तो अपना कुर्ता फाड़ लाया था।
तीसरी एक महिला थी जो ताड़ के वृक्ष की तरह तनी थी, उसकी आधी साड़ी तो पनीर की सब्जी से सनी थी।
उसे बार–बार धो रही थी। पड़ोसन की पहन कर आई थी इसलिए रो रही थी।
चौथा बेचारा गरीब था, लाचार था इसलिए अपने कपड़े उतार कर पहले से ही तैयार था।
पाँचवा अकेले ही झटके झेल रहा था। भीड़ में घुसने से पहले दण्ड पेल रहा था।
छठा इन हरकतों से ज़्यादा परेशान था इसलिए उसका बीवी बच्चों से ज़्यादा प्लेट पर ध्यान था।
सातवें का तो रब ही मालिक था, प्लेट तो हाथ में थी पर हलवा गायब था
आठवां कल्पना में ही खा रहा था, मुँह अपना चला रहा था।
नौवां कुछ अजीब हरकतें कर रहा था, खाना खाने की बजाय जेबों में भर रहा था।
दसवां स्वयं लड़की वाला था जिसके प्राण कंठ में अटके थे।
घराती तो सारे जीम रहे थे, बराती सड़कों पर खड़े थे।

★★★

बडा अजीब सा लगता है, एक भूखे बच्चे से पूछना कि 'विटामिन क्या होता है ?'
या
'चिथडे ओढ़े बच्चे से पूछना कि कपडे कारखाने कहाँ पर हैं?'
या
फुटपाथ पर सोये हुए बच्चे से, कमरे का क्षेत्रफल ज्ञात करवाना।
बच्चे के दिमाग में भी कुलबुलाते हैं अक्सर कुछ सवाल।
उनका रास्ता पेट की आंतडियों से होकर गुज़रता है,
और पेट की आग को दिमाग तक कोई खास वक्त नहीं लगता।

❑ अर्पणा डबास

अभी तक आपने पढ़ा : न्यू फ्रेण्ड लिस्नर क्लब की स्थापना पर दिल्ली में आयोजित एक श्रोता सम्मेलन में गब्बर सिंह कुछ श्रोताओं का अपहरण करके अपने अड्डे पर ले जाता है। अत्यंत रोचक घटना क्रम उत्पन्न होते हैं और फिर यह राज पता चलता है कि गब्बर सिंह को रेडियो में कार्यक्रम में पत्र लिखना अधिक अच्छा लगता है लेकिन गब्बर की समस्या है कि उसका पत्र पता करने के लिए ही श्रोताओं का अपहरण किया जाता है।
अभी गब्बर सिंह श्रोताओं की उल-जलूल हरकतों से परेशान होकर कुछ कर पाता तभी पहाड़ी के पीछे से राम किशन और सिराज की ललकार सुनाई देती है।
सिराज मिथुन गब्बर को धमकी देते हैं कि यदि उसने श्रोताओं को नहीं छोड़ा तो वह मोबाइल फोन से गब्बर की पत्नी को बुलायेंगे।
इतना सुनते ही गब्बर के होश उड जाते हैं।

अब आगे ....

सिचुएशन इंतहाई संगीन हो गई थी। अभी तक क्रूरता की प्रति मूर्ति बना गब्बर अब दयनीय स्थिति में आ गया था।

उसने पहाड़ी पर खड़े सिराज और रामकिशन की तरफ हसरत भरी नज़रों से देखा और लजाते हुए कहा "ओ भाई ! प्लीज़ मोबाइल नीचे कर लो, मैं बीवी के बेलन से पिटकर मरना नहीं चाहता। वरना पचास–पचास कोस दूर जब बच्चे सुनेंगे कि गब्बर बीवी के हाथों मारा गया तो वो मुझ पर हसेंगे, मैं सारी जिंदगी जेल में काट सकता हूँ लेकिन ऐसी कायर मौत नहीं चाहता......."।

बड़ी हैरत की बात थी चम्बल का खूंखार डाकू–

अपनी बीवी से डरता था।

सिराज़ ने मामला भांपते हुए गब्बर की कमज़ोर रग पकड़ ली थी। इसी का फायदा उठाते हुए सिराज़ ने ललकारा ठीक है गब्बर, मैं तेरी बीवी को फोन नहीं करूँगा, लेकिन इसी वक्त अपने आदमियों से कहो हथियार फेंक दो। गब्बर ने साँभा की तरफ इशारा किया। सभी डाकूओं ने हथियार फेंक दिए। सिराज़ और राम किशन धीरे–धीरे पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। मोबाइल अभी भी हाथ में अटेंशन था। दोनों गब्बर के बिल्कुल निकट आ चुके थे। सिराज़ ने बबलू और मुजाहिद की तरफ इशारा किया। फुर्ती के साथ बबलू और मुजाहिद ने गब्बर के हाथ रस्सी से बाँध दिए। मुज़ाहिद ने गब्बर से उत्सुकता से पूछा–"यार गब्बर ! यह बड़ी अजीब

बात है कि तुम अपनी बीवी से डरते हो। तुम मुझे बीवी के कुछ मेन साईड इफैक्ट बताओ, दरअसल मैं एक किताब लिखना चाहता हूँ जिसका शीर्षक है 'शादी के साईड इफेक्ट' जब यह किताब खूब बिकेगी तो उस पैसे से मैं शादी करूँगा"।

गब्बर बेबसी के आलम में रस्सी से बँधा हुआ लाल लाल आँखों से मुजाहिद को घूर रहा था।

उसके आदमी हाथ ऊपर किये पंक्ति में खड़े थे।

बबलू कश्यप ने मुजाहिद से कहा 'मुजाहिद भाई' गब्बर अब हमारे कन्ट्रोल में है क्यों न हम अपनी पत्रिका के लिए उसका इन्टरव्यू ले लें ......।

सिराज ने कहा "आइडिया तो अच्छा है। जिस को जो पूछना है। गब्बर से पूछ ले ..... और जब हम सब उसके नियंत्रण में थे तो उसने हम से कविताएँ और पता नहीं क्या–क्या सुना था, क्यों न उससे बदला लें।

तभी तुषार गुप्ता तेज़ी के साथ गब्बर की ओर बढ़े। पास जाकर तुषार ने तुरंत जेब में हाथ डाला गब्बर समेत तमाम लोग हैरत से देख रहे थे कि आखिर क्या करेंगे तुषार। लेकिन जब हाथ जेब से बाहर आया तो उसमें एक छोटी सी नोट बुक थी। तुषार को चहकते हुए गब्बर से पूछा "सर ! आपका बर्थ डे कब होता है ....?

गब्बर ने दाढ़ी को खुजाते हुए आँखे आसमान की तरफ उठाई और कुछ याद करते हुए कहा "मुझे ठीक से याद नहीं है, माँ कहती है जब मैं पैदा हुआ तो गाँव में बारिश और ओले पड़ रहे थे ......।

बबलू सलमानी ने गुस्से से काँपते हुए गब्बर को ललकारा–'ओ बे गब्बर ! तू ज़बरदस्ती मेरी 'रचना' मांग रहा था अब मैं तेरी पतलून और शर्ट मांगूँगा गब्बर ने डरते हुए कहा "भाई आप मुझ से बंदूक ले लो, खैनी ले लो... लेकिन पतलून मेरे पास एक ही है..... विकास मोधा ने सलमानी से पूछा "भैया तुम गब्बर की पतलून शर्ट का क्या करोगे ......?

तो सलमानी ने काला चश्मा उतारते हुए कहा – "किसी से बताना मत मैं गब्बर की पतलून और शर्ट पहन कर बैंक लूटूँगा, नाम गब्बर का आयेगा मैं बच जाऊँगा"। है ना कमाल की तरकीब।

बबलू कश्यप ने गब्बर से पूछा "यार तुम डाकू कैसे बनें ?" बबलू के सवाल पर गब्बर भावुक हो गया उसने अपनी आँखों में आए आंसूओं को साफ करते हुए बताया " तुम लोग क्या समझते हो मैं यूँ ही शौक में या लालच में डाकू बना ... ? मैं भी एक शरीफ सभ्य नौजवान था जवानी में मुझे शायरी का बहुत शौक था।

लेकिन अफसोस मेरी गज़लें लोग सुनने से कतराते थे। बड़ी मुश्किल से मैं गज़ल बनाता, फिर उसको सुनाने के लिए लोगों की मिन्नतें करता।

एक दिन मैंने एक बढ़िया गज़ल बनाई, गाँव का कोई भी आदमी सुनने को तैयार नहीं हुआ, मुझे ज़बरदस्त गुस्सा आ गया। मैंने अपने पिता की पुरानी बंदूक उठाई और गाँव के सेठ करोड़ीमल का अपहरण कर लिया। उसे मैंने एक वीरान कोठरी में बंद करके उसे अपनी गज़ल सुनाई, उसी समय उसकी मृत्यु हो गई। उसकी हत्या के जुर्म में मुझे जेल हो गई। बस तभी से मैं डाकू बन गया।

अभी यह बातें चल रही थीं कि अचानक गोली चलने की आवाज़ आई। ढिचाऊँ..... ढिचाऊँ.....

सब ने पीछे की तरफ देखा। गब्बर के दो आदमी स्टेनगन लिए खड़े थे। हालात एक बार फिर बदल गये थे नियंत्रण एक बार फिर गब्बर के हाथों में आ गया था। दोनों आदमियों ने सबसे पहले गब्बर के हाथ खोले। उसके बाद सिराज़ को ईंटों के खम्भे से बाँध दिया। बाकी सभी श्रोताओं को एक पंक्ति में खडा कर दिया गया। गब्बर ने एक बड़ा गंडासा उठाया और सिराज़ के पास आकर बोला **"तेरा क्या होगा सिराज़"?** सिराज़ ने कसमसाते हुए कहा "गब्बर भाई जान ! जब से आपके अड्डे पर आया हूँ तब से ही कुछ नहीं खाया बड़ी भूख लगी है, अगर कुछ खाने–पीने का इंतज़ाम हो जाता तो मज़ा आ जाता (जान में जान आ जाती) इस पर गब्बर ने जेब में हाथ डाला और कुछ निकाला और बोला (ले..... अब, गाजर खा)।

तभी गब्बर की मैगी खाकर सिराज़ बेहोश हो गया। गब्बर ने सिराज़ की जेब से मोबाइल सेट निकाल लिया। और हंसते हुए बोला "सुना है बहुत लड़कियों के नम्बर हैं इस मोबाइल में"।

तभी गब्बर ने एक नम्बर ओके कर दिया। दूसरी तरफ़ से बहुत ही सुरीली आवाज़ में हैलो कहा गया।

गब्बर ने संभलते हुए कहा "हैलो जी मैं गब्बर बोॅल रहा हूँ जी"

दूसरी तरफ फिर उसी सुरीली आवाज़ में कहा गया "हाय मैं सीमा नाज़ इण्डियन गर्ल बोल रही हूँ..."।

गब्बर तो सीमा की मस्त आवाज़ में खोकर रह गया। उसने सीमा से कहा "देखो सीमा जान तुम मुझ से दोस्ती कर लो यह गब्बर तुम्हें माल माल कर देगा।"

सीमा ने शरमाते हुए कहा कि किसी डाकू से मैं दोस्ती नहीं कर सकती।

यह सुनकर गब्बर गुस्से से आग बबूला हो गया। उसने सीमा को धमकी दी कि यदि वह उसके अड्डे पर आकर सबसे सामने सरेआम दोस्ती का इज़हार नहीं करेगी तो वह तमाम अपहृरित श्रोताओं को गोली मार देगा। सीमा को जब पता चला कि गब्बर ने श्रोताओं का अपहरण कर रखा है तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसने परेशान होते हुए गब्बर से कहा "देखो गब्बर ! जिन श्रोताओं को तुमने बंदी बना रखा है उनमें चार लड़के मेरे ख़ास दोस्त हैं। और उन चार में एक ऐसा है जिसे मैं बहुत प्यार करती हूँ। गब्बर मैं तुम्हारे अड्डे पर पहुँच रही हूँ।

गब्बर सीमा के आने की बा सुनकर खुश हो गया था। लेकिन परेशान भी था कि वह कौन सा लड़का है जिसे सीमा प्यार करती है।

शाम का सुरमई मौसम था। अधिकतर श्रोता और गब्बर के आदमी या तो ऊंघ रहे थे या पत्ते खेल रहे थे।

सिराज़ ने ज़ोर ज़ोर से गाना शुरू कर दिया – "आजा रे आजा रे, ओ मेरे दिलबर आ जा .... नूरी नूरी नूरी.....! नूरी नूरी नूरी.....! नूरी नूरी नूरी.....!

गब्बर ने गुस्से से गाना बंद करने के लिए कहा।

सिराज़ ने जवाब दिया। "देखों मैं ज़्यादा देर तक चुप नहीं रह सकता। बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है"।

गब्बर ने चिल्लाते हुए कहा "सीमा कहाँ होती कैसी होती यह सब अभी पत चल जायेगा....."।

गब्बर बोलते–बोलते अचानक चुप हो गया। सामने झाड़ियों के पीछे से छम छम की मधुर आवाज़ आ रही थी। सभी लोग नींद से बोझिल आंखों से सामने से आती क़यामत को आते देख रहे थे।

लाल साड़ी में मलबूस जवान मस्त परिपैकर लड़की घूंघट डाले रफ़्ता–रफ़्ता गब्बर के अड्डे की तरफ बढ़ रही थी।

गब्बर तो जैसे आंखे झपकाना ही भूल गया था। उसने हल्की हल्की दाढ़ी पर उंगलिया फेरते हुए सीमा पर नज़रें गाडते हुए कहा "स–स–सीमा जान तुम्हारा गब्बर के अड्डे पर स्वागत है। तुम आए गब्बर के अड्डे पर खुदा की कुदरत है। कभी हम तुमको कभी अपने अड्डे को देखते हैं।

सीमा ने शरमाते हुए कहा "हाय मैं मर जावाँ क्या शेर है। गब्बर ने सीमा को ललचाई नज़रों से देखा "एक बार अपना घूंघट उठाकर हुस्न का दीदार तो करा दो, माँ काली की कसम सारे नमूनों को अभी छोड़ दूँगा"। सीमा ने घूंघट उलटते हुए कहा "नहीं नहीं मुझे सारे श्रोताओं की ज़िन्दगी अज़ीज़ नहीं है, मुझे तो बस मेरा एक प्रेमी अज़ीज़ है जो इन्हीं में कहीं छुपा है। मैं उसका नाम नहीं बताऊँगी। इसका फ़ैसला सिर्फ तुम्हें करना है अगर इस इम्तिहान में तुम कामयाब हो गए तो मैं तुमसे शादी कर लूँगी"।

तभी सीमा ने ठुमक ठुमक कर गाना शुरू कर दिया

हाय शरमाऊँ, कैसे–कैसे मैं सुनाऊँ सब को, अपनी प्रेम कहानियाँ...... अपनी प्रेम कहानियाँ..........

गब्बर ने अपना हंटर उठाते हुए कहा "चुप चाप बता दो तुम में से कौन सीमा का असली प्रेमी है?"।

सभी श्रोताओं ने अपने को सीमा का असली प्रेमी होने का दावा कर डाला। सबूत के तौर पर उन्होंने सीमा के लिखे वो पत्र दिखाए जो सीमा ने अलग–अलग प्रत्येक श्रोता को लिखे थे और जिनकी लिखाई और स्टाइल तकरीबन एक जैसा था।

गब्बर ने जब सब श्रोताओं के पास एक जैसे पत्र देखे तो उसका खून खोल उठा। उसने सीमा की तरफ़ कहर भरी नज़रों से देखा और गुस्से से खैनी को रगड़ते हुए कहा "हाँ तो मिस इंडियन गर्ल सीमा नाज़ जी! सारे श्रोता तुम्हारे आशिक हैं, तो क्या मैं सब को छोड़ दूँ........... तभी गब्बर ने सांभा को मुख़ातिब किया। "अरे ओ सांभा–अभी इसी वक्त शहर से एक पण्डित और शादी का सामान मंगाओ, हम इसी लड़की से अभी, इसी वक्त शादी करेंगे।

सांभा फौरन ही शहर की ओर घोड़े पर सवार होकर चला गया। गब्बर ने अपने आदमियों को हिदायत दी कि जब तक हमारी शादी सीमा से नहीं हो जाती तब तक सारे श्रोता हमारे मेहमान हैं इधर फेरे पूरे होंगे उधर इन सब नमूनों को गोली मार दी जायेगी।

आख़िर वह समय आ गया था जब गब्बर चेहरे पर सेहरा सजा कर मण्डप में आ बैठा।

पंडित ने मंत्र पढ़ने शुरू कर दिए थे। सीमा चुपचाप मंडप में घूंघट में चेहरा छुपाए बैठ गई थी। शादी सम्पन्न हो गई थी। गब्बर ने ऐलान किया "सभी कान खोलकर सुन लें सीमा अब हमारी पत्नी है, हमारी शादी की खुशी में आज ज़बरदस्त जश्न मनाया जायेगा। अरे ओ सांभा ! हमारा पुराना रेडियो निकालो और उसे बजाओ......"। सांभा ने एक बड़ा सा पुरा रेडियो बाहर निकाला और उसे ऑन कर दिया यकायक फ़िज़ा में नग़मा बजने लगा

महबूबा महबूबा............. ऊ ऊ ऊ

चाँद सितारों से निकला दिल डूबा .... ए ए ....

गब्बर ने हाथ में बोतल लेकर नाचना शुरू कर दिया। तभी अचानक बड़ी पहाड़ी से खड़े होकर एक मोटी मूंछों वाले युवक ने चिल्ला कर कहा "सीमा ! इस कुत्ते से मत डरना .... मैं आ गया हूँ तेरा भाई .... भाई बोले तो आमिर भाई एम. डी "।

सब ने हैरानी से आमिर ख़ान की तरफ़ देखा।

आमिर ने चिल्ला कर कहा "हैरान होने की ज़रूरत नहीं है–सिराज़ ने मुझे सारे हालात बता दिए थे, सीधा रटौल से आ रहा हूँ"।

गब्बर ने उत्सुकता से पूछा "तेरी और कमी थी, चल अच्छा हुआ अब तुम साथ–साथ ही अंजाम को पहुंचोगे, लेकिन एक बात बता एम.डी. का क्या मतलब है ? क्या तू डॉक्टर है"?

आमिर ने अपनी मोटी मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा "'एम' बोले तो मार। 'डी' बोले तो धाड़। मतलब आमिर भाई मार धाड़। जब जब मेरी बहन सीमा नाज़ पर कोई मुसीबत आती है तो यह भाई मार–धाड़ करता है"। आमिर ने अपनी जेब से एक गोला निकाला आमिर ने गोला फेंकने के लिए हाथ ऊपर किया ही था कि उनका हाथ कांपने लगा। फिर देखते–देखते सारा शरीर कांपने लगा। उन्होंने नीचे की तरफ देखा चट्टान भी ज़ोर–ज़ोर से कांपने लगी थी। ऐसा लगता था मानो भूकंप आ गया हो।

एक लाल रंग की बड़े आकार की पहाड़ी गब्बर के अड्डे की तरफ बढ़ रही थी। कुछ देर बाद पता चला वास्तव में वह पहाड़ी नहीं बल्कि मोटी ताज़ी लाल रंग की साड़ी में मलबूस महिला थी। जिसके एक हाथ में बड़े आकार का लोहे का बेलन था। उस महिला को देखकर गब्बर के तमाम आदमी भाग खडे हुए थे। गब्बर भी थर–थर कांप रहा था। गब्बर की हालत देखकर अंदाजा हो गया था वास्तव में वह महिला गब्बर की बीवी ही थी। गब्बर की बीवी ने चिंगारी भरी आँखों से घूरते हुए कहा "तो तू मुझे धोखा देकर शादी रचायेगा ऐं ..? बहुत दिनों के बाद आया है तू मेरे नीचे ...... और उसने अपने मोटे–मोटे हाथों से गब्बर की गर्दन पकड़ ली। गब्बर जल बिन मछली की तरह तड़पने लगा। गब्बर ने रोते हुए कहा "भाग्यवान ! तुम मुझे छोड़ोगी तो नहीं मरने से पहले मेरी आख़िरी ख़्वाहिश है आज बृहस्पतिवार है १० बजे हैं मैं मनीषा दुबे का कार्यक्रम "गीत आपके नाम से" सुनना चाहता हूँ।

गब्बर की बीवी ने कहा ठीक है उसने गब्बर को ज़ोर की लात मारी। गब्बर रेडियो के पास जाकर गिरा रेडियो ऑन था। और मनीषा दुबे अपने चिर–परिचित अंदाज़ में कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही थी। तभी मनीषा जी ने हैरानी के आलम में एक पत्र पढ़ा "और यह पत्र हमें लिखकर भेजा है चम्बल घाटी से डाकू गब्बर सिंह ने, कमाल है दोस्तो ! डाकू भी हमें ख़त लिखने लगे। लेकिन ज़रा सोचिये डाकू इंसान नहीं होते .... ? मेरे पड़ोस में वो जो छोटू है ना .... वो मुझ से हमेशा पूछता है........ दीदी ! डाकू कैसा होता है ... ? ख़ैर छोडिए ...।

उसकी नहीं खुदाई जिसे खुदा मिला।

मैं तो सीधी–सादी मनीषा, मुझे गब्बर का ख़त मिला। रेडियो पर गब्बर का ख़त सुनकर उसकी बीवी बुरी तरह गुस्से से लाल हो गई थी। उसने बेलन से गब्बर की जमकर धुनाई कर डाली। उसके बाद उसका कॉलर पकड़कर घसीटते हुए बाहर ले जाने लगी।

गब्बर की बुरी हालत हो गई थी। सेहरे के फूल यहाँ–वहाँ बिखरे पड़े थे। गब्बर के कपड़े तार–तार हो गए थे। मुरझाए चेहरे से गब्बर मण्डप से बाहर निकला। तमाम श्रोताओं के साथ सीमा नाज़ भी गब्बर की हालत पर हंस रही थी।

उधर मनीषा दुबे ने गब्बर का पसंदीदा गाना चालू कर दिया था....

"दुल्हे का सेहरा सुहाना लगता है, दुल्हन का भी दिल दीवाना लगता है
पल भर में कैसे बदलते हैं रिश्ते, अब तो हर अपना बेगाना लगता है।

(समाप्त)

तैयार रहिए ! पढ़ने के लिए एक और कॉमेडी, सस्पेंस, थ्रिलर और रोमांटिक कहानी। आगामी अंक में।

★★★

ए॰ आई॰ आर॰ एफ॰ एम॰ रैनबो
के सभी लिसनर और प्यारे दोस्तो
आप सभी को पिन्टू दीवाना का प्यार भरा सलाम

ऐसे तो मैं ज़्यादा बनावटी बातें नहीं लिखता कि मैं एफ॰ एम॰ का बहुत ही पुराना लिसनर हूँ। और और मैं ये प्रोग्राम 10-15 वर्षों से सुनता आ रहा हूँ। ऐसी कोई बात नहीं है मुझमें मैंने जून 2004 से एफ एम नियमित रूप से सुनना शुरू किया है और तभी से मैंने प्रोग्राम में ख़त लिखना भी शुरू कर दिया है। मैं आज बहुत खुश हूँ कि इसी जगह पर मुझे इतने अच्छे–अच्छे दोस्त मिले जिनकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

ऐसे तो मैं एफ॰ एम॰ सुनता ही रहता हूँ कुछ प्रोग्राम ऐसे हैं जिनका स्तर आजकल गिरता ही जा रहा है वो Phone In कार्यक्रम मंगलवार 'गीत आपके नाम से' 'रिक्वेस्ट शो' और वीरवार गीत आपके नाम से रिक्वेस्ट शो जिनमें बहुत देर होल्ड कराने के बाद भी कॉल अटेंड नहीं किया जाता है।

अतः मेरी सभी अधिकारियों से हाथ जोड़कर नम्र निवेदन है कि मेरे इस विचार पर गौर करे और इस समस्या का समाधान जल्दी से जल्दी निकालने का कष्ट करें। धन्यवाद !

❑ **पिन्टू दीवाना**

पी-ब्लॉक, मंगोलपुरी,
नई दिल्ली-83

मेरी नज़र में R.J.

रैनबो कमांडर और हीरा	:	डॉ. ऋतु राजपूत	लिस्नरों की चाहत	:	शैली भाषांजलि
आवाज़ के बादशाह	:	ओ. पी. राठौर	रैनबो का जेवर	:	अनामिका अनन्त
आवाज़ की मलिका	:	प्रीति मोहन	रैनबो की मासूमियत	:	रेशमा
रैनबो का हुस्न	:	सुमन संजय	रैनबो का सुकून	:	मोहन लाल शर्मा
ज़ख्मी दिलों का मरहम	:	मनीषा दुबे	रैनबो की धड़कन	:	नरेन्द्र जोशी
रैनबो की शान	:	काजल शुवेज़	सदाबहार R.J.	:	प्रदीप शर्मा
लिस्नरों का मसीहा	:	सुधीर त्यागी	लिस्नरों का चहेता	:	राजेश आहुजा
बेताज बादशाह	:	सन्तोष राव	रैनबो की तहज़ीब	:	महनाज़ अनवर
रैनबो स्टार	:	राजेश काम्बोज	जानकारी का खज़ाना	:	अय्यूब ख़ान
लिस्नरो की हमदर्द	:	सुनीता शाहबादी	रैनबो का सिंगार	:	आकृति खंडूरी
रैनबो की रानी	:	रमा पांडे	बातूनी एक्सप्रेस	:	कुमकुम जैन
रैनबो की मुस्कान	:	इन्दू पाडे	रैनबो की चमक	:	गीत गुंजन
रैनबो का वक़ार	:	अरजुमंद अली ख़ान	रैनबो का हीरा	:	पार्वती राठौर
सच्चा दोस्त	:	हरीश मसन्द	रैनबो की झंकार	:	पूजा शुक्ला
रैनबो का चांद	:	तपस्या	उर्दू का खज़ाना	:	अतहर सईद
रैनबो की नज़ाकत	:	नैहा जैन	रैनबो की ज़ुबान	:	फ़करूद्दीन अहमद
रैनबो की धूम	:	महक	रैनबो का प्यार	:	स्वाति
रैनबो की फूल	:	मीना जैन	बेमिसाल R.J.	:	वन्दना
रैनबो की खुशबू	:	ममता दीक्षित	रैनबो की मिठास	:	आज़म शाह
रैनबो का दिल	:	संजीव श्रीवास्तव			

❑ **प्रस्तुति :आफ़ताब अमरोही**
शमशाद रोड़ पिलखवा
ज़िला गाज़ियाबाद

एक मुलाकात
डॉ० ज्योत्सना से

Present By : **सिराज़ मिथुन**

दोस्तों, आज हम आपकी मुलाक़ात विज्ञापन प्रसारण सेवा की एनाउंसर डॉ. ज्योत्सना जी से करवा रहे हैं। पेश हैं इनके साथ बातचीत के कुछ अंशः

प्र०— ज्योत्सना जी, आपके बारे में यह तो मशहूर है कि आपने बहुत सारी उच्च्य डिग्रियाँ प्राप्त की हैं। लेकिन हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि आपकी कौन सी डिग्री या पढ़ाई का सबसे ज़्यादा फ़ायदा विज्ञापन प्रसारण सेवा की एनाउंसर बनने में काम आई।

उ०— जैसा कि आप सब भी जानते हैं कि एनाउंसर बनने के लिए कम से कम ग्रेजुएट होना ज़रूरी है। तो एनाउंसर तो मैं डिग्री की वजह से बन ही गई और साथ ही इस वजह से मेरी संगीत शिक्षा भी इस कार्य में काम आई जिससे आज मैं इस मकाम पर पहुँची हूँ।

प्र०— हमने सुना है कि आपने संत कबीर दास पर शोध किया है ? और कबीर दास एक रहस्यमय प्राणी थी। क्या आप भी रहस्यमय हैं या अपने सारे राज़ आसानी से दोस्तों के बीच खोल देती हैं।

उ०— नहीं ! ऐसी कोई बात नहीं है। वैसे दोस्तों की बात दोस्ती तक और घर की बात घर तक ऑफिस की बात ऑफिस तक रहे तो ठीक रहता है।

प्र०— जैसा कि हम लोग रेडियो से बड़े प्रेम से से जुड़े हैं तो क्या आप भी कभी या अब रेडियो सुनती हैं।

उ०— जी हाँ बिल्कुल रेडियो में आने से पहले मुझे भी आप ही की तरह रेडियो सुनने का शौक था, तभी तो मैंने रेडियो एनाउंसर बनना स्वीकार किया और खाली वक्त में अब भी ऑल इंडिया रेडियो के सभी प्रोग्राम्स सुनती हूँ। चाहे वो कोई भी चैनल हो और रेडियो में एनाउंसर बनने के बाद तो मुझे दिली खुशी मिली थी।

प्र०— विविध भारती के विज्ञापन प्रसारण सेवा में आपकी अपनी अलग पहचान है, अलग अंदाज़ और सबसे अलग कार्यशैली है इसके पीछे राज़ क्या है ?

उ०— (हंसते हुए) हम तो जो है सो है पर हमारी विज्ञापन प्रसारण सेवा की पूरी टीम भी कुछ कम नहीं है। क्योंकि जो हमारे स्टेशन डायरेक्टर हैं। पैक्स है, ड्यूटी ऑफिसर हैं या फिर हमारे साथी एनाउंसर यूं समझ लें कि एक परिवार की तरह ही हम सब मिलकर काम करते हैं ? इन सब मेहनत व लगन से ही तो प्रोग्राम्स बन पाते हैं जो कि आप तक पहुँचते हैं और आप उन्हें सराहते हैं तो हमारा हौसला भी कुछ ना कुछ नया करने, कुछ नया प्रोग्राम्स देने को प्रेरित करते हैं तो ये ही है वो राज़ की बात।

प्र०— ज्योत्सना जी जैसे कुछ लिस्नर्स हैं जो कि अपने नाम के साथ उप नाम भी लगाते हैं तो क्या कोई उप नाम आपका भी है?

उ०— जी हाँ, बचपन से ही जब में हुई थी तो अपने माता–पिता के लकी रही जवानी में अपने भाई–बहन के लिए और अब शादी के बाद अपने पति के लिए भी लकी रही, अब इस के लिए मैं अपने "परमात्मा" ऊपर वाले की बहुत ज़्यादा आभारी हूँ। तभी तो मेरे परिवार ने मुझे ये ही उपनाम दिए बचपन में लक्की बेबी, जवानी में लक्की गर्ल, और शादी के बाद लक्की वुमैन।

प्र०— चूंकि आप दूरदर्शन पर भी कार्य कर चुकी हैं और अब रेडियो में भी लगातार कार्यरत हैं क्या आपकी अब तीसरी मंज़िल भी है।

उ०— हाँ मेरी तीसरी मंज़िल है और वो है आप लिस्नर्स जो मुझे सुनते हैं और आप ही हैं जो मेरे सब से अच्छे आलोचक एवं समालोचक हैं। और आप ही से मुझे आपके पत्रों के माध्यम से पता लग पाता है कि आप मुझे कितना पसंद करते हैं तो आप से बढ़कर भला मेरी तीसरी मंज़िल और कौन हो सकती है। आप ही हमारे मार्गदर्शक हैं।

प्र०— क्या आप घर में भी वैसा ही बोलती हैं जैसे कि रेडियो पर ?

उ०— जी हाँ पर थोड़ा अंतर तो होता ही है, क्योंकि घर पर हम शेर व शायरी या खटटी मीठी बातें जो प्रोग्राम में करते हैं उसी अंदाज़ में नहीं कर पाते हैं अपने घर पर और फिर कोई एक्टर भी तो अपने घर में एक्टिंग नहीं करता और रियल लाईफ तो रियल ही होती है।

प्र०— आप अपनी अच्छी आवाज़ के साथ एक खूबसूरत शख़्सियत भी हैं तो आख़िर में कोई ख़ास संदेश जो आप अपने फैन सुनने वालों को देना चाहें ?

उ०— दोस्तो, जीवन एक पेड़ की तरह है, जिसका फल प्रेम है और जिसका तना हमें हमेशा ही आगे बढने की प्रेरणा देता है, फलने फूलने को कहता है।

* * *

"ज़िन्दगी आसां नहीं तेरी, तू मोम की गुडिया है
ना खेल आग से कि जलना तुझको ही है
खुद जले या कोई ओर जलाये
मेरी मासूम शमा कि पिघलना तुझको ही है"

ये वो सच है जिसे हर लड़की नज़र अंदाज़ करती है और अपनी ज़िन्दगी को बदनामी के अंधेरों में धकेल देती है। आज के इस आधुनिक दौर में जहाँ परिवर्तन हुये वहीं लड़कियों की सोच में भी परिवर्तन आये हैं। अब कोई भी लड़की अपने आप को लड़कों से कम नहीं समझती, उनकी तरह हर क्षेत्र में क़दम से क़दम मिला कर काम कर रही है। अच्छा है लड़कियाँ भी लड़कों की तरह अपने घर वालों का नाम रोशन कर रही हैं लेकिन जब यही रोशनी घर में अंधेरा करने पर तुल जाये तो क्या करें ? अभी कुछ ही वक़्त पहले मैंने अख़बार में दो लड़कियों के बारे में पढ़ा था जो घर से अपने परिवार वालों को विश्वास दिलाकर आती थी कि वो कॉलेज जा रही हैं और ज़ाती कहीं और थी और पुलिस ने उन्हें मौक़े पर लड़कों के साथ पकड़ा। इस ख़बर से सभी वाकिफ़ हैं। हर लड़की को अपनी आबरू से प्यार होता है। फिर भला वो इस दलदल में कैसे जा सकती है यही सोच कर मैं परेशान हो उठी। ये ज़रूरी नहीं वो अपनी मर्ज़ी से उनके साथ हो सकता है। उनकी कोई मजबूरी हो, लेकिन मजबूरी भी तो उन्होंने ही पैदा की होगी। इन्हीं सवालों में उलझी मुझे लड़कियों पर गुस्सा आ रहा था आख़िर कुछ ऐसी ही लड़कियों की वजह से नेक वं शरीफ़ लड़की का बाहर आना जाना बन्द हो जाता है। लड़की जात पर धब्बा लग जाता है। ख़ैर मैं बड़ी मुश्किल से खुद को मना सकी कि छोड़ो तुम्हारा क्या जाता है। लेकिन मन में एक टीस घर कर गई जो बेचारी सीमा पर उतर गई। जब सीमा ने बताया कि उसे ग़लत मैसेजिस एफ.एम. पर आ रहे हैं उसका फोन न० भी लीक हो गया है। और वो सारा दोष F.M. के mail श्रोताओं को दे रही थी। जिसे सुनकर मुझे बेइंतहा शर्मिन्दगी महसूस हुई। आख़िर कब तक हम लड़कियाँ अपनी ग़ल्तियों का दोष लड़कों पर मढ़ती रहेगी ?

"जब कोई खूबसूरत चीज़ लॉकर में रखी हो तो कोई भला उसे कैसे नुकसान पहुँचा सकता है और जब वही सरेआम प्रदर्शनी में रखी दी जाये तो हर कोई उसे छू कर देखता है और इसी देखा देखी में अचानक वो टूट जाती है" मैं सिर्फ़ इतना ही कहना चाहती हूँ कि अगर हम लडकियाँ अपने आप को अपनी मर्यादाओं के दायरे में सुरक्षित रखे तो भला कोई हम पर बुरी नज़र कैसे डाल सकता है।

जो उसूल लड़कियों के लिये मुक़र्रर हैं अगर उन पर चले तो कोई हमें कैसे बदनाम कर सकता है। अगर हम अपनी हदों में रहें तो कोई कैसे नुक्सान पहुंचायेगा। सोचे तो सही। सच कहूँ तो अपनी बर्बादी का कारण लड़कियाँ खुद हैं लड़के तो मात्र बहाना हैं। अपनी हदों में रहना ही अक्लमंदी है, आधुनिकता की होड में हम अपने आपको ही नुक्सान पहुँचाती हैं लड़कों का कुछ नहीं बिगड़ता। हम इस तरह के नुक्सान से बच सकती हैं यदि थोड़ी सूझ–बूझ से काम लें।

हमें अपनी ज़िन्दगी को अनुशासित बनाना होगा। अपने लिये उसूल मुक़र्रर करके उन पर चलना होगा मसलन अपनी मर्यादाओं में रहना, अपनी सुरक्षा स्वयं करना। अगर दोस्ती है तो दोस्ती का दायरा सीमित बनाइये और वो भी सोच समझ कर। हम लड़कियों में एक ही कमज़ोरी है कि हम अपना विश्वास जल्दी ही दूसरे के हाथों में सौंप देते हैं नतीजा धोखा। अपना विश्वास इतनी आसानी से दूसरे को सौंप देना बेवकूफी है। विश्वास अपनों पर किया जाता है और दुनिया में हर कोई अपना नहीं होता। इसलिये कसी भी इंसान को बहुत परखने के बाद सोच समझ कर ज़िन्दगी में शामिल कीजिये। ये रवैया सिर्फ़ लड़कों के प्रति ही नहीं बल्कि लड़कियों के प्रति भी रखें। आपका विश्वास एक जले दीये से कम नहीं, ये मत सोचिये कि ये हवा के मंद मंद झोंके आपको नुक्सान नहीं पहुँचायेंगे याद रखो हवा के मंद झोके ही आँधी का रूप बनते हैं और हाँ अपने अस्तित्व को अपने ही हाथों में रखिये। किसी दूसरे के हाथों अपना अस्तित्व सौंप देना ज़िन्दगी की हार है कहते हैं –

"इस रंग बदलती दुनिया में कौन किसी का होता है
धोखा वही देता है जिस पर भरोसा होता है"

इसलिये किसी पर एतबार ही ना करें कि धोखा खाना पड़े। इस दुनिया में अपने परिवार से बढ़कर आपका ख़्याल कोई नहीं रख सकता इसलिये अपने परिवार पर विश्वास रखिये। अपने हमसफ़र की तलाश में ज़िन्दगी ग़लत राह पर जा सकती है इसलिये इस तलाश को अपने परिवार वालों को सौंप दे और ज़िंदगी में एक अच्छी व शरीफ़ समझदार लड़की बनकर दिखायें। अपने आप को दुनिया की गरम हवाओं से बचाकर रखना ही समझदारी है। क्योंकि लड़की का चरित्र शीशे की तरह पाक़ होता है जो ज़रा सी ठेस लगने पर कीरची–कीरची हो जाता है और फिर वो किसी के क़ाबिल नहीं रह जाता। अपने आपको इतना बुलन्द व पाकीज़ा बनाओ कि हर इंसान की मुस्कुराहट का सबब बनें उनकी तंज भरी हँसी का नहीं। मुझे उम्मीद है कि अब वो नादान तितली जो चंचलता में इतनी मचल जाती है कि अपने पंखों की खूबसूरती खो बैठती है, अपने दिल पर थोड़ा काबू रखेगी ताकि उनके खूबसूरत रंग हर किसी की आँख का ख़्वाब बने बजाय इसके कि वो रेत बन कर सबकी आँखों में चुभे।

और ये सब धैर्य व कठिन अनुशासन से ही मुमकिन है।

"तू अभी मासूम सा ख़्वाब है
हक़ीक़त बनने से पहले, खुद को ना तोड़"

○ ○ ○

लेखक : अंजुल त्यागी
मेरठ

अनमोल वचन

- किसी महिला या अपाहिज को मत मारना,
  पेड़ मेवादार को मत काटना — अबू बाकर सद्दीक
- जिस को रब संवारता है इसको बंदे कैसे बिगाड़ सकता है। — वारिस शाह
- हम इस दुनिया को योग्य घर बना बैठे हैं,
  मगर यहाँ से निरन्तर चल–चलाव का अंदेशा बना रहता है। — गुरु नानक
- चरित्र इंसान का आईना है — टॉलस्टाय
- खाने से भूखा और हिकमत से पेट भरा होना चाहिए — इब्ने जूज़ी
- कितना नादान है वो आदमी जो अपनी खूबियों पर गर्व करे,
  बुद्धिमान वही है जो अपनी कमियाँ देखता है। — खुशहाल खाँ खटक
- पुराना दोस्त सबसे बेहतर आईना है — विक्टो हियोगो
- हमारे अच्छे या बुरे कर्म हमारा पीछा करते हैं — गौतम बुद्ध

ज़ीशान बेग खेल, काँधला, मु० नगर

गज़ल

अपनी रूसवाई तेरे नाम का चर्चा देखूँ।
एक ज़रा शेअर कहूँ और मैं क्या देखूँ।

शाम भी हो गई धुंधलाई आँखे भी मेरी।
भूलने वाले में कब तक तेरा रस्ता देखूँ।

इक–इक करके मुझे छोड़ गए सब अपने।
आज मैं खुद को तेरी याद में तन्हा देखूँ।

तू मेरी कुछ नहीं लगती मगर जाने हे हयात !
जाने क्यूँ तेरे लिए दिल को धड़कते देखूँ।

मैंनें जिस लम्हे को पूजा है उसे बस इक बार।
ख़्वाब बनकर तेरी आँखों में उतरता देखूँ।

गज़ल

शबनम भी मेरी जात समंदर भी मेरी जात।
और सेब में जो वो गौहर भी मेरी जात।

मैं अपनी मुज़ाफात से बाहर नहीं निकला।
और मेरे मुज़ाफात से बाहर भी मेरी जात।

सोचो तो मेरी जात को सजदा भी हुआ है।
देखो तो इसी राह का पत्थर भी मेरी जात।

इस तरह मुझे उसने शिकस्ता किया लोगों।
हारी भी मेरी जात सिकन्दर भी मेरी जात।

कुछ दूर तो दुनियां भी मेरे साथ चली थी।
बाद उसके हुई बेघर, बेदर भी मेरी जात।

तुम अपनी किताबों में मेरा नाम ना लिखो।
हर नुक़्ते, हर इक लफ़्ज़ के अन्दर भी मेरी जात।

काशिफ़ ख़ान कुलिनजन (मेरठ)

❑ वार्ताकार : बबलू कश्यप
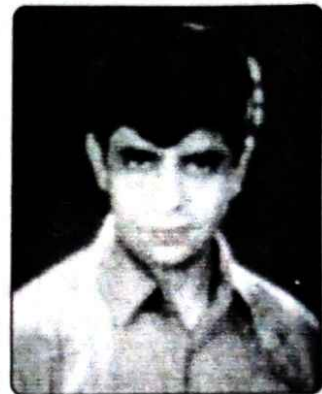
प्यारे दोस्तो, बड़ी मशक्कत के बाद हमने हरीश भाई को ढूंढा, जहाँ चाह वहाँ राह वाली कहावत सच हुई और हमारी चाहत रंग लाई। हमारे साथ हैं हरीश मसन्द जी-

प्र०– हरीश भाई सर्वप्रथम आपको नमस्कार, अपने बारे में बतायें ?

उ०– नमस्कार बबलू भाई, जहां तक परिचय की बात है तो नाम हैं मेरा हरीश।

प्र०– जन्म तिथि बतायें ?

उ०– 2 दिसम्बर को मेरा बर्थडे होता है। 1970

प्र०– अपने परिवार के बारे में बतायें ?

उ०– शादीशुदा हूँ पत्नी है मेरी प्रिया, दो बेटी हैं गौतम व मोहित। प्रिया का मेरी ज़िन्दगी में अहम किरदार है बहुत सपोर्ट करती है जब भी मैं प्रोग्राम करता हूँ तो आप लोगों की भांति सुनती है।

प्र०– शिक्षा कहाँ तक प्राप्त की है आपने ?

उ०– वैंकटेश्वर कॉलेज से इंग्लिश ऑनर्स की है एम०बी०ए० भी किया है।

प्र०– बहुत से कार्य क्षेत्र हैं, आपने रेडियो को ही क्यों चुना ?

उ०– मुझे याद है कक्षा 6 में, मैं क्लास में वैन्जो (वाद्य यंत्र) बजाया करता था। और क्लास के बच्चों का एक ग्रुप आकाशवाणी आया था। युववाणी में, उस दिन से मेरे मन में उत्सुकता पैदा हुई पहले मैंने ग्रेजुएशन पूरी की, फिर युववाणी में आया और उसके बाद एफ० एम० में आया।

प्र०– एफ. एम. रेडियो में कितने समय से हैं ?

उ०– करीब 10 वर्षों से हूँ। बराबर आपके साथ हूँ।

प्र०– एफ.एम. पर आपने कौन–कौन से प्रोग्राम किये हैं ?

उ०– जीरो आवर, गीत आपके नाम से (ख़ासकर सोमवार वाला) सपने कितने कितने, तरा–रम–पम–पम, लेकिन सोमवार गीत आपके नाम से ने मुझे अलग पहचान दी है। क्योंकि पत्रों वाला प्रोग्राम है आप सब के साथ–साथ मुझे भी उसे करने में मज़ा आता है।

प्र०– गीत आपके नाम से श्रोताओं के साथ–साथ आपका भी पसन्दीदा प्रोग्राम रहा है। इस प्रोग्राम के अलावा कोई अन्य प्रोग्राम सफल नहीं रहा क्यों ?

उ०– वैसे रैनबो पर बहुत से प्रोग्राम हैं लेकिन इस प्रोग्राम में दिल की बात कहने का मौका मिलता है। मैं बहुत शायराना एवं इमोशनल किस्म का हूँ। रात की खामोशी शायद मुझसे मेल खाती है। बस यही कारण है जो गीत आपके नाम से सफल रहा है।

प्र०– आप पत्रों को छांटकर उनका चयन करते हैं या यूं ही उठाये और पढ़ दिये ?

उ०– मैं हर पत्र को पढ़ता हूँ। पत्रों के प्रति मुझे लगाव है और शेरो शायरी वाले पत्र तो मुझे बेहद पसन्त आते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं अन्य पत्र नहीं पढ़ता। पहले पत्रों का चयन करता हूँ फिर प्रोग्राम में शामिल करता हूँ।

प्र०– आपके अंदाज़ से जाना है कि आप शेरो शायरी वाले पत्रों को ज़्यादा महत्व देते हैं और उन पत्रों के फरमाइशी गीत भी बजाते हैं। अन्य पत्रों के साथ ऐसा नहीं करते क्यों ?

उ०– इस बात को मैं स्वीकार करता हूँ लेकिन ऐसा नहीं है मैं तो गांव के लोगों के भी पत्रों पर गाने बजाता हूँ उन्हें महत्व देता हूँ। हर पत्र मेरे लिए अहम होता है। कुछ श्रोता शायरी नुमा अपनी प्रतिभा दिखाते तो अच्छा लगता है।

प्र०– श्रौता मेल हो या फीमेल सभी अपने–अपने ख़्यालात तरह से लिखकर भेजते हैं कुछ प्रोग्राम के अनुरूप कुछ निजी जीवन की बातें, कुछ सलाह चाहते हैं, कुछ जीने मरने की बातें शेयर करते हैं। सभी बातों को पढ़कर कैसा महसूस करते हैं ?

उ०– अच्छा महसूस करते हैं। जब मैं स्टूडियो में होता हूँ बिल्कुल अकेला होता हूँ लेकिन पत्रों रूपी इतने सारे दिल मेरे साथ धड़कते हैं। तरह–तरह के अनुभव मिलते हैं।

प्र०– आप दोस्ती करते हैं, कराते हैं तो दोस्ती आपकी नज़र में क्या है ?

उ०– दोस्ती बहुत ही अहम जज़्बा है। दोस्ती आप खुद करते हैं। आप निभायेंगे तो सामने वाला भी निभायेगा। वैसा ज़माना बदल रहा है, दोस्ती का रंग भी बदल रहा है। हमें रिश्तों को समझना चाहिए।

प्र०– रेडियो के अलावा भी आप कुछ करते हैं ?

उ०– मेरा अपना बिजनेस है।

प्र०– आपने एफ.एम. गोल्ड पर प्रोग्राम किये हैं रेनबो एवं गोल्ड में कोई खास अन्तर बतायें ?

उ०– गोल्ड पुराने गीतों से सरोबार है जबकि रैनबो नये गीतों का है मेहनत दोनों पर ही करनी पड़ती है। गोल्ड में गहराई ज़्यादा है।

प्र०– श्रोताओं के अनुसार आपकी आवाज़ का अंदाज़ अभिनेता देवानन्द की आवाज़ से मिलता जुलता है। इस तुलना को आप कहाँ तक स्वीकार करते हैं ?

उ०– मैं देवानन्द साहब की फिल्में देखी है उनका फैन हूँ, मेरी माता जी भी उनकी फैन रही हैं। लेकिन उनके अंदाज़ को कॉपी कभी नहीं किया है। मेरा अपना एक अंदाज़ है। यदि आप श्रोता भाई ऐसा मानते हैं तो मेरे लिए गर्व की बात है।

प्र०– जितने मैलोडियस गाने आप बजाते हैं, उतना ही मैलोडियस आपका प्रोग्राम होता है। जिसमें आवाज़ का एक महत्व है मेलोडियस आवाज़ का राज़ जानना चाहता हूँ ?

उ०– मैं जो बोलता हूँ दिल से बोलता हूँ। दिल निकली हुई बात खुद–ब–खुद मैलोडियस होती है।

प्र०– अब अपने शौक बताइयें ?

उ०– संगीत का बेहद शौकीन हूँ।

प्र०– शायरी का शौक भी है तो पसंदीदा शायर ? और एक शेर जो आपको पसंद हो ?

उ०– ग़ालिब बेहद पसन्द है

बाज़ी चाहे अतफाल है, दुनिया मेरे आगे।
होता है शबो रोज़, तमाशा मेरे आगे।।

प्र०– क्या बुरा लगता है एवं क्या अच्छा लगता है ?

उ०– बुरा लगता है झूठ एवं झूठे लोग, अच्छा लगता है सच्चाई, भोलापन, लोगों की मुस्कुराहट।

प्र०– हरीश भाई आपकी नज़र में हम श्रोताओं की क्या अहमियत है ?

उ०– जो आपकी नज़रों में मेरी अहमियत है वही।

प्र०– यदि हम कहें कि आप क्या कुछ जीतना चाहते हैं ?

उ०– मैं दिलों को जीतना चाहता हूँ।

प्र०– अन्त में अपने दोस्तों से कुछ कहना चाहते हैं ?

उ०– मैं कहना चाहता हूँ कि ज़िन्दगी ईश्वर की बहुत बडी देन है। मैंने ज़िन्दगी को नज़दीकी से देखा है। इसे संवारिए, खुशियाँ बिखेरिये और खुश रहने की कोशिश कीजिए क्योंकि यह रोज़ रोज़ नहीं मिलती।

प्र०– हरीश भाई हमसे बातें करने के लिये आपका शुक्रिया।

उ०– शुक्रिया बबलू भाई, यूं ही जुड़े रहिये, मेरे दिल के करीब शुक्रिया।

● ● ●

प्यारे दोस्तों,

यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि न्यू फ्रेंडस लिस्नर क्लब अपनी दूसरी पत्रिका निकाल रहा है। इसी प्यार मौहब्बत से "हमारी आवाज़" पत्रिका का आगमन होता रहे, मेरी शुभकामनायें न्यू फ्रेंडस लिस्नर क्लब के समस्त दोस्तों के साथ है।

अपर्णा घोषाल
प्रजैन्टर F.M. रेनबो

सर्वप्रथम न्यू फ्रेंडस लिस्नर क्लब के लोगों को नमस्कार।

दिलों को दिलों से जोड़ने का एक प्रयास यह भी है जो आप सब कर रहे हैं। "हमारी आवाज़" के द्वितीय भाग में पहले की भांति अच्छे–अच्छे विचार छपेंगे। मुझे उम्मीद है। इसके सफल प्रकाशन के लिए मुजाहिद खान, बबलू कश्यप एवं तुषार गुप्ता जी मेरी शुभकामनायें आपने साथ हैं।

ओ.पी. राठौर

बबलू कश्यप जी एवं मुजाहिद ख़ान जी नमस्कार।

श्रोताओं एवं प्रजैन्टर्स को हमारे साथ–साथ आप लोग भी रेडियो पत्रिका "हमारी आवाज़" के जरिए एक सूत्र में बांधने का कार्य कर रहे हैं। हमारी दुआऐं आप के साथ हैं। मुझे उम्मीद है पिछली बार (प्रथम अंक) की तरह इस बार भी "हमारी आवाज़" सबको पसन्द आयेगी। हमारी शुभकामनायें आपके साथ है।

शुभकामनाओं सहित

प्रीति मोहन

F.M. के लिए हम ये कहना चाहते हैं कि ये रैनबो चैनल वैसे तो काफी अच्छा चल रहा है, परन्तु इसमें श्रोताओं की बातों पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है उदाहरण के तौर पर "मिलेनियम शो" "फरमाईये तो सही" "गिल्ली डंडा गेंद बल्ला" और "गीत आपके नाम से" को श्रोताओं की मांग होने पर भी बंद कर दिया गया। और जिन कार्यक्रमों को श्रोता बंद करवाना चाहते थे, दस से ग्यारह, स्ट्रीट टॉप टेन जैसे बोरिंग कार्यक्रम बंद नहीं किये गये।

अब F.M. पर कुछ सुधार इसलिए देखने में आया है, क्योंकि निजी F.M. चैनल A.I.R. F.M. चैनल को कड़ी टक्कर दे रहे हैं।

हम चाहते हैं कि F.M. की रेंज F.M. Gold जितनी की जाये और जहाँ तक कार्यक्रमों की बात है तो रविवार का चपल चंचल शो एकदम औचित्यहीन है तथा जहाँ तक फन्डा फिट गाना हिट की बात है तो उसके स्थान पर (गाने के बहाने) हर रोज़ यदि प्रसारित किया जाये तो अच्छा होगा और (पत्र आधारित गीत आपके नाम से) को पूर्व की भैंति कर दिया जाये।

हमारी उच्च अधिकारियों से विनती है कि हमारी इन बातों पर ध्यान दिये जाये। धन्यवाद।

दिग्दर्शन एवं कविता गौड़
शोभापुर, फाजलपुर, मेरठ

सन्देश
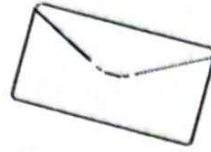
प्रिय बबलू कश्यप और मुजाहिद ख़ान !

मुझे यह जानकर बेइंतहा खुशी हुई कि आप 'हमारी आवाज़' का द्वितीय अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि पूर्व की भांति इस पत्रिका में सभी श्रोताओं के लिए दिलचस्पी का भण्डार होगा।

मेरी ओर से 'हमारी आवाज़' के द्वितीय अंक के लिए शुभकामनायें।

ग़ौहर परवेज़
ऑल इंडिया रेडियो, एफ.एम. गोल्ड

प्रिय मित्र,

मुजाहिद ख़ान व बबलू कश्यप नमस्ते ! जैसा कि आप जानते हैं मैं इस समय काफी दुःखी हूँ। आपने पत्रिका के लिए मुझसे विचार मंगाये आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं रेडियो पत्रिका "हमारी आवाज़" के लिए अपनी शुभकामनायें भेज रही हूँ। बस आप मेरी शुभकामनाएं छाप देना। सभी दोस्तों को हैलो।

शुभकामनाओं सहित !

अनुपमा वर्मा (बुलन्दशहर)

श्रीमान

मुजाहिद ख़ान एवं बबलू कश्यप जी नमस्कार

आप सब श्रोताओं एवं प्रजैन्टर्स को पत्रिका के माध्यम से रूबरू कराते हैं बहुत अच्छा प्रयास है। जिन दोस्तो को कभी देखा नहीं होता उन्हें पत्रिका के माध्यम से जानने का अवसर प्राप्त होता है। रेडियो पत्रिका "हमारी आवाज़" के लिए मेरी शुभकामनायें।

आज़म शाह

अत्यन्त हर्ष की बात है कि "न्यू फ्रैंडस लिस्नर क्लब" अपनी रेडियो पत्रिका "हमारी आबाज़" का द्वितीय अंक प्रकाशित कर रहा है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका में रोचक सामग्री प्रकाशित होगी। "हमारी आवाज़" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाऐं प्रेषित हैं।

विविध भारती वि० प्र० सेवा दिल्ली डॉ० ज्योत्सना

बेहद खुशी होती है कि श्रोता लोग F.M. के बाहर भी एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं। कुछ लोगों ने काफी अहम भूमिका निभाई है। और "हमारी आवाज़" नामक पत्रिका के माध्यम से एक–दूसरे के विचार जानने का मौका मिलता है। मेरी शुभकामनायें आप सब के साथ हैं।

निम्मी रस्तोगी
प्रजैन्टर F.M. रेनबो

"सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरी सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग लगनी चाहिए।"

हिन्दी के प्रख्यात गज़लकार दुष्यन्त कुमार की इन पंक्तियों में निहित सन्देश लेकर "हमारी आवाज़" का यह अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें एक सुखद अनुभूति हो रही है।

ज्योति का प्रस्फुटन जहाँ भी, जिस भी परिस्थिति में हो, उससे तम का विनाश अवश्यभावी है। ज्ञान वह प्रकाश है जो अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश कर पथ भ्रष्ट मानव को उसके अभिष्ट स्थान तक पहुँचाने में सक्षम होता है। सम्पूर्ण विश्व को जब संकट रूपी काले बादल अपने आगोश में ले लेते हैं तो साहित्यकारों की लेखनी और वाणी ही अज्ञानी मनुष्य को जागृत करती है। साहित्यकार को प्रत्येक देश की प्रगति का अभिन्न अंग माना जाता है। जब मनुष्य मानवता को भूलकर पाप के पंक में गिरने लगता है तो कवि का कोमल हृदय व्याकुल होकर आर्तनाद कर उठता है।

"श्वानों को मिलता वस्त्र–दूध, भूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक–ठिठुकर, जाड़ों की रात बिताते हैं।"

कवि की इन पंक्तियों का दर्द आज बहुत बड़े समाज का दर्द बन चुका है, जिसको किसी न किसी रूप में "हमारी आवाज़" के माध्यम से लेखक वर्ग ने अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

प्रिय श्रोताग्रण,

"हमारी आवाज़" की भाव धारना में आप सबके साथ बहने का मेरा यह प्रथम अवसर है। आज की बढ़ती अपसंस्कृति, मूल्यहीनता, स्वार्थपरता, ओछी प्रतिस्पर्धा, चापलूसी, चाटुकारिता, स्वाध्याय का अभाव एवं नकल की प्रवृत्ति और अर्थकेन्द्रित होने का भाव–इन सबने मेरी जिह्वा के ऊपर ताला लगा दिया है। मन में ज्वार उठ रहा है कि समाज का बिम्ब प्रस्तुत कर दूँ। सीमाबद्ध होने होने के कारण इतना अवश्य कहना चाहूँगी कि आज सच्ची अभिव्यक्ति का मार्ग अवरूद्ध होने लगा है परन्तु यदि मन को दिशा दी जाए तो बहुत कुछ सम्भव किया जा सकता है। मनुष्य का मन ही उसे सफलता की अन्तिम सीढ़ी तक पहुँचा सकता है और मन ही पतन के गर्त में ले जा सकता है।

अनुभव बताते हैं और परिणामों से प्रतीत होता है कि मन यदि साहस और सच्चाई से जुड़ जाए तो भयंकर से भयंकर तूफान भी अपने स्थान से विचलित नहीं कर सकते। मनुष्य थक जाता है तो मन उसे शक्ति

देकर पुनः खड़ा कर देता है, यदि मनुष्य का मन व्यथित हो जाए तो उसे चारों ओर से निराशा घेर लेती है। इसलिए 'हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम'।

चलते चलो की चलना ही कामयाबी है,जो थककर बैठ जाते हैं, वो मंज़िल पा नहीं सकते।

गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में
वो तिफ्ल क्या गिरें, जो घुटनों के बल चलें।

"हमारी आवाज" का यह अंक हमारे सुयोग्य साथियों की अथक मेहनत, निष्ठा, एवं लगन के कारण ही साकार रूप ले सका है। इस सफल प्रयास के लिए वे बधाई के पात्र हैं। ऑल इंडिया रेडियो के एफ.एम. रेनबो ने उद्घोषकों व श्रोताओं के बीच मित्रता की एक कड़ी का कार्य किया है। "हमारी आवाज़" इस डोर को और मज़बूत करेगी। विशेष रूप से उद्घोषकों से एक बात कहना चाहूँगी कि भविष्य में पत्रिका को और अधिक रोचक, सरस, भावपूर्ण, उत्प्रेरक, एवं नियमित बनाने के लिए हम आपके रचनात्मक तथा सक्रिय सहयोग की निरन्तर कामना करते हैं। पत्रिका का यह अंक निष्कलंक हो मेरी यह हार्दिक इच्छा है।

असलियत ज़िन्दगी की

ज़िन्दगी के थोड़ा करीब आकर देख
महल से निकल और झोंपडी में आकर देख

बहारें शायद न करे तुझे हक़ीकत से रू–ब–रू
बंजर ज़मी या फिर वीराने में जाकर देख

आदर्श हौंसले सब टूटते नज़र आयेंगे
किसी अनाथ से आंख मिलाकर देख

कितना दर्द होता है गरीब के दिल में
दो रोटियाँ ले और फुटपाथ पर आकर देख

खुद–ब–खुद सामने आ जायेगी असलियत
गरीबों में दो दिन तू भी बिताकर देख।

❑ अर्पणा डबास

नमन

मेरे सत्गुरु तेरे पथ पर, हम सदा चलते रहें।
प्रेम आपस में करें और सब के संग मिलकर चलें।।

धर्म के पथ पर चलें, स्वर्ग बन जाए धरा।
कष्ट फिर क्या प्रेम से गर, मन हमारा हो भरा।।

भूल से भी भूल हो जाए, तो हम स्वीकार लें।
दुःख के पल में आप का ही, नाम सौ–सौ बार लें।

आचरण सुन्दर रहे कर्तव्य से न विचलित न हों।
हम स्वयं अपने ही कर्मों से कभी शापित न हों।।

ज्ञान, वैभव, सम्पदा, सम्मान भरा कुछ भी मिलें।
धर्म के व्यवहार की ये नींव फिर भी न हिले।।

F.M. Rainbow के लिए

मैं F.M. Rainbow की नौ वर्ष पुरानी श्रोता हूँ। जिन्दगी में काफी तन्हा और अकेली थी, अप्रैल १९९९ में F.M. में पहला खत "गीत आपके नाम से" में लिखा, बदले में इसने बेहद अच्छे मित्रों से मेरा परिचय करवाया। ईश्वर के दिए शारीरिक तकलीफ को इसके दर्द को जहाँ मैं अकेले झेल रही थी मेरी इस तकलीफ और दर्द को मेरे अनदेखे दोस्तों ने बांट लिया, इसी की बदौलत मुझे बेहद प्यार करने वाले सगे से भी बढ़ कर 'धर्म भाई' के रूप में Happy Heart Harbhagwant Singh से मुलाकात हुई और साथ में बबलू कश्यप, सिराज़ मिथुन जैसे मित्रों की संख्या तो अनगिनत हैं।

आज के प्रगतिशील युग में जहाँ रेडियो एक पुराना अविष्कार है वहीं इसकी महत्ता सबसे बढ़कर है ये प्यारे और दोस्ती का अथाह सागर है इस से अजनबी लोग भी परिवार का हिस्सा लगते हैं। तन्हाईयों का साथी है। इसे कहीं भी, कुछ भी करते समय इन्जाय किया जा सकता है। फिर इसे दिलचस्प बनाने में प्रजैन्टरों की भी जी तोड़ मेहनत रहती है, प्रजैन्टरों में आकाश और वाणी के साथ "सुमन संजय, ओ.पी. राठौर, हरीश, काजल, प्रीति मोहन, तपस्या सर्वप्रिय हैं। और क्या लिखूँ इसके बारे में जितना लिखे कम है।

अन्त में मेरी दुआएँ एवं शुभकामनाएं F.M. Rainbow के साथ हैं ये इसी प्रकार अपने मज़ेदार कार्यक्रमों से हमारा मनोरंजन करता रहे दोस्तों को दोस्तों से मिलाता रहे और दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करता रहे।

धन्यवाद !

❑ सुखविन्दर कौर बजाज

गीत आपके नाम से (समीक्षा)

"मधुर स्वरलहरियों से सजा, गीत आपके नाम से
इसमें बसी है श्रोताओं की जान
संदेशों की सुनहरी डोर से बँधा
करता है हमारी संवेदनाओं का मान
रहो हमेशा प्यार से, बढ़ाओ इंसानियत की शान
इस कार्यक्रम से मिलता है हमें यही ज्ञान"

"गीत आपके नाम से" एक ज़रिया है दिलों को मिलाने का और उससे भी बढ़कर आप सन्देशों को हम अपने अज़ीज तक पहुँचाते हैं। हमारी भावनाओं को मधुर गीतों के माध्यम से ज़िन्दगी प्रदान करता है "गीत आपके नाम से"। हमारे दिलों के बहुत करीब है, यह कार्यक्रम। क्योंकि जो अनकहीं बातें हमारे ज़हन में तैरती हैं, उन्हें मंच प्रदान करता है। इसमें खूश्बू है किताबों के बीच रखे अपनों के खत सी। हमारे ज़हन में ख्वाहिशों और कोमल संवेदनाओं की डोर को झंकृत करता है 'गीत आपके नाम से'।

सुझाव – 'गीत आपके नाम से' एफ०एम० वन का एक ऐसा कार्यक्रम है जो सप्ताह में चार दिन आता है, श्रोताओं और इसके बीच एक तारतम्यता है, जो इसकी लोकप्रियता और सफलता की एक कड़ी है। गुरूवार को छोड़कर अन्य दिन इस कार्यक्रम में सूत्रधार बदलते रहते हैं। जिससे इसकी ताज़गी में बाधा पहुँचती है। इसलिए हम चाहते हैं कि ऐसा न हो।

❑ सविता भारद्वाज

एक्सप्रेस

ग्राहक– जल्दी से मेरी दाढ़ी बना दो जैसी झांसी एक्सप्रेस चलती है।
नाई – लीजिए साहब बन गई दाढ़ी आईने में देख लीजिए।
ग्राहक – तुमने छोटे–छोटे बाल छोड़ दिए हैं।
नाई – साहब झांसी एक्सप्रेस छोटे–छोटे स्टेशनों पर नहीं रूका करती।

साले साहब

एक चोर जेल में आया तो जेलर ने मुस्कुरा कर पूछा – शायद तुम ससुराल पहली बार आए हो?
चोर – ससुराल तो मैं पहले भी कई बार आ चुका हूँ मगर साले साहब के दर्शन पहली बार कर रहा हूँ।

शाहिद जमाल अंसारी
जुलेपुरा

सुझाव

मेरा एक सुझाव है A.I.R. F.M. Rainbow के best प्रोग्राम P.B. 503 के लिए मेरा कहना है कि ये प्रोग्राम सभी श्रोताओं की पसंद है वर्षों से सभी के दिलों को खूब बखूब लुभा रहा है। पेश करने का अंदाज तो तारीफ़ के क़ाबिल है। लेकिर मेरा इस प्रोग्राम के लिए कहना है कि जो ख़त प्रोग्राम के आख़िर में रह जायें तो उन्हें प्रोग्राम के खत्म होने से चंद मिनट पहले सिर्फ़ नाम व पता पढ़कर सभी ख़त शामिल किये जायें। दूसरा सुझाव है कि इस प्रोग्राम में श्रोताओं को भी मौक़ा दिया जाये यानि इस प्रोग्राम के हर हफ़्ते एक श्रोता को स्टूडियो बुलाया जाये और रूबरू बातें करें ताकि श्रोता की दिली ख़्वाहिश पूरी हो सके। मेरे इस सुझाव पर ग़ौर किया जाये।

शाहिद जमाल अंसारी
जुलेपुरा

प्रिय संपादक मुजाहिद ख़ान, बबलू कश्यप जी और सिराज मिथुन प्यार भरा मीठा–मीठा नमस्कार। सर्वप्रथम मैं आपको "हमारी आवाज़" पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे इस पत्रिका का पहला अंक जब आपके द्वारा 14 दिसंबर 2003 को मिला तो बेहद खुशी हुई। इस अंक में सभी एफ.एम. श्रोताओं की रचनाऐं पढ़ कर बहुत अच्छा लगा। एफ.एम. उद्घोषकों में सुजाता रथ, काजल शुवेज़, प्रीति मोहन, ग़ौहर परवेज़, संतोष राव और मन्नू भाई का इंटरव्यू प्रकाशित कर एक बेहद सराहनीय कदम उठाए हैं इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं पिछले च्चार साल से एफ.एम. चैनल 1 (रैनबो) नियमित रूपसे सुनता आ रहा हूँ। मुझे इस चैनल पर प्रसारित सभी प्रोग्राम बहुत अच्छा लगता है। उद्घोषकों में प्रीति मोहन, काजल शुवेज़, तपस्या, सुमन संजय, रमा पाण्डेय, मनीषा दुबे, मोहन लाल शर्मा, हरीश मसंद, ओ.पी. राठौड़, सुधीर त्यागी, प्रदीप शर्मा, संताष राव, नीरज यादव, राजेश काम्बोज, अर्जुमंद अली ख़ान आदि ने अपनी मधुर और दिलकश आवाज़ और प्रोग्राम पेश करने बेहतरीन अंदाज़ से एफ.एम. चैनल रैनबो में चार चाँद लगा दिए हैं। अंत में, भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इस पत्रिका का दूसरा अंक का प्रकाशन भी शीघ्र हो। इसी कामना के साथ –

संजय कुमार मालाकार, आदर्श नगर, नई दिल्ली–33

एक मुलाकात - हेमा खन्ना जी

❑ वार्ताकार बबलू कश्यप

प्यारे दोस्तों करीब चार वर्ष पहले एफ.एम. पर एक प्रोग्राम आता था "बातों-बातों में"। इसी प्रोग्राम के ज़रिए श्रोताओं की चहेती बन गई थी प्रेज़ेन्टर हेमा खन्ना जी। आजकल हेमा खन्ना एफ.एम. गोल्ड पर धूम मचा रही हैं। पेश है उनसे बातचीत -

हेमा खन्ना जी नमस्ते। नमस्ते बबलू कश्यप जी

प्र०– सर्वप्रथम मैं आपका परिचय जानना चाहता हूँ, आपके परिवार में कौन–कौन हैं ?

उ०– मेरा नाम हेमा खन्ना है। मेरे परिवार में मेरे माता–पिता, छोटी बहन, मेरे हसबैंड और मेरी मदर इन लॉ आदि।

प्र०– अपनी जन्मतिथि बतायें प्लीज ?

उ०– मेरी डेट ऑफ बर्थ है 11 अगस्त।

प्र०– आपने शिक्षा कहाँ तक प्राप्त की है ?

उ०– मैंने ग्रेजुएशन के बाद पोस्ट–ग्रेजुएशन किया, इंगलिश रिप्रेचर में, उसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन की ब्रॉडकॉस्टिंग आर्टस में, उसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन की है मैंने ट्रेनेलिज्म में।

प्र०– रेडियो में आप कितने समय हैं ?

उ०– करीब 7 वर्षों से रेडियो में हूँ।

प्र०– रेडियो का शौक बचपन से ही था बिना शौक के प्रेज़ेन्टर बनीं ?

उ०– मैंने कभी सोचा नहीं था। (रेडियो की शौकीन ज़रूर थी) कि टेलीविज़न में प्रेज़ेन्टेशन करूँगी या रेडियो पर प्रेज़ेन्टर बनूंगी। सबसे पहले मैंने टेलीविज़न करना शुरू किया लेकिन टेलीविज़न में इतना स्कोप नहीं है। हाँ रेडियो में बहुत ज़्यादा स्कोप है, यहां आप अपनी पसंद का बहुत कुछ कह सकते हैं, अपनी पसंद के गाने बजा सकते हैं एवं सुनवा सकते हैं।

प्र०– एफ. एम. रेनबो पर पहला कार्यक्रम कौन सा था और कब किया ?

उ०– (हंसते हुए) मैंने 7 वर्ष पहले पहला प्रोग्राम किया था "जीरो ऑवर शो" जो कि सभी का होता है।

प्र०– पहला कार्यक्रम करते समय कैसा महसूस किया ?

उ०– पहला प्रोग्राम था इसलिए घबराहट थी कि कहीं टैक्नीकली कुछ गलत न हो जाये।

प्र०– किस कार्यक्रम को करने में ज़्यादा आनंद महसूस किया, एवं सबसे अच्छा रिस्पांस किस कार्यक्रम के करने में मिला ?

उ०– "बातों–बातों में" प्रोग्राम को करने में बहुत आनन्द आया। उसमें हमें कोई बंधी बंधाई कॉन्सेप्ट नहीं दी गई थी। इसलिए हमने स्वयं उस कॉन्सैप्ट के बारे में सोचा। श्रोताओं की १०० चिट्ठी से भी ज़्यादा चिटि्ठयाँ एक प्रोग्राम के लिए आती थीं। हमने उसमें नयापन लाने के लिए ड्रामा भी एड किया था पूरा प्रोग्राम अभिनय से भरा हुआ था। वैसे मैं अपने हर प्रोग्राम़ में मेहनत करती हूँ। मन से करती हूँ, इसलिए मेरे प्रोग्राम्स के अच्छे रिस्पांस मिलते हैं "बातों–बातों में" के लिए बेहद अच्छे रिस्पांस मिले थे।

प्र०– एफ.एम. रेनबो से एफ.एम. गोल्ड पर कैसे आ गई ?

उ०– एफ.एम. गोल्ड जब शुरू हुआ था तो कुछ प्रजैन्टर्स का चयन किया गया था उनमें मैं भी थी।

प्र०– एफ.एम. रैनबो एवं एफ.एम. गोल्ड में कोई अन्तर बतायें ?

उ०– दोनों के अपने–अपने श्रोतागण हैं दोनों की अलग–अलग डिमांड है ?

प्र०– एफ.एम. रेडियो के अलावा और किन–किन कार्यक्षेत्रों में कार्यरत हैं ?

उ०– मैं मीडिया की क्लास भी लेती हूँ। जैसा मैंने पहला कहा टेलीविज़न भी करती हूँ। एवं ज़्यादातर प्राइवेट चैनल्स पर मैंने प्रोग्राम्स किये हैं और कर रही हूँ।

प्र०– हेमा जी आपके शौक क्या–क्या हैं ?

उ०– मेरा शौक है पढ़ना, अच्छा संगीत सुनना, और कुछ ऐसा करते रहना जो अन्य लोगों के लिए लाभकारी हो।

प्र०– बहुत से प्रेज़ेन्टर श्रोताओं से मिलना पसन्द नहीं करते, हम आपकी राय जानना चाहते हैं ?

उ०– श्रोता हमें हमारी पहचान देते हैं। वे हमें सुनते हैं पत्र भेजते हैं। आजकल लोगों के पास समय नहीं है यदि कोई हमें हमारी आलोचना भी लिखकर भेजता है हमें स्वीकार करनी चाहिये क्योंकि आलोचनाओं से ही हमें हमारी कमियां पता चलती हैं और हम उन्हें सुधारते हैं। जहां तक मिलने की बात है यदि ऐसा होता तो मैं यहां इंटरव्यू नहीं दे रही होती। क्योंकि आप सब श्रोताओं की बदौलत ही हम रेडियो पर अच्छे प्रोग्राम्स कर पाते हैं।

प्र०– अन्त में आप अपने श्रोताओं से कुछ कहना चाहेगी ?

उ०– मैं कहना चाहूँगी कि आप सब लोग हमें सुनते रहें, अच्छा संगीत सुनें और कोशिश करें कि कभी दूसरों के लिए कुछ अच्छा कर पायें।

प्र०– हेमा खन्ना जी हमसे बातें करने के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद।

उ०– बबलू कश्यप जी आपका भी धन्यवाद जो मुझे यह मौका दिया। थैंक्स।

* * *

प्राकृतिक संगीत का जादूगर ए. आर. रहमान

❑ एस० मुजाहिद ख़ान

अक्सर हिन्दी फिल्मों में खूबसूरत संगीत के साथ सिचुएशन के अनुरूप शायरी अथवा गाने के बोल ज़रूर होते हैं। और तब एक गाना पूर्ण होता है। लेकिन संगीतकार ए.आर. रहमान के संगीत में शायरी नाम की कोई चीज़ कम ही होती है। उन्हें अपनी कला पर पूर्ण रूप से कमांड हासिल है तभी तो वो तमाम इंसानी जज़्बात या भाव अथवा प्राकृतिक दशाओं को संगीत के माध्यम से उजागर करते हैं।

पहली बार 1987 में फिल्म 'रोजा' से हिन्दी सिने प्रेमियों से रूबरू होने वाले रहमान कामयाबी की मंज़िलें तय करते गये। और पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उनकी पहली फिल्म रोजा के संगीत ने उनकी बेपनाह सलाहियतों का लोहा मनवा लिया था। इसी फिल्म का एक गाना–ये हसीन वादियाँ, ये खुला आसमान" सुन कर आज भी संगीत प्रेमी कश्मीर की हसीन वादियों में खो जाते हैं। इस गाने के संगीत में रहमान ने ऐसे बाध्य यंत्रों का इस्तेमाल किया जिनसे कश्मीर के कुदरती दृश्य जैसे झरने, बहते दरिया की मौजूदगी अहसास हो।

1995 में उन्होंने फिल्म 'बाम्बे' का संगीत तैयार किया। इस फिल्म के 40 मिलियन अलबम बिके। इसी फिल्म से रहमान ने कव्वाली को, एक नई पहचान दी।

बाद में कव्वाली के उस्तांद नुसरत फतेह अली साहब के साथ मिलकर उन्होंने एक संगीत अल्बम जारी किया "माँ तुझे सलाम" नामक इस अल्बम में रहमान ने नुसरत साहब के साथ मिलकर एक कव्वाली गायी जिसके बोल थे– –चढ़ा सूरज लाखों तारे ....' इस कव्वाली के माध्यम से इन दो फनकारों ने दुनिया को शान्ति का सन्देश दिया।

पिछले दिनों लंदन के विक्टोरिया चेटर में एन्ड्रेय लोएड के सहयोग से रहमान ने अपना महान कारनामा 'बॉम्बे ड्रीम्स' पेश किया।

इस म्यूजिक प्ले ने रहमान को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगीत कार का दर्जा प्रदान किया।

पश्चिम के देशों ने रहमान के हुनर की स्वीकार किया और उनके संगीत को जादुई संगीत क़रार दिया।

विदेशी मंच पर पश्चिमी संगीत प्रेमियों के लिए अंग्रेजी संगीत लेकिन अंदाज़ की शुद्ध देसी और भिन्न।

'बॉम्बे ड्रीम्स' के तमाम 19 गीतों में बेसिक टच उन्होंने हिन्दुस्तानी ही रखा। जो उनकी उद्‌भूत प्रतिभा का कमाल है।

बाम्बे ए वाक्स (Bombay Awards) और बॉम्बे ड्रीम्स टाईटल संगीत में जिस तरह उन्होंने संपूर्ण मुम्बई शहर के कल्चर और संस्कृति को पिरोया है वो उद्‌भुत है।

सलाम बॉम्बे (Salam Bombay) और वैडिंग कव्वाली (Wedding Qawwali) हाउ मेनी स्टार्स (How many stars) ऑनली लव (Only love) आदि तमाम गीत ख्वाब नाक (स्वपनीले) संगीत से ओत प्रोत है।

ए.आर.रहमान के संगीत का एक और विशेष पहलू है सूफियाना अंदाज़। इस अंदाज को उन्होंने अपनी कुदरती प्रतिभा की बदौलत जन प्रसिद्ध किया।

सूफ़याना अंदाज़ इस अंदाज को उन्होंने अपनी कुदरती प्रतिभा की बदौलत जन–प्रसिद्ध किया।

सूफ़याना अंदाज़ उनकी ताज़ा तरीन प्रस्तुति 'स्वदेश' और 'किसना' में भी नज़र आता है।

* * *

मत इस ख्वाब के पीछे भागो

भोली लड़की
मत इस ख़्वाब के पीछे भागो
पत्थर बन कर रह जाओगी।
तेज़ बहुत है वक्त का दरिया
तुम भी इस में बह जाओगी।
ये नश्तर जैसी रूसवाई
बोले कैसे सह पाओगी।
क्या बच्चों जैसी बातों से
तुम सब को बहला सकती हो
क्या तुम अपने मन की मन तक
दुनिया को समझा सकती हो
ख़्वाबों जैसी बातें करके
क्या ताबीर पा सकती हो
बाप की शफ़क्कत माँ की ममता
क्या सचमुच ठुकरा सकती हो
जिस घर में परवान चढ़ी तुम
इसको छोड़ के आ सकती हो
दासी बातों ना मुमकिन हैं
बस तुम अपनी तन्हाई में
हिज्र के गीत ही गा सकती हो।

□ एस० मुजाहिद ख़ान

हाल–ए–दिल

बीते हुए उन हसीन लम्हों को भुलाऐं कैसे
तेरी यादों को अक्स दिल से बता मिटाऐं कैसे

यहाँ तो किस्मत ने भी की है मेरे साथ बेवफाई
वादे वफा तुझसे बता निभाऐं कैसे

दर्दे दिल अब तो रूकने का नाम नहीं लेता
आंसू अपने दुनियाँ से बता छुपाऐं कैसे

जो शख़्स मुझसे राहे मुहब्बत में बिछड़ गया
आवाज़ देकर उसको बता बुलाऐं कैसे

होंठो पर हमारे बेबसी का पहरा है
हाल–ए–दिल तुझको बता सुनाऐं कैसे

मेरे दिल के महके हुए जज़्बात हो तुम
मेरी तमन्ना मेरी चाहत मेरी आस हो तुम

माना कि बहुत दूर हो नज़रों की हदों से लेकिन
मेरे ख़्यालों में मेरी यादों के आस–पास हो तुम

"बेवजह"

चार सहेलियाँ थी। अमृता, पुनिता, कविता और नीरू। चारों गृहणियाँ थी। नौकरी की जैसे कोई जिम्मेदारी न हो तो गप्पे लडाने के लिए समय निकल ही जाता है। खाना बारह बजे बनाना है तो एक बजे शुरू किया। कपड़े धोने हैं, तो सुबह न धोकर शाम को धो लिए। न बंधा–बंधाया खटीन, न किसी का दबाव। चारों एक ही कॉलोनी में आस पास रहती थी। एक सब्ज़ी लेने आई तो दूसरी भाव पूछने चली आई। तीसरी आटा सने हाथ लेकर दूर से निहारती और पास जाने का न्यौता देती रही। चौथी फिर अपने को कैसे रोक पाए। चोरों का मिलन हो गया तो समझो घंटा भर तो कान्फ्रेंस चलनी ही है। बातें वही रोजमर्रा की–

अमृता – आज तो कोई सब्ज़ी नहीं है। वही घिया, बैगन, "मेरे ये तो घिया खाते ही नहीं"।

पुनीता – हमारे तो बच्चे भी घिया के नाम पर नाक भौं सिकोड़ लेते हैं।

कविता – (हाँ में हाँ मिलाते बोली) आजकल के बच्चे सब्ज़ी तो बस, खाते ही नहीं।

नीरू– हाँ रे कितनी महंगाई हो गई है। अभी बेबी की फ्रॉक लेने गई, मैं तो दंग रह गई। पूरे पांच सौ की फ्रॉक।

अमृता बोली – कहाँ से ली ?

नीरू बोली – मनमोहक ड्रेसेज वाले के यहाँ से।

पुनीता बोली – मनमोहक तो ठग्गू है। कैमराला गांव में कुछ लड़कियों ने घर में काम शुरू किया है वहाँ रेट सही हैं।

पतियों की प्रशंसा भी कुछ इस प्रकार से शुरू होती –

अमृता – मेरे पति तो बहुत सीधे हैं। आजकल के आदमियों के सामने बिल्कुल गऊ लगते हैं।

पुनीता – इन्होंने तो कभी किसी को तू तक नहीं कहा, गालियाँ देन तो दूर की बात है।

कविता – ये तो घूसखोरी से सख्त नफरत करते हैं। इनके साथ वालों की कोठियां खड़ी हैं।

नीरू – ये तो हमेशा सच्चाई पर चलते हैं। कभी झूठ नहीं बोलते।

चारों के पति बड़े परेशान थे। एक दिन चारों ने एक जगह बैठकर विचार–विमर्श किया कि उन चारों को एक दूसरे से कैसे दूर किया जाए। उपाय भी निकल आया कुछ इस तरह घर पहुंचकर अमृता के पति ने शुरूआत की वह अमृता से बोला –

पति – क्यों अमृता आजकल सहेलियों से नहीं बन रही क्या ?

अमृता – तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो ?

पति – तुम्हारी सहेली नीरू के पति ने बताया कि पुनीता, कविता व नीरू तुम्हारे खिलाफ आग उगल रही थी।

अमृता – लेकिन बताओ तो क्या कह रही थीं ?

पति – तुम बवंडर मचा दोगी, रहने भी दो।

अमृता – मैं कसम खा कर कहती हूँ, किसी को कुछ नहीं कहूंगी।

पति – अब बताना क्या है, ऐसी ही बचकानी बाते हैं। कोई कह रही थी तुम्हारी गर्दन मोटी है, किसी ने कहा तुम बदसूरत हो, किसी ने कहा तुम घमण्डी भी हो।

अमृता बोली – लेकिन उन तीनों के जैसी फूहड़ और बेडौल तो नहीं हूँ। बताऊँगी उन्हें।

पति बोले – लेकिन बेडौल और फूहड तो वे तुम्हें कह रही थीं। किसी ने कहा तोते की चोंच की तरह तुम्हारी नाक है, किसी ने कहा तुम्हारे होंठ बहुत भददे दिखते हैं।

अब अमृता का पारा चढ़ गया और बड़बडाते हुए बोली – उस पुनीता की गर्दन देखी है गैंडे की तरह है। वो कविता अपने को बहुत सुन्दर समझती है ? और वो नीरू उसकी थूथन देखी है, दांत कभी साफ नही करती। पास बैठने से भी बदबू आती है। अमृता बकती रही और पतिदेव बीच–बीच में बताते रहे कि उसके लिए और क्या–क्या कहा था सहेलियों ने।

यही सब बातें, अपनी–अपनी पत्नियों से उनके पतियों ने दोहराई। पुनीता बोली "उन तीनों की चोटी पकड़। कर घसीट न दूँ तो मेरा नाम पुनीता नहीं। नीरू ने गुस्से में घर के कई कांच के बर्तन तोड़ डाले। कविता गुस्से में रोती रही।

दस मिनट के अन्दर ही उन चारों को भारी बैचेनी होने लगी। लडाई करने के लिए मन मचल रहा था। सबसे पहले अमृता बाहर निकली, उसे देखकर नीरू भी निकल आई, नीरू को देखकर पुनीता और कविता भी बाहर आ गई। चारों के पति मन ही मन मुस्कुरा रहे थे, जैसे कि कोई दंगल होने वाल हो। शुरूआत व्यंग्य से हुई

अमृता बोली – निठल्ली औरतें आपस में ही एक दूसरे की जड़ काटती हैं।

नीरू बोली – तू ही तो सबसे बड़ी डायन है।

कविता बोली – तुम दोनों ही एक बढ़कर एक हो, चुगलखोर कहीं की।

पुनीता बोली – कविता तू कौन सी दूध की धुली है। पानी में आग लगाती है और अपनी बंदरिया जैसी सूरत पर तुझे बड़ा नाज़ है।

कविता बोली – चुप हो जा बिल्ली।

अमृता बोली – हथनी कहीं की आईना देखा है कभी ?

नीरू बोली – चल–चल तोता परी, अपनी टेढी नाक देख ले शीशे में।

बस फिर क्या था, चारो भिड़ने के लिए तैयार किसी ने ठंडे दिमाग से यह नहीं सोचा कि अचानक सभी को किसने भड़काया है ? या कहीं कोई साजिश तो नहीं कर रहा। उन्हें सोचने की फुर्सत ही नहीं थी। लड़ने में कोई भी पिछड़ना नहीं चाहती थी। बात बिगड़ती देख चारों के पति बाहर निकल आये और अपनी–अपनी पत्नियों को घसीट आये। मौहल्ले में तमाशा खड़ा हो गया। लेकिन चारों के पति बाहर से शान्त और अन्दर से खुश थे।

अब अगले दिन से खाना समय पर बनने लगा, कपडे समय पर धुलने लगे, बच्चों का होमवर्क होने लगा, फालतू समय अपने–अपने पतियों के साथ व्यतीत होने लगा।

❑ बबलू कश्यप, चन्द्रपाल कश्यप,
जोनी कश्यप, विपिन कश्यप
प्रेमनगर, नई दिल्ली

○ ○ ○

बचपन में बाल भूमिकाएं

सर्वप्रथम मेरे सभी प्यारे दोस्तों को खुशी की मीठी सी नमस्ते।

जिस प्रकार आप सभी ने एफ. एम. पर अपनी काफी नाम कमाया है तो मैं भी चाहती हूँ कि मैं बचपन से ही इतनी मेहनत करूं कि आकाशवाणी पर खूब सारी शोहरत पाऊँ। आशा करती हूँ कि आप सभी अपनी नन्ही सी दोस्त को सहयोग करेंगे।

मैं आज ऐसे ही कुछ फिल्मी कलाकारों के बारे में जानकारी लिख रही हूँ जिन्होंने जहाँ एक और बचपन में बाल भूमिकाएं करकर लोगों के दिलों को जीता वहीं बड़े होने पर भी खूब दौलत, इज्जत और शोहरत कमाई।

आमिर ख़ान :- आमिर ख़ान ने अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत 'यादों की बारात' में बतौर बाल कलाकार अभिनय कर कर की। बाद में वे फिल्म 'राख' के हीरो के रूप में आए और फिल्म 'कयामत से कयामत तक' से स्टार के रूप में चमके।

ऋषि कपूर :- ऋषि कपूर ने फिल्म 'मेरा नाम जोकर' से फिल्मी कैरियर की शुरूआत की थी और फिल्म 'बॉबी' से स्टार का दर्जा पाया। ऋषि ने तो बाल कलाकार का राष्ट्रीय पुरूस्कार भी पाया था।

श्री देवी :- फिल्म 'जूली' में श्री देवी ने एक बाल कलाकार का रोल बखूबी अदा किया और 'सौलहवां सावन' से नायिका बनी।

नीतू सिंह :- नीतू सिंह ने तो 'दो कलियाँ' में बाल कलाकार का जुड़वाँ रोल किया था। बाद में ऋषि कपूर के साथ जोड़ी बनाकर नीतू सिंह ने अनेक हिट फिल्में दी।

सुरैया :- दर्जनों फिल्मों में अपने गाने स्वयं गाने वाली सुरैया ने भी फिल्म 'ताजमहल' में बच्ची मुमताज महल का किरदार निभा कर फिल्मी दुनिया में कदम रखा और बाद में सिंगर व स्टार बनी।

मीना कुमारी :- अभिनेत्री माँ इकबाल बानो की बेटी मीना ने 'बेबी मीना' के नाम से 'एक ही भूल' में बाल भूमिका की और बाद में 'बच्चों के खेल' से अभिनेत्री बनकर सिनेमा के पर्दे पर आई।

मधुबाला :- मधुबाला ने अपने कैरियर की शुरूआत बांबे टाकीज की फिल्म 'बसंत' में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट की। फिर कई फिल्मों में बाल भूमिकाएं निभाने के बाद वह किशोरावस्था में फिल्म 'चित्तौड़ विजय' में अभिनेत्री के रूप में पर्दे पर आई व फिल्म 'नीलकमल' ने उसे स्टार का दर्जा दिलाया।

नरगिस :- अभिनेत्री नरगिस ने बेबी रानी के नाम से फिल्म 'तलाश–ए–हक' में बाल कलाकार की भूमिका के साथ कैरियर की नींव रखी। इस फिल्म का निर्माण उनकी माँ जद्दन बाई ने किया था। बाद में 'तकदीर' से स्टार के रूप में ख्याति पाई और 'मदर इंडिया' ने उन्हें अमर कर दिया।

उपरोक्त के अलावा 'योगिता बाली, पद्मिनी कोल्हापुरे, उर्मिला, जुगल हंसराज व अनिल कपूर ने भी बाल कलाकार के रूप में काम किया। ये फिल्म स्टार बचपन में ही अपने कैरियर की नींव डालकर आज के किशोरों के लिए प्रेरणास्रोत बन चुके हैं। इन्होंने साबित कर दिया कि बचपन का अनुभव कैरियर बनाने में काफी सहायक होता है।

❑ प्रस्तुति : **खुशी (Dreamgirl)** कस्बा तेवड़ा, मुज़फ्फर नगर

एक मुलाकात - नरेन्द्र जोशी

❑ वार्ताकार : बबलू कश्यप
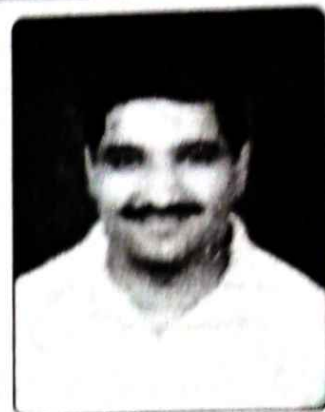
प्र०– नरेन्द्र जी सबसे पहले नमस्कार

उ०– नमस्कार, बबलू कश्यप जी, आपने मुझे याद किया शुक्रिया।

प्र०– सर्वप्रथम अपनी जन्मतिथि बतायें ?

उ०– मै बेहद अच्छे दिन पैदा हुआ था। 1 सितम्बर को मेरा जन्म हुआ था।

प्र०– शिक्षा कहाँ तक प्राप्त की है ? दिल्ली से या दिल्ली से बाहर के हैं ?

उ०– मैंने ग्रेजुएशन प्राप्त की है। दिल्ली से नहीं हूँ, जन्म मुम्बई में हुआ, मेरठ व मथुरा में मेरा बचपन गुजरा, फिर हम अम्बाला में रहे और अब दिल्ली का हूँ।

प्र०– एफ.एम. रेडियो में कितने समय से कार्य कर रहे हैं ?

उ०– शुरूआत मैंने युववाणी से की थी उसके बाद टाइम्स एफ.एम. में रहा, उसके आद एफ.एम. में आ गया और अब आप देख ही रहे हैं मैं क्या क्या कर रहा हूँ।

प्र०– आप प्रेज़ेन्टर ही बनना चाहते थे या कुछ और बनना चाहते थे ?

उ०– कभी नहीं सोचा था। न कभी एक्टिंग की, मीडिया क्षेत्र से दूर ही था, स्कूल के ड्रामे में भी कभी भाग नहीं लिया। बस किस्मत में ही था प्रेज़ेन्टर बनना और मुख एक्टिंग करना।

प्र०– एफ. एम. रेडियो पर कौन–कौन से प्रोग्राम किये हैं ?

उ०– जीरो ऑवर शो, ऑन एयर हास्य तरंग, फरमाइये तो सही, गीत आपके नाम से, हैलो एफ. एम., हॉट लाइन, हंसतो के घर बसते, बहुत है कुछ ज़्यादा याद भी नहीं आ रहे हैं।

प्र०– यूं तो आपने काफी प्रोगाम्स किये हैं लेकिन कॉमेडी युक्त प्रोग्राम ज़्यादा सफल रहे हैं इसका कारण बतायें?

उ०– इंसान की ज़िन्दगी के अन्दर बहुत ज़्यादा टेंशन है। और मैं स्वभाव से बेहद खुश मिजाज़ हूँ।

प्र०– बचपन से ही चुलबुले अंदाज़ के हैं या यह फिर यह अंदाज़ प्रोग्राम तक ही सीमित है ?

उ०– बचपन से मैं शांत स्वभाव का था। मीडिया में आने के बाद से बदल गया। जब हम दूसरों को हंसने के लिए कहते हैं, दूसरों को हंसाते है तो पहले खुद क्यों न हंसे।

प्र०— आज के दौर में हंसना—हंसाना मात्र दिखावा है, आप तरह—तरह की आवाज़ों से लोगों को हंसाते है कैसे निकाल लेते हैं इतनी सारी आवाज़ें ?

उ०— कुछ नहीं, यह सब आप भी कर सकते हैं। मुझसे भी बड़े सीनियर लोग हैं। बस खुश मिज़ाज़ बनिये।

प्र०— आपके गाने मैलोडी से हटकर होते हैं, क्या आपको फास्ट म्यूज़िक पसंद है, क्योंकि आपके द्वारा बजाये जाने वाला म्यूज़िक फास्ट होता है ?

उ०— मेरी कोशिश रहती है, मैं लोगों को खुश देखना चाहता हूँ मैं धूमधड़ाके वाला म्यूज़िक बहुत पसन्द करता हूँ। संगीत ऐसा हो कि लोग थिरकने को मजबूर हों। वैसे मुझे भूपेन हज़ारिका बेहद पसंद है, रफी के गाने भी पसंद हैं। लेकिन लोगों के लिए इस समय मैं फास्ट म्यूज़िक ही पसंद करता हूँ।

प्र०— आप एफ.एम. रेडियो के अलावा किन—किन चैनल्स के लिए आवाज़ देते हैं ?

उ०— मैं बता नहीं सकता, मुझे स्वयं याद नहीं रहता कि कितने कमर्शियल किये हैं, एफ.एम. रेनबो के अलावा प्राइवेट चैनल्स, टी. वी. पर, प्रायोजित कार्यक्रम, वगैरह। जब मैं कमर्शियल करता हूँ तो मुझे स्वयं पता नहीं होता कि किस चैनल पर जायेगा।

प्र०— आप अन्य चैनल्स के लिए भी आवाज़ देते हैं। एवं एफ.एम. रेडियो पर भी, ज़्यादा अच्छा कहाँ महसूस करते हैं ?

उ०— सभी जगह क्योंकि मैं अपना काम देखता हूँ, मुझे अच्छा काम करना है वैसे इस क्षेत्र में मुझसे भी अच्छे—अच्छे लोग हैं। ये आप लोगों की इनायत है कि मुझे मेरी आवाज़ को पसंद करते हैं।

प्र०— आप अच्छी खासी कॉमेडी कर लेते हैं एक बेस्ट कॉमेडियन जो आपके प्रेरणा स्रोत हों ?

उ०— एक बस के अन्दर कोई शरारत नुमा कॉमेडी, सब्ज़ी बेचने वाला, फुटपाथ पर जो करते हैं 31-32, सेल—35, मैं आम जनता को प्रेरणा श्रोत मानता हूँ उन्हें कॉपी करने में मज़ा आता है।

प्र०— आप सारा दिन बिजी रहते हैं परिवार के लिए समय कैसे निकाल पाते हैं ?

उ०— परिवार के लिए समय (हंसते हुए) बड़ा अच्छा सवाल है मेरी बीवी इस इंटरव्यू को पढ़ेगी तो बेहद हंसेगी। मैं किसी भी तरह समय ज़रूर निकालता हूँ। बीवी के साथ फिल्में देखता हूँ। मशहूर स्थानों पर घूमने जाता हूँ। दिल्ली से बाहर भी घूमने जाता हूँ। जैसे पिछले दिनों मैं जोधपुर गया था।

प्र०— आपके शौक क्या—क्या हैं ?

उ०— ज़्यादा नहीं हैं। संगीत सुनना, अच्छी फिल्में देखता हूँ, महान हस्तियों से मिलना, बातूनी ज़्यादा होने के कारण दिन में कम से कम 40-50 लोगों से भी ज़्यादा लोगों से बातें करता हूँ।

प्र०— जीवन में कितना खोया और क्या पाना चाहते हैं ?

उ०— बचपन खोया है, माता—पिता को खोया है, घर में सबसे बड़ा होने की वजह से बहुत परेशानियां झेली हैं। संतुष्ट इस वजह से हूँ कुछ खोया है तभी मैं इतनी अच्छी जगह हूँ। बहुत आगे तक जाना चाहता

हूँ। व्यक्ति बहुत कुछ पाना चाहता और मैं हिन्दुस्तान के हर व्यक्ति के दिल में छोटी सी जगह चाहता हूँ।

प्र०— आपने पत्रों पर आधारित प्रोग्राम ज़्यादा किये हैं, तारीफें, आलोचना सब कुछ होता है कैसा लगता है श्रोताओं के पत्रों को पढ़कर ?

उ०— बहुत अच्छा लगता है आज इंटरनेट का ज़माना है, एस०एम०एस० का ज़माना है, ख़त लिखना, किसी के लिए इतना समय देना बड़ी बात है। आप सबके पत्रों को पढ़कर बेहद अच्छा लगता है। मुजाहिद ख़ान की पेंटिंग मुझे बेहद पसन्द है।

प्र०— अपने श्रोताओं के लिए सन्देश ?

उ०— सन्देश तो बड़े बड़े लोग देते हैं। मैं तो आप में से एक हूँ। दुखों के आगे कभी घबराना नहीं चाहिए। रात के बाद सवेरा अवश्य होता है। अच्छे एवं स्वच्छ विचार मन में सभी को रखने चाहिए।

प्र०— नरेन्द्र जी हमसे बातें करने के लिए आपका बहुत—बहुत धन्यवाद।

उ— (हंसते हुए) धन्यवाद कैसा ! आप लोग इतनी दूर से आये हैं और अपनी प्रथम पत्रिका का एक अंक मुझे दिया है। बबलू कश्यप जी आपने पत्रिका में मुझे मौका दिया शुक्रिया तो मुझे करना चाहिये आपका।

* * *

शादी

- जो व्यक्ति किसी लड़की से उसकी सुन्दरता के लिए शादी करता है वह मूर्ख है, जो रूपये के लिए करता है वह लालची है और जो अच्छे स्वभाव के लिए करता है वह सच्चा है।
- शादी करने वाले युवको को या तो सब कुछ जानना चाहिये या कुछ भी नहीं।
- शादी ज़रूर करनी चाहिये। यदि पत्नी स्वभाव की अच्छी मिल गई तो जीवन आनन्दमय हो जायेगा और यदि पत्नी स्वभाव से अच्छी न मिली तो आप फ़लासफ़र बन जायेंगे।
- जो आदमी शादी का गहराई से अध्ययन करता है, वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि शादी एक प्रकार की गुलामी है।
- शादी का मतलब ये नहीं कि एक दूसरे के जिस्मों पर हकूमत की जाये। बल्कि यह है कि एक की कमी दूसरे से पूरी की जाये।
- शादी से पहले बच्चों को पालन—पोषण से संबंधित मेरे पांच विचार थे, अब मेरे पांच बच्चे हैं। विचार एक भी नहीं।

❑ **प्रस्तुति : बबलू कश्यप**

आपके पसंदीदा शेर

मैं तुझे ढूँढने यादों की खुली सड़कों पर
खुश्क पत्तों की तरह रोज़ बिखर जाता हूँ

★ मुजाहिद ख़ान

मुद्दतें गुज़री तरके ताल्लुक को
तेरी यादों का गुज़र अब भी बाकी है

★ बबलू कश्यप

उसने पूछा कि ज़िंदगी क्या है
हाथ से गिरकर जाम टूट गया

★ तुषार गुप्ता

एक भी आंसू काम न आया
उनका कोई पैगाम न आया
सो गया साकी, उठ गई महफ़िल
मेरे लबों तक जाम न आया
तू न मिला तो दर्द मिला है
दर से तेरे नाकाम न आया

★ संजय मालाकार

मैं अपने इश्क में कैसा कमाल रखता हूँ
के बेरूखी में भी तेरा ख्याल रखता हूँ

★ हरभगवन्त सिंह

दिल जिस का हो जाता है
दीवाना हो जाता है
आख़िरी शब का एक आंसू
आईने धो जाता है

★ पारूल त्यागी (मेरठ)

अपने ज़मीर से मैं बग़ावत न कर सका
तेरे सिवा किसी से मुहब्बत न कर सका

मुझ से अगर ज़रा भी नहीं तो क्यों
लिख–लिख के मेरा नाम मिटाया है आपने

★ रचना त्यागी

हक़ वफ़ा का निभा गये आंसू
वो नहीं आये आ गये आंसू

★ अनुपमा वर्मा

लिपटी रहती है तेरी याद हमेशा हम से
कोई मौसम हो ये मफलर नहीं फेंका जाता

★ शबाना अल्वी, शरमीन अल्वी

उठाए जब भी मैंने दुआ के लिए हाथ
जाने क्यों आपका नाम होंठों पर आकर मचल गया

★ सीमा नाज़ (मुजफ्फर नगर)

दर्द का रिश्ता है मेरा, खुशी मेरे नसीब में नहीं
कोई हमसे प्यार करे, हम इतने खुशनसीब नहीं

★ मौ० नदीम आफ़रीदी, (ज़ाकिर नगर, ओखला)

उजाले ढूंढने आयेंगे एक दिन तुमको
अंधेरी रात में सूरज से राब्ता रखना

★ सविता भारद्वाज (मंगोलपुरी दिल्ली)

कोई ऐसी भी राह गुज़र मिले
तू जहाँ मुझ को बार–बार मिले
ग़ज ज़दा जब मैं तेरे पास आऊँ
आँख तेरी भी अश्क बार मिले

★ यू.पी. गर्ल रूपम त्यागी (मेरठ)

यूँ छुपाता हूँ कि दिल के ज़ख्मों को
तेरी चाहत की यह निशानी है

★ शाहिद जमाल अंसारी

दिल की इस दौर में कीमत नहीं होती शायद
सब की किस्मत में मुहब्बत नहीं होती शायद
फैसला आखिरी लम्हें में बदल सकता है
हारने वालों में हिम्मत नहीं होती शायद

★ महताब ख़ान, वसीम ख़ान (लोनी)
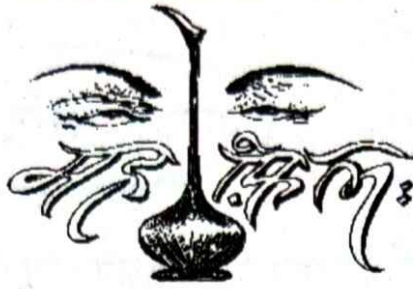
आपके पसंदीदा शेर

तेरी यादों ने माला माल किया
भर गये आँख के ख़जाने फिर

★ **बिजेन्द्र सिंह वफा**

ये सोचना के हमेशा रहो साथ कोई
हवा के दोर पे ठहरा हुआ धुआँ है मियाँ

★ **कुणाल त्यागी**

मैंने ख़त लिखा उनको बड़ी तफ़सील के साथ
उन्होंने जवाब में फक्त आदाब लिख दिया

★ **फ़िदा उररहमान ख़ान 'छैला' (कुवैत)**

मेरी आज़ाद रूह को फिर से कैद जिस्म मत करना
बड़ी मुश्किल से काटी है सज़ाए ज़िन्दगी मत करना

मुश्किलों ने यह हाल कर दिया है मेरा
मिज़ाज पूछने वाला बुरा लगता है मुझे

★ **नम्रता डबास**

हम छोड़ चले तेरी दुनिया, तू हमें कभी याद न करना
इस बेरहम जहां में ए मेरे यार, तू किसी का एतबार मत करना।

ग़मों की पनाहों में रहते हैं
कांटों के साये में रहते हैं
ग़म ही खाते हैं ग़म ही पीते हैं
हर लम्हा यूं ही मर–मर के जीते हैं।

★ **पिन्टू दीवाना, मंगोलपुरी**

ज़िन्दगी आ तुझे कातिल के हवाले कर दूँ
मुझसे अब ख़ूने तमन्ना नहीं देखा जाता।।

तेरी इस बेवफाई पर फिदा होती जां मेरी
खुदा जाने तुझमें वफा होती तो क्या होता।।

अंधेरा ही भला है, मैं उसी की क़द्र करता हूँ
शब–ए–महताब में अक्सर हुई है चोरियाँ मेरी।।

साहिल के सकूं से किसी इंकार है लेकिन
तूफान से लड़ने का मज़ा कुछ और ही है।

खुद उस मुसाफिर की हिम्मत बढ़ाये
जो मंज़िल को ठुकरा दे मंज़िल समझ कर।

मिल ही जायेगी कहीं ढूंढने वाले को हारब
हर गुलिस्तां में खिजां हो यह ज़रूरी तो नहीं।

ए आसमान तेरे खुदा का नहीं है खौफ़
डरते हैं ए ज़मीं तेरे आदमी से हम।

दिल टूटने से थोड़ी सी तकलीफ तो हुई
लेकिन तमाम उम्र का आराम मिल गया।

★ **नम्रता डबास**

लाख़ एहबाब उजालों में मिला करते हैं
अब अंधेरा है ज़िंदगी में तो कहाँ मिलते हैं
तेरी चाहत का दिल यकीं करता है आज भी
अब तो आजा कि हम दिल से गिला करते हैं

★ **सिराज मिथुन, बाड़ा हिन्दू राव**

तुमसे मिलके

आपके मिलकर बिछड़ने के उस लम्हात पे रोना आया
अपनी किस्मत अपने हालात पे रोना आया

ज़िन्दगी के उस मोड़ पर मिले हो मुझे ऐ दोस्त
कि इस लम्हे आपके हर सवाल पे रोना आया

काश न मिलाती ये किस्मत हमको कि
आपके शिकायत भरे हर अल्फाज़ पे रोना आया

चाह सकती नहीं आपको मैं पा सकती नहीं
जाने क्यों आपको खाने के हर ख़्याल पे रोना आया

मेरी इस ग़ज़ल का हर लफ़्ज़ आपके लिए है दोस्त
जाने क्यों इस ग़ज़ल के हर अशआर पे रोना आया

* * *

आपके होंठों पर हमेशा मुस्कुराहटों का सवेरा हो
न ज़िन्दगी में आपके कभी दुःखों का अंधेरा हो

आपके सभी ग़म मुझे मिल जाएं
मगर आपकी ज़िन्दगी में हमेशा खुशियों का बसेरा हो

प्रस्तुति : इंडियन गर्ल शीमा नाज़

चुटकुले

* अमेरिका वालों ने एक ऐसा कम्प्यूटर बनाया जो हर सवाल का जवाब एक सैकंड में देता था, सभी देशों से एक–एक व्यक्ति उससे सवाल पूछने गये, कम्प्यूटर ने सभी के सवालों का जवाब दिया, यह सुनकर भारत के प्रधानमंत्री ने एक मोटर मैकेनिक को भेजा, उसने जाते ही कम्प्यूटर से कहा कि अपने पुर्ज़े खोल दो, इस पर अमेरिका वालों ने कहा कि तुमने ये क्या किया, तो हिन्दुस्तानी बोला कि हमारे सामने तो अच्छे–अच्छे बिखर जाते हैं तो ये क्या चीज़ है।

* मास्टर ने बच्चों से पूछा। तुम में से कौन–कौन जन्नत में जाना चाहता है सब बच्चों ने हाथ उठा लिए लेकिन असलम ने हाथ नहीं उठाया।
मास्टर साहब – असलम क्या आप जन्नत में नहीं जाना चाहते ?
असलम – जनाब मेरी अम्मी ने कहा था स्कूल से सीधे घर आना।

प्रस्तुति : पारुल त्यागी
मेरठ

एक विचित्र पत्र
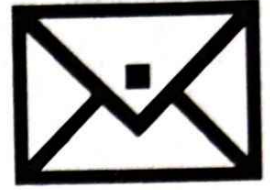
❑ प्रस्तुति : **रचना त्यागी**

नोट : निम्नलिखित पत्र को पहली बार पूरा पढ़िए, फिर केवल चिन्ह वाली लाइनों को पढ़िए और दोनों के अन्तर का मज़ा लीजिए :–

■ 'प्रिय मित्र, सदा खुश रहो'

■ आपका पत्र मिला, पढ़कर बहुत खुशी हुई कि आप
कक्षा में सर्वप्रथम रहे, मगर यह जानकर बहुत दुख हुआ कि आप
■ सख्त बीमार हैं, भगवान से मेरी प्रार्थना है कि आप
शीघ्र स्वस्थ हो जाएं, ताकि अगली परीक्षा में किसी भी लड़के के नम्बर आपसे
■ कभी अच्छे न हों, अगला पत्र यही समाचार लाए कि आपका समय
चैन से बीतता है। और दुनियाँ देखे कि मेरा ये अरमान
■ पूरा हो गया है। मेरे हृदय में भक्ति है तो भगवान शीघ्र ही
मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे ! आपकी स्वस्थता के पश्चात हम अवश्य ही
■ आपको अपने पास बुलाएंगे। हम साथ–साथ पढ़ते थे तो
मेरे प्रति आपका अपार स्नेह देखकर सभी मुझे आपका
छोटा भाई कहते थे, उम्र में ही नहीं व्यवहार में भी तो
■ आपका छोटा भाई था, जिसे आप अत्यन्त प्यार करते थे
बचपन में मेरी त्रुटियों से खिन्न होकर मेरे प्रति
जो आपके मन में ग्लानि उत्पन्न हो गयी थी
■ उसका भी अन्त हो गया है, यह जानकर बेहद खुशी हुई
■ अब तो भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि आप जीवन में
सफलता को चरमोत्कर्ष पर पहुंचे और आपके प्रति ईर्ष्या रखने वाले लोग
■ कभी खुश न रहें। मेरी तमन्ना है कि अपने परिवार के साथ आप
खुशहाल जीवन व्यतीत करें। तमाम मुश्किलें आपके जीवन से निकलकर
■ समुन्द्र में डूबकर मर जाऐं। तभी मेरे हृदय को पूर्णतयां शान्ति
मिलेगी।

'जय हिन्द'

एक मुलाकात - राजेश काम्बोज़ जी से

❑ वार्ताकार : बबलू कश्यप

आज हमारे साथ हैं एफ.एम. के एक और सितारे, जानते हैं उनका परिचय

नमस्ते बबलू भाई। मैं राजेश काम्बोज़ हूँ।

प्र०– राजेश भाई अपनी जन्मतिथि बताये प्लीज ?

उ०– 30 मार्च है सन् मत पूछिये।

प्र०– शिक्षा आपने कहाँ तक प्राप्त की है ?

उ०– दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया हैं एवं पर्सनल मैनेजमेंट किया वाई०एम०सी०ए० दिल्ली से।

प्र०– एफ.एम. रेडियो में कब से हैं ?

उ०– वैसे तो मैं 1995 से हूँ लेकिन एक प्रेज़ेन्टर के तौर पर मैं 1998 से हूँ।

प्र०– पहला प्रोग्राम कौन सा किया था ?

उ०– पहला प्रोग्राम मैंने किया था "नमस्कार दिल्ली" जो कि सुबह 6 बजे आता है।

प्र०– अन्य कौन से प्रोग्राम किये हैं ?

उ०– मैंने करीब–करीब हिन्दी के सभी प्रोग्राम्स किये हैं नमस्कार दिल्ली, कलाकार कैसे–कैसे, मिलेनियम शो, रंग–ए–महफ़िल, रंग–ए–महफ़िल बेहद पसन्दीदा मुझे भी था। कारण आप श्रोता भाई भी जानते हैं।

प्र०– प्रथम प्रोग्राम करते समय कैसा महसूस किया ?

उ०– थोडी घबराहट भी थी। चूंकि युववाणी में भी प्रोग्राम किया था इसलिए विश्वास भी था। ऊपर वाले ने लाज रख दी और अब तक सब कुछ ठीक चल रहा है।

प्र०– रंग–ए–महफिल के अलावा भी आपका कोई पसन्दीदा प्रोग्राम रहा है ?

उ०– मिलेनियम शो, मूवी मैजिक, एक ही कलाकार इन प्रोग्रामों में रिसर्च की बहुत आवश्यकता थी। मैंने मेहनत भी की थी और सैक्शन वालों ने भी विश्वास जताया कि राजेश ऐसे प्रोग्राम्स कर सकता हैं

प्र०– एक प्रेज़ेन्टर के तौर पर अपने आप को कहाँ पाते हैं ?

उ०– मुझे आज भी लगता है कि मेरी शुरूआत है।

प्र०– अपने शौक बतायें ?

उ०– लिखना, पढ़ना, दोस्ती करना, नई–नई फिल्मों के बारे में जानना, ज़्यादा रहा गायिकी जो प्रेज़ेन्टर बनने में लाभकारी रही। जो पैशन था अब प्रोफेशन बन चुका है।

प्र०– दोस्ती के बारे में कुछ टिप्पणी करें ?

उ०– ज़्यादातर रिश्ते नाते स्वार्थ से जुड़े होते हैं। दोस्ती ही ऐसा रिश्ता है जो निःस्वार्थ भावना से किया जाता है।

प्र०– दिली तौर पर कुछ जीतना चाहते हैं ?

उ०– लोगों के दिल, यदि ऐसा करने में कामयाब हो जाऊँ तो बेहतर है।

प्र०– किसको प्रेरणा स्रोत मानते हैं ?

उ०– बचपन में विविध भारती का शौकीन था। तो अमीन सयानी साहब 'बिनाका गीत माला' करते थे। मुझे बेहद पसंद था। 'संगम' मैं बहुत सुनता था। और सोचता था कि मुझे भी इनके जैसा ही बनना है, तो अमीन सयानी साहब मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।

प्र०– क्या अच्छा एवं क्या बुरा लगता है ?

उ०– अच्छा लगता है जब आप मेहनत करते हैं और पॉजीटिव रिस्पांस मिलता है। लेकिन जब आप मेहनत करते हैं और उसे नज़र अंदाज़ किया जाता है तो कुछ दुःख भी होता है।

प्र०– ईश्वर में कितना विश्वास करते हैं ?

उ० – बहुत ज़्यादा अटूट विश्वास है। हम सब उसी की कृपा से हैं।

प्र०– अन्त में सभी श्रोताओं से क्या कहना चाहते हैं ?

उ०– कहना चाहूँगा एफ.एम. रैनबो सुनते रहें। अच्छी चीज़ की तारीफ़ भी करें। तारीफ़ के साथ–साथ कमियों को बतायें। कमियों से हमें अपने आप को सुधारने का मौका मिलता है।

प्र०– राजेश भाई हमसे बातें करने के लिए आपका धन्यवाद

उ०– बबलू भाई आप यहां आपने मुझे मौका दिया। थैंक्स।

* * *

प्यार भरे चुटकुले

✦ भिखारी – माता जी क्या इस मरीज़ को थोड़ी मिठाई मिलेगी ?
महिला – क्यों रोटी से काम नहीं चल सकता ?
भिखारी – चल सकता है माता जी पर आज मेरा बर्थ डे है।.

✦ दो महिलाएं कुछ समय बाद मिलीं तो एक ने पूछा – बहन आपने राजू बेटे का उंगली चूसना कैसे छुड़ाया?
दूसरी महिला – कुछ खास नहीं। मैंने उसकी नेकर ढ़ीली सिल दी है वह उसे ही पकड़े रहता है।

पिन्टू दीवाना, मंगोलपुरी

धुंधली यादें

तेरी याद जब आती है
मेरी आँखों को नम कर जाती है
याद आँसूओं में बह नहीं पाती
रेत की तरह पानी में ठहर जाती है
याद ज़िन्दगी से मिट नहीं सकती
मेरी आरजू को महका जाती है
याद दिल में समा नहीं पाती
सिर्फ़ धड़कनों को बहका जाती है
अब ख़्वाबों को बुना नहीं जाता
यादों की आहट फिर से उधेड़ जाती है
तुझे भुलाने की कोशिशें अब 'अनी' नहीं करती
याद तेरी बिन बुलाये चली जाती है

'अनी' अन्जुल त्यागी
मेरठ

शिकवा

मैनें खुशियों की तरह ग़मों को भी सहेजा है
कभी तन्हा रहोगे तुम तो मेरी याद आयेगी

अब तो इन दोस्तों की भीड़ में तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं
जब अकेले में आँसू बहाओगे तो मेरी याद आयेगी

इस तरह सजाती थी वो इस तरह मुस्कुराती थी वो
किसी को प्यार से देखोगे तो मेरी याद आयेगी

मेरे सब्र के दीये को आजमाईश की हवा न दो
सुनी चौखट पर जब दीया मेरे नाम का जलाओगे तो मेरी याद आयेगी

अब तो एक आवाज़ पर दौड़ी चली आती है 'अनी'
जब हज़ार आवाज़ पर भी मैं नहीं आऊँगी तो मेरी याद आयेगी

'अनी' अन्जुल त्यागी
मेरठ

आध्यात्मिक विचार

उसकी कोशिशों को सराहो, उसके हमराह बनो
कि उसने एक शम्मां जलाई है, आंधियों के खिलाफ

तारीख़ तुझे बतलायेगी दुनियाँ में खुशी का नाम नहीं
जिस दिल पर हवस का सिक्का है, उस दिल के लिए आराम नहीं।।

'ज़रा' आज के परिवेश में देखने की कोशिश करें, समाज में हर व्यक्ति दुःखी और अशान्त ही नजर आयेगा। इसका कारण यही है कि आज इंसान केवल मात्र संसार से ही सुख की अपेक्षा करता है और जब संसार से अपनी अपेक्षा के अनुसार सुख नहीं प्राप्त होता तो वह दुःखी हो जाता है। एक गरीब इसलिए दुःखी है क्योंकि वह उन सभी सुख–सुविधाओं से वंचित है जो एक अमीर के पास है। एक अमीर इंसान की तरफ देखें कि क्या वह सुखी है ? नहीं, वह भी सुखी नहीं है क्योंकि वह और अधिक अमीर बनना चाहता है, अमीरी की शिखर को छूना चाहता है। जैसे एन्ड्रयू कारनेगी–एक अमीर व्यक्ति था। उसने पूरी ज़िन्दगी बेइन्तिहा पैसा कमाया। जब वह मृत्युशैय्या पर था तो किसी ने उससे पूछा, आपने बहुत धन इकट्ठा किया, अब तो आप शान्ति से इस दुनिया से कूच कर सकेंगे। तब एन्ड्रयू कारनेगी दुःखी होकर कहता है कि 'नहीं, मेरा लक्ष्य तो 100 अरब कमाना था। लेकिन मैं सिर्फ 10 अरब ही कमा पाया। यह है इंसान की तृष्णा, उसकी चाह, जो बेअन्त है। उसका मन एक ऐसे बर्तन की तरह है जिसका तला ही नहीं है। उसमें चाहे जितना भी भर लो, वह खाली ही रहता है। इस विषय में किसी ने खूब कहा है।

चाह पैसे के आने में लगी, चाह पैसे से रूपये बनाने लगी।
चाह रूपये से कोठी चुनवाने लगी, चाह कोठी में मोटर बुलाने लगी।

इंसान के पास जितना है वह उसे अल्प समझता है और यही कारण है कि वह दुःखी और असंतुष्ट रहता है। वह अपनी तृष्णाओं की पूर्ति भौतिक पदार्थों से करना चाहता है और सारा जीवन इन्हीं के पीछे व्यतीत कर देता है। इंसान की इस भौतिकवादी वृत्ति को तीन चरणों में बांटा जा सकता है। पहले चरण में इंसान भोगों के पीछे भागता है। वह अधिक से अधिक संग्रह करना चाहता है। धन, मान, सम्मान, वैभव, सुख जितना ईश्वर ने दिया है, उससे भी अधिक की चाह बनी रहती है। केवल मात्र इतना ही नहीं, साथ ही साथ यह विचार भी पनपता है कि दूसरों को मुझसे अधिक न मिले। यदि पड़ोसी के पास एक मकान है तो मेरे पास दो क्यों नहीं ? उसके पास गाडी है तो मेरे पास क्यों नहीं ? तो जहाँ तक मेरा विचार है कि आज के हर इंसान को मैं की भावना त्याग कर एक दूसरे के प्रति अपने आप को समर्पित कर देना चाहिए जिससे कि आपस में प्रेम और सद्भावना बनी रहे।

❑ **पिन्टू दीवाना**
पी-ब्लॉक, मंगोलपुरी,
नई दिल्ली-83

★★★

इतिहास 26 जनवरी का

26 जनवरी सन् 1164	बीसलदेव ने दिल्ली पर अधिकार प्राप्त किया था।
26 जनवरी सन् 1175	मुहम्मद गौरी ने मुल्तान पर विजय प्राप्त की।
26 जनवरी सन् 1299	अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर किले की नाकाबंदी की।
26 जनवरी सन् 1333	इब्ने–बतूता विश्व भ्रमण के क्रम में भारत पहुँचा था।
26 जनवरी सन् 1530	बाबर की मृत्यु हुई थी।
26 जनवरी सन् 1554	जहाँगीर का जन्म हुआ था।
26 जनवरी सन् 1778	आस्ट्रेलिया ने आज़ादी प्राप्त की थी।
26 जनवरी सन् 1853	भारत में पहली बार रेल व्यवस्था की गई थी।
26 जनवरी सन् 1858	आयकर (इंकम टैक्स) लागू हुआ था।
26 जनवरी सन् 1869	मिश्र राष्ट्र के पास स्थित दो महासागरों को मिलाने वाली विश्व प्रसिद्ध स्वेज़ नहर का निर्माण हुआ था।
26 जनवरी सन् 1882	भारत में दूरभाष सेवा बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में शुरू हुई थी।
26 जनवरी सन् 1884	बी०बी०सी० (लंदन) रेडियो की स्थापना हुई थी।
26 जनवरी सन् 1930	भारत में प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था व गोल मेज सभा हुई थी।
26 जनवरी सन् 1942	नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने 'आज़ाद हिन्द फौज' बनाई।
26 जनवरी सन् 1949	भारत का संविधान बनकर तैयार हुआ।
26 जनवरी सन् 1950	भारत का संविधान लागू हुआ था। डा० राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति बने और उत्तर प्रदेश की स्थापना हुई थी।
26 जनवरी सन् 1960	जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला संविधान लागू किया गया था।
26 जनवरी सन् 1986	विभोर गुप्ता जी इस धरती पर अवतरित हुए।

❑ प्रस्तुति : विभोर गुप्ता
सिकन्दरा, आगरा
रूचियाँ : एफ.एम. सुनना, कॉमिक पढ़ना, क्रिकेट व वीडियोगेम खेलना।

आकाशवाणी का सफर

सर्वप्रथम मुझे खुशी है कि आज यह पत्रिका आप सभी श्रोताओं के हाथों में है। सभी श्रोता भाईयो और उनकी बहनों को उनके के लिए धन्यवाद।

हम सभी लोग किसी ना किसी रूप से रेडियो से जुड़े हुए हैं चाहे वह श्रोता के तौर पर या फिर प्रस्तुतकर्त्ता के रूप में रेडियो से सम्बन्ध रखते हो। मैं आज आप सभी के समक्ष आकाशवाणी के शुरूआती दौर से लेकर आज के समय तक के बदलावों को प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है कि आप इस प्रयास को पसंद करेंगे।

दरअसल रेडियो शब्द का जन्म लैटिन भाषा के शब्द 'रेडियस' से हुआ है। रेडियस का साधारण भाषा में अर्थ (Radius) है– "एक ऐसी किरण जो आकाश में विद्युत चुम्बकीय तरंगों द्वारा फैलती है।"। रेडियो का आशय सूचनाओं के संचार हेतु संकेतों का विद्युत चुम्बकीय तरंगों के रूप में आकाश में छा जाने या किसी वांछित स्थान तक पहुँचने से है।

रेडियो तरंगे एक लाख छियासी हज़ार (186000) मील प्रति सैकेंड के वेग से आकाश में चलती हैं।

अब मैं आपको बताना चाहूँगा कि रेडियो हमारी ज़िन्दगी में किस प्रकार शामिल होती गई। 'माइकल फैराडे' 'जैम्स क्लार्क' मेक्सवेल और हेनरिक हर्टज की खोजों के आधार पर इटली के मारकेस गुगलीनो मारकोनी ने वायरलेस टेलीग्राफी की खोज 1896 में की। शब्दों के सीधे प्रसारण का श्रेय नाथन बी0 स्टब्लफील्ड को जाता है। उन्होंने अमरीका के मर्रे शहर के एक भीड भरे चौराहे पर 1892 में बिना किसी तारों की सहायता के आवाज़ का प्रसारण करने में सफलता पाई। वैसे पहला विज्ञापित प्रसारण 23 दिसम्बर 1905 को हुआ। ब्रिटेन में पहला प्रसरण ट्रांसमीटर में लगा। इसे मारकोनी वर्क्स ने चेम्सफोर्ड इसेक्स में लगाया। 1922 में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी BBC बनी। उधर 1922 अमेरिका में पिट्सबर्ग में K.D.K.A. ने व्यवसायिक प्रसारण शुरू कर दिये थे।

हमारे देश में रेडियो प्रसारण की शुरूआत कुछ शौकिया लोगों ने की। बम्बई प्रांत के तत्कालीन गर्वनर सर जार्ज लायड की फरमाइश पर "टाइम्स ऑफ इंडिया" ने डाक तार विभाग के सहयोग से संगीत का विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया। बम्बई का यह कार्यक्रम 175 km. दूर पुणे ने उन्होंने पूरी दिलचस्पी से सुना।

रेडियो क्लब बंगाल ने कलकत्ता में नवम्बर 1923 में प्रसारण प्रारम्भ किया। बॉम्बे रेडियो क्लब जून 1924 में शुरू हुआ। इसके पहले वैसे मई 1924 में मद्रास प्रेजीडेंसी रेडियो क्लब गठित हो गया था। किन्तु उसने जुलाई में प्रसारण प्रारम्भ किया।

हमारे देश में व्यवसायिक स्तर पर रेडियो प्रसारण का काम इंडियन ब्रॉडकॉस्टिंग कम्पनी (आई0बी0सी0) ने मुम्बई में 23 जुलाई 1927 से शुरू किया। 1930 में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी भारी घाटे के कारण बंद

हो गयी। सरकार ने इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस के नाम से उसे फिर शुरू किया। यह भी बमुश्किल डेढ़ साल चली। 10 अक्टूबर 1931 को उसे बंद करने की घोषणा की गई। लोगों के भारी दबाव के कारण फिर से नवम्बर 1931 में उसे फिर से शुरू करना पड़ा। इसी बीच मैसूर में मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर डा0 गोपाल स्वामी ने आकाशवाणी के नाम से एक शौकिया प्रसारण केन्द्र बनाया। अंग्रेज़ी सरकार 30 अगस्तर 1935 को लियोनेल फील्डेन को भारत में प्रसारण का कंट्रोलर नियुक्त किया। फील्डेन ने पहला प्रसारण केन्द्र 1 जनवरी 1936 को दिल्ली में स्थापित कराया।

8 जून 1936 को इंडियान स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस का नाम बदलकर All India Radio कर दिया गया। धीरे–धीरे केन्द्रों की संख्या बढकर नौ तक पहुंच गई। आजादी के बाद देश के बटवारे के साथ ही All India Radio मद्रास, लखनऊ, और तिरूचि केन्द्र भारत को मिले। पाकिस्तान का लाहौर, पेशावर, ढाका के केन्द्र सौंपे गए।

आजादी के समय हमारे देश में करीब पौने तीन लाख रेडियो सेट थे। अब उनकी संख्या बढकर लगभग 13 करोड़ हैं। आकाशवाणी के 185 केन्द्र लगभग 98% आबादी तक अपने कार्यक्रम पहुंचा रहे हैं। आज आप लोग FM Rainbow का आनंद रेडियो के इतने लम्बे सफर के बाद उठा पा रहे हैं।

❑ **प्रस्तुति : तुषार गुप्ता**
जागृति विहार, उत्तर प्रदेश

प्रार्थना

प्रार्थना वह है जिसमें केवल परमात्मा की मांग हो, धन इत्यादि सांसारिक पदार्थों की नहीं।

यदि आज हम संसार में देखें तो प्रार्थना तो सभी करते हैं। किन्तु उसमें केवल संसार के पदार्थों की मांग होती है। लोग कहते हैं कि यदि ईश्वर से नहीं मांगेंगे तो और किससे माँगेंगे ? आखिर वह हमारा परम पिता है। जब माँगने की बात आती है तो हम कहते हैं कि यह तो हमारा अधिकार है। अधिकारों की याद तो बहुत जल्दी आ गई, किन्तु क्या आप जानते हैं कि अधिकार कर्तव्य के साथ जुड़े होते हैं। हमारा उस परम पिता के प्रति जो कर्तव्य है। क्या हमें कभी उसकी याद आई ? जहाँ कर्त्तव्यों की पूर्ति की जाती है, वहाँ अधिकार तो अपने आप प्राप्त हो जाते हैं। यदि पिता पुत्र से एक गिलास पानी माँगे और बेटा पानी पिलाना तो दूर दस बातें और सुना दें। कहना न माने और जब जायदाद में हिस्से की बात आए, तो झट से हाथ फैला दे। ऐसे में पिता क्या कहेगा–कैसा हिस्सा, कैसा अधिकार ? इसी प्रकार आज हम ईश्वर से माँगने में तो कोताही नहीं बरतते, माँगना अपना अधिकार मान लेते हैं ? किन्तु उसके प्रति जो हमारा कर्त्तव्य बनता है उसे जानने की कोशिश कभी नहीं करते।

किसी से क्या माँगू, तुझी से माँगता हूँ,
तुझी से क्या माँगू, तुझी को माँगता हूँ।

❑ **पिन्टू दीवाना**
पी-ब्लॉक, मंगोलपुरी, नई दिल्ली-83

एक मुलाकात - अतहर सईद से

❑ वार्ताकार : मुजाहिद ख़ान, सिराज मिथुन

प्र०– आपका परिचय

उ०– मेरा नाम है अतहर सईद 'ज़िया'।
मेरे पिता उर्दू अदब के मायानाज़ शायर थे उनका नाम था ज़िया सईद।

प्र०– आपका जन्म दिवस

उ०– 2 अक्टूबर

प्र०– एफ. एम. पर कब से काम कर रहे हैं।

उ०– मैं एफ. एम. पर १९९४ से काम कर रहा हूँ। एफ. एम. गोल्ड में शुरूआत की। विदेशी रेडियो दुबई रेडियो, सिंगापुर रेडियो से जुड़ा। शैक्षिक चैनल ज्ञानवाणी में भी काम किया।

प्र०– आपकी शिक्षा

उ०– मैंने L.L.B. और उर्दू में अदीब किया। और हिन्दी साहित्य एवं शिक्षा विषारद, अयुर्वेद रत्न।

प्र०– आपके द्वारा किए गए कार्यक्रम

उ०– हैलो एफ.एम., हॉट लाइन, गीत आपके नाम से, गीत मेरे नाम से, शेर–ओ–नग़मा।

प्र०– पसंदीदा कार्यक्रम

उ०– शेर–ओ–नग़मा

प्र०– आपके शौक

उ०– नेचर लवर होने के नाते मुझे घूमना पसंद है। चाहे वो पहाड़ हो, चाहे वो विदेशी मुमालिक मुझे गाना पसंद है। अच्छी किताबें पढ़ना।

प्र०– क्या बुरा लगता है ?

उ०– दोहरे चेहरे वाले लोग, नफ़रत फैलाने वाले और धोखा देने वाले लोग बुरे लगते हैं।

प्र०– ईश्वर में यकीन है।

उ०– भले ही पाँच वक़्त की नमाज़ न पढ़ता हूँ लेकिन ईश्वर में बेहद विश्वास है।

प्र०– दोस्ती आपकी नज़र में ?

उ०– भरोसा

प्र०– क्या जीतना चाहते हैं

उ०– दिल जीतना चाहता हूँ, और दिल की बात कहना चाहता हूँ।

प्र०– आपकी प्रेरणा

उ०– बचपन में घर में एक बड़ा रेडियो था जब उसमें आवाज़ निकलती थी तो सोचता था कि उसके अंदर आदमी बैठे हैं वही रेडियो मेरी प्रेरणा है। मेरी छोटी बहन शाहीन ने मेरे लिए आगे बढने में भरपूर सहयोग दिया वो भी मेरी प्रेरणा हैं।

प्र०– जीवन का उद्देश्य

उ०– शांति सुकून

प्र०– आपका संदेश

उ०– प्यार बांटते रहें Life is to short to live or love

प्र०– विशेष उपलब्धि ?

उ०– राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए मिला, मुख अभिनय में गोल्ड मेडल।

* * *

म्यूज़िक, मस्ती, धमाका, बिन्दास

F.M. Rainbow (रेनबो)

F.M. I यानि F.M. रेनबो जो कि सबसे पहला F.M. स्टेशन माना जा सकता है। दोस्तों यूं तो आज F.M. ही F.M. सुनाई पड़ते हैं। जैसे ही हम रेडियो सेट की सुई घुमायेंगे F.M. सुनाई देगा, लेकिन क्वालिटी किसी F.M. पर नहीं मिलेगी। F.M. रेनबो पर शुरूआत से ही क्वालिटी का भंडार रहा है। पत्र लिखने वालों के लिए तो हर तरह का मनोरंजन का साधन रहा है F.M. रेनबो। एक से बढ़कर एक प्रोग्राम, पत्र वाले श्रोता पत्रों के साथ–साथ गानें, फोन पर बातें कर सकते हैं। जिन्हें केवल गाने सुनने का शौक है उनके लिए भी भरपूर मनोरंजन का साधन है F.M. रेनबो।

दोस्तो F.M. रेनबो हमारा पहला प्यार है हमें इसे कभी नहीं भुलाना है। वैरायटी यानि क्वालिटी का दूसरा नाम है F.M. रेनबो।

बबलू कश्यप
V-64/73,
प्रेम नगर II, नई दिल्ली

हिन्दी फिल्मों में डबल रोल

बॉलीवुड की फिल्मों में डबल रोल का सिलसिला शायद सिनेमा की शुरूआत के जन्म से ही चला आ रहा है। लगभग 88 साल पहले 1917 में भारतीय सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के की एक मूक फिल्म 'लंकादहन' में एक पुरूष कलाकार ए० सालुंके ने पर्दे पर राम और सीता दोनों की भूमिकाएँ निभाकर डबल रोल की अनूठी परंपरा को जन्म दिया। बोलती फिल्मों के दौर में सरस्वती सिनेटोन द्वारा निर्मित तथा मास्टर विट्ठल द्वारा निर्देशित फिल्म 'आवारा शहज़ादा' (1933) में शाहू मोडक ने सही अर्थों में हिन्दी सिनेमा इतिहास का पहला डबल रोल निभाया। मूक सिनेमा के युग में केसर पिक्चर्स ने 1932 में 'कैलास' के नाम से एक फिल्म बनाई थी जिसमें ललिता पंवार ने नायिका, खलनायिका और माँ की तिहरी भूमिका निभाई। ललिता पवार ही इसकी निर्मात्री थी।

उपरोक्त फिल्मों के बाद ज्यों डबल रोल का दौर शुरू हुआ वो आज तक चल रहा है। कुछ ऐसी ही फिल्मों का विवरण मैं यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूँ। कुछ फिल्मों में तिहरी या अधिक भूमिकाएँ भी हैं।

फिल्म	कलाकार	फिल्म	कलाकार
विश्वमोहिनी	गौहर मामाजी वाला	दास्तान	दिलीप कुमार
गीता	चंद्रमोहन	दो कलियाँ	बेबी सोनिया
सुरंग	चंद्रशेखर	राजा और रंक	महेश कुमार
अफसाना	अशोक कुमार	हमजोली	महमूद
चायना टाउन	शम्मी कपूर	सच्चा झूठा	राजेश खन्ना
हम दोनों	देव आनंद	आराधना	राजेश खन्ना
वो कौन थी	साधना	हमशक्ल	राजेश खन्ना
मेरा साया	साधना	उस्ताद पेड्रो	जूनियर महमूद
अनिता	साधना	शर्मिली	राखी
ममता	सुचित्रा सेन	रॉकी मेरा नाम	संजीव कुमार
रात और दिन	नरगिस	नया दिन नई रात	संजीव कुमार
राम और श्याम	दिलीप कुमार	विश्वासघात	संजीव कुमार

फिल्म	कलाकार	फिल्म	कलाकार
तूफान और बिजली	जाहिरा	किशन कन्हैया	अनिल कपूर
कर्मयोगी	राजकुमार	संगीत	माधुरी दीक्षित
अदालत	अमिताभ बच्चन	जयकिशन	अक्षय कुमार
सत्ते पर सत्ता	अमिताभ बच्चन	सबसे बड़ा खिलाड़ी	अक्षय कुमार
आखिरी रास्ता	अमिताभ बच्चन	खिलाडी 420	अक्षय कुमार
डॉन	अमिताभ बच्चन	गोपी किशन	सुनील शेट्टी
कस्में वादे	अमिताभ बच्चन	दुश्मन	काजोल
दि ग्रेट गैम्बलर	अमिताभ बच्चन	कुछ खट्टी, कुछ मीठी	काजोल
तूफान	अमिताभ बच्चन	शाहरूख ख़ान	डुप्लीकेट
लाल बादशाह	अमिताभ बच्चन	दीवाने	अजय देवगन
बडे मियाँ छोटे मियाँ	अमिताभ बच्चन, गोविंदा	ये रास्तें हैं प्यार के	अजय देवगन
सूर्यवंशम	अमिताभ बच्चन	जिगरी दोस्त	जीतेन्द्र
अप्पू राजा	कमल हसन	जस्टिस चौधरी	जीतेन्द्र
हिन्दुस्तानी	कमल हसन	मिलाप	शत्रुघ्न सिन्हा
अभय	कमल हसन	चालबाज़	श्री देवी
आंखें	गोविन्दा, चंकी, कादर ख़ान	काली घटा	रेखा
रंगबाज़	मिथुन चक्रवर्ती	परम धरम	मिथुन चक्रवर्ती

यूं तो और भी अनेक फिल्में शेष हैं किन्तु स्थानाभाव के कारण मैं सिर्फ शेक्सपीयर के चर्चित नाटक 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' पर आधारित चार फिल्मों का ज़िक्र अवश्य करूँगा। भूलभूलैया में घोरी और दीक्षित, हंसते रहना में हीरा सावंत और मुकरी, दो दुनी चार में किशोर कुमार और असित सेन तथा अंगूर में संजीव कुमार व देवेन वर्मा ने एक ही शक्लो सूरत के दो मालिकों व दो नौकरों की भूमिका निभाई थी।

आज से आप भी सड़क पर चलते या फिर कहीं भी अपने हमशक्ल को ढूंढने की कोशिश ज़रूर करियेगा।

❑ **प्रस्तुति : तपन गुप्ता**
कस्बा तेवड़ा, मुजफ़्फर नगर

इक दिन, बादलों के चिलमन को हटाकर खुदा ने देखा
ज़मीं से कोई दौड़ा चला आ रहा है
गौर से देखने पर पता चला, यह तो सुख की देवी ज़मी छोड़े चली आ रही है।
खुदा ने पूछा – क्यों भाई, क्या हुआ ? ज़मी को छोड़ें क्यों चली आ रही हो ?
देवी बोली – प्रभु उस ज़मीं पर बंदे ने जब से बंदगी छोड़ी, दुखासुर वहाँ आ बसा है।
खुदा ने कहा – मेरी ज़मी पर यह अत्याचार, मेरे मानव का हो रहा महाविनाश।
नहीं यह मैं होते देख नहीं सकता, इसके लिए मैं कुछ भी कर सकता।
देवी बोली – ऐ खुदा, वह हैवान तो ज़िन्दगियाँ निगलता जा रहा है,
इन्सां का सर्वनाश ही सर्वनाश किए जा रहा है
ख़्वाहिश रखकर मेरी, वह हर इक काम करते हैं
पर जाने क्यों मेरी जगह दुःख का ही आह्वान करते हैं।
खुदा बोला – मैंने तो उन्हें समझाया हर पल, दुःख के काँटों में मत उलझो,
बिखेर रहा मैं सुख की कलियाँ, इनको आगे बढ़कर तुम चुन लो।
देवी हताश हो बोली – ऐ खुदा ! अब तू ही अपने बंदे को बंदगी की राह दिखा।
वास हो मेरा हर इक ज़र्रे में ऐसी तो कोई युक्ति बता।
खुदा ने कहा – तू चिंता मत कर, ऐ देवी, बंदे को बंदगी की राह दिखाने,
आऊँगा मैं खुद ज़मीं पर मुरझाये ये फूल खिलाने।
देवी बोली – या अल्लाह ! तू हमको अपनी ऐसी कोई पहचान बता,
ढूँढ़ सकें हम ज़मीं पर तुझको, अपना कोई पता तो बता।
तब खुदा ने यह ऐलान किया
आऊँगा मैं धरकर सतगुरु का रूप, इस ज़मीं पर
सबके जिगर से दूर करूँगा, राग, द्वेष, रोष और नफरत।
सत्य की स्थापना कर, मैं झूठ को मिटा दूँगा,
बंदे को फिर से बंदगी का पाठ मैं सिखा दूँगा
अपनी ज़मीं पर इक बार फिर मैं सुख का राज्य ला दूँगा
ब्रह्मज्ञान की दीक्षा दे, इंसा को देव बना दूँगा,
दावा है मेरा ये इस धरा पर इक क्रांति मैं ला दूँगा।

❑ पिन्टू दीवाना
पी-ब्लॉक, मंगोलपुरी,
नई दिल्ली-83

ग़ज़ल

पायाब साहिलों को पुकारा न जायेगा
प्यासे रहेंगे ज़रफ़ को हारा न जायेगा
आँखें तुम्हारी झील हो और डूब जाऊँ मैं
अब ऐसी ख़्वाहिशों को उभारा न जायेगा
क्या इस अंधेरी रात की कोई सहर नहीं
ज़ालिम का क्या है कभी भी उजारा न जायेगा
हालात के दबाव से साबित यही हुआ
ख़ामोश ज़िन्दगी को गुज़ारा न जायेगा
तुम हम सफ़र हुए तो सलीका भी बख़्श दो
हम से तो ज़िन्दगी को संवारा न जायेगा
तुम साथ छोड़ दोगे तो हम से तमाम उम्र
पेचीदा रास्तो को संवारा न जायेगा
सहमी हुई सिसकती हुई ज़िन्दगी 'निशा'
हर वक्त पुर–सुकून तो गुज़ारा न जायेगा

नसीम निशा
सी–216, यमुना विहार, दिल्ली–53

अश्कों में बहार आई, हर ग़म में निखार आया
इस तरह भी गुलशन में एक दौर–ए–बहार आया
इस दर्ज़ा तेरी फुरकत कुछ हम पे गिराँ गुज़री
अब तक भी किसी सूरत न दिल को क़रार आया
आता न तू खुद लेकिन आवाज़ तो आ जाती
कोई तुझे 'आशी' हर सिम्त पुकार आया
खुशियों की तमन्ना थी ग़म मिल गये फिर देखो
ग़म खाना–ए–हस्ती में उफ़ किस के क़रार आया
आ देख तो ले आशी कहीं से ज़रा आशी
बहते हुए अश्क़ों का लेकर कोई हार आया
क्यों कह दिया आंखों को रोने के लिए तूने
'नुज़हत' पे तुझे अपनी कुछ भी तो न प्यार आया।

नुज़हत ज़ाहिद
काँधला (मुजफ़्फ़र नगर)

ख़ामोशी

★ ख़ामोशी बेहतरीन भाषण है, अगर बोलना है तो कम से कम बोलो — महात्मा गांधी

★ जहाँ नदी गहरी होती है वहाँ पानी का बहाव निहायत ख़ामोश होता है। — शेक्सपीयर

★ ख़ामोशी नींद की तरह है क्योंकि वो ज्ञान को ताज़ा करती है। — बेकन

★ कम पढ़ना और ज़्यादा सोचना, कम बोलना और ज़्यादा सुनना यही अक्लमंद बनने का तरीका है। — रविन्द्र नाथ टैगोर

★ जितने कम शब्द होंगे दुआ उतनी ही ज़्यादा बेहतर होगी। — मार्टिन लूथर किंग

★ ख़ामोशी हमारे मुक़द्दस ख़्यालात की इबादतगाह है — एस.जे. हेल

प्रस्तुति : जॉनी कश्यप
विपिन कश्यप

कहानी

"चढ़ती उतरती धूप"

सीमा पार से नसीमा क़ाज़ी का तोहफ़ा, ख़ास हमारी आवाज़ के लिए

"सुनो ! अमन उठे तो उससे कहना कि भाई साहब के पास साइट पर चला जाए एग्ज़ाम ख़त्म हो गये हैं, सारे दिन घर में बैठा रेडियो सुनता रहता है। कुछ काम ही सीख ले ...... मियाँ साहब अपनी पत्नी को कुछ निर्देश देकर घर से बाहर निकल गये।

अमन अभी सोकर उठा था। रात भर की गर्मी से तबीयत में आलस और उलझन पैदा हो रही थी। डैडी के शब्द कान में पड़े तो तबीयत और ज़्यादा ख़राब हो गई – "ऊहं, यदि खुद भी अंकल की तरह ठेकेदारी कर लेते हो आज हमारे घर में भी एयर कंडीशन लगा होता–फ्रिज में कोल्ड ड्रिंक्स भरे हो, खुद तो जनाब क़ौम के बच्चों को सुधााने के लिए लैक्चरर बन गए यह नहीं सोचा कि इतनी कम सेलरी में अपने बच्चों का क्या होगा और अब इस तपती धूप में मैं इनके भाई साहब के साथ ठेकेदारी करने चला जाऊँ। बहुत खूब मेरे आराम का ख़्याल कब है...........".

अमन बड़बड़ाता हुआ गुसल खाने में घुस गया। नल खोलते ही उबलता हुआ पानी सिर पर पड़ा तो उफ्फ़ कहकर बिना नहाए ही कपड़े बदल लिये। मुंह पर छींटा मारा और बाहर आ गया। अंदर आकर कमरे में इधर–उधर देखा हमेशा की तरह बिजली गायब थी। अमन ने रेडियो ऑन किया। मम्मी ने फिर आवाज़ दी "बेटे ! नाश्ता कर ले..........".

"बस करें मुझे फिर क्या करना है लेकिन अच्छी तरह सुन लें आप भी मैं इस चिलचिलाती धूप में अंकल के साथ बिल्डिंग्स बनाने का काम नहीं कर सकता"।

रात भर गर्मी और मच्छरों ने सोने नहीं दिया और अब आग बरसाती गर्मी में साईट पर चला जाऊँ क्या देंगे वो मुझे तर्जुबा। नहीं चाहिये मुझे तर्जुबा–वर्जुबा। अंकल कितने पैसे वाले हैं, तोहफ़े में एक फ्रिज़ ही दे दें"।

मम्मी ने अमन को समझाया "रात की गर्मी से तेरा दिमाग ठीक नहीं है हालांकि तू जानता है तेरे डेडी किसी से कुछ नहीं लेते।

और फिर तेरे अंकल का विचार है कि अपनी बेटी की शादी तुझ से कर दें......" दहेज में फ्रिज़, एयर कण्डीशन सब ही कुछ आ जायेगा।" "क्या ? क्या ? वो भेंगी लडकी मेरे लिये थोपना चाहते हैं, जब ही तो मुझ पर इतनी इनायतें हो रही हैं, मुझे सब पता है यह रिश्तेदार कितने मतलबी हैं, मगर मैं भी इतना भोला नहीं हूँ कि इनकी बातों में आ जाऊँ......" ज़ीनत जैसी जाहिल, बदसूरत लड़की से शादी करने से तो बेहतर है कि मैं खुदकुशी कर लूँ ...."। अमन ने झुंझलाहट में सिर खुजाया। अमन परेशानी के आलम में बडबड़ा रहा था" यानी मम्मी को भी खूबसूरत बहू की ख़्वाहिश नहीं है ... बिला वजह दहेज के लालच में मुझे कुर्बानी का बकरा बनाया जा रहा है"।

अमन ने नाश्ते की प्लेटें एक तरफ फेंकी और अपने कमरे में आ गया।

अजीब मुसीबत है एग्ज़ाम खत्म हो गये तो कोई काम ही नहीं है। दोस्तो से अब शाम को ही मुलाकात हो सकती है। इस वक्त गर्म हवा के झक्कड़ चल रहे हैं। अभी सुबह के नौ बजे हैं और आंगन धूप से भर गया है। मालूम नहीं यह गर्मी कहाँ जाकर रूकेगी। अमन ने फिर से रेडियो ऑन किया ख़तों का प्रोग्राम आ रहा था, उसने ध्यान से सुनना शुरू किया।

"भैया, भैया ! मम्मी कह रही हैं छत पर जाकर कबूतरों को खोल कर उन्हें पानी दे आओ ... डैडी उन्हें खोलना भूल गए आज ....”। शन्नो ने बड़ी मुलायम आवाज़ में कहा तो अमन चौक गया।

"मैं ! ऐसी तपती दोपहर में छत पर जाऊँ ? नज़र नहीं आता अंगारे बरस रहे होंगे मैं क्या फ़ालतू हूँ, निकल जा यहाँ से ...."।

उसने गुस्से में शन्नो को डांट दिया। फिर कुछ ख़्याल आया "अच्छा बे ज़बान परिन्दों को खोल आता हूँ और नहीं तो वही खुश हो जाएं.."।

अमन ने बेपरवाही से पानी का बर्तन उठाया और ज़ीना फलांग कर जो छत पर कदम रखा तो ऐसा लगा कि आग की भट्टी में कदम रख दिया हो। सूरज की तेज़ किरणें मानो जिस्म में घुसी जा रही थीं। उसने बौखला कर कबूतरों का काबुक खोला और पानी का बर्तन उनके सामने रखा ही था कि सामने की छत पर कपड़े झटकने की आवाज़ सुनकर अचानक सूरज की मौजूदगी में यह हसीन महताब कैसा ! लगता है सूरज की गर्मी भी इस चाँद की किरण को नहीं रोक सकी.... वाह क्या हसीन मूरत है एक गाना कुछ यूँ था – "

चाँद सी गौरी एक महीना
आँख में काजल मुँह पे पसीना
या अल्लाह या अल्लाह दिल ले गई।

लेकिन अब तक इस हसीन नगीने पर नज़र क्यों नहीं पड़ी .... हाँ याद आया यह मिर्ज़ा साहब का ही तो घर है। इनके तो बच्चे ही नहीं हैं।

यह परी क्या आसमान से उतरी है।

अमन गर्मी–कबूतर सब कुछ भूल कर सामने छत पर अलगनी पर कपड़े डालती हुई इस हसीन मूर्ति को तकने लगा। अचानक इस हसीना की नज़र भी अमन पर पड़ गई। तो उसने सटपटा कर कपड़ों की बाल्टी उठाई और खट–खट करती ज़ीने से नीचे उतर गई। अमन इस मोहनी सूरत की एक झलक देखने के लिए कुछ देर पसीने में तर–बतर खड़ा रहा कि वह दोबारा आये मगर वो दिलरूबा फिर प्रकट न हुई। अमन ने बैचेन निगाहों से इधर–उधर देखा और नीचे आ गया।

नीचे कमरे में आकर वही मासूम सरापा नूर, परी पैकर चेहरा निगाहों में गर्दिश करता रहा। उसने खोये–खोये से अंदाज़ में शन्नो को आवाज़ दी। शन्नो बड़बड़ा कर भागती हुई आई और भैया की मुस्कुराती सूरत देख अजीब परेशानी में पड़ गई–" क्या बात है भैया ?"।

"अरे कुछ नहीं एक गिलास ठंडा पानी ला दे और देख मम्मी से कह दे अब मैं रोज़ इसी वक्त कबूतरों को पानी दिया करूँगा... डैडी जो सुबह पानी रखते हैं वो गर्म हो जाता है मैं उन्हें ठडा पानी रख दिया करूंगा–बेचारे बे ज़बान कितने भोले हैं और वो कितनी हसीन मुजस्सम थी ना मालूम अब कब नज़र आए"

भैया की बेतुकी बातें सुनकर शन्नो दौड़ती हुई किचन में आई "मम्मी जी जरा नींबू पानी बना दो भैया के सर पर शायद धूप लग गई .... बहकी–बहकी बातें कर रहे हैं.........."।

"हट लड़की ऐसा क्या मोम का बना हुआ है जो पिघल जायेगा" मम्मी ने कुछ ध्यान नहीं दिया।

फिर अंदर से आवाज़ आई – "शन्नो .... शन्नो । आई भैया" शन्नो भागती हुई कमरे में आ गई।

"शन्नो तू अकेले घबराती नहीं है, मेरा मतलब है तेरी कोई सहेली नहीं है"। अमन ने बात कुरेदने की कोशिश की। "नहीं भैया यहाँ मेरी कोई हम उम्र लड़की ही नहीं है..." "वो मिर्ज़ा साहब की लडकी भी तेरी दोस्त नहीं है......."? अमन ने बात बदली।

"मिर्ज़ा साहब की लड़की उनके तो बच्चे ही नहीं हैं........ हाँ ! आज कल इनकी बहन और भांजी मुजफ़्फ़र नगर से आए हुए हैं, वो अपनी भांजी के लिए रिश्ते देख रहे हैं...... डैडी से भी ज़िक्र किया था ......"। शन्नो ने तफ़सील बयान की।

"क्या ज़िक्र किया था डैडी से........" ?

"यही कि कोई अच्छा लड़का हो तो बतायें ......"

"अच्छा तू जाकर काम कर ..... ऊहँ ! डैडी की नज़र में मैं अच्छा लड़का नहीं था, मगर मेरा क्या ज़िक्र मुझे तो अंकल के कदमों पर भेंट चढ़ाना था, दहेज के लालच में ..... मगर मैं शादी करूँगा तो उसी लाला रुख़ से वर्ना नहीं.....।

शाम से डैडी का बिस्तर छत पर लग जाता था। वो हुक्का लेकर वहीं चले जाते थे। अमन चाहता था शाम में एक बार और उस परी पैकर का नज़ारा कर ले मगर डैडी के सामने हिम्मत न पड़ती थी। आज कल अमन काफ़ी रोमांटिक हो गया था रात भर अमन तारों को गिनकर सुबह होने का इंतज़ार करता रहा उसने करवट बदल कर सोचा गर्मी का भी अपना एक मज़ा है सर्दी में वो बात कहाँ जो गर्मी में है। बार–बार उसी हसीन मस्त का चेहरा ख़्यालों में आ जाता उसके गुलाबी गालों पर नन्हीं–नन्हीं पसीने की बूंदें मोतियों की मानिंद चमकती दिखाई देतीं। .

नींद कोसों दूर थी बार–बार लबों पर एक शेर मचल रहा था –

जब तसव्वुर मेरा चुपके से तुझे छू आये
मुद्दतों मेरे बदन से तेरी खूश्बू आये

सुबह आँख खुली तो डैडी की गुस्से भरी आवाज़ सुनाई पड़ी "साहब ज़ादे से कह देना फुरसत मिल जाए तो आज भाई साहब के साथ साइट पर चला जाए"।

अमन ने डैडी के गुस्से को नज़र अंदाज करके सीधे नल के गर्म पानी से ही नहाकर कपड़े बदल लिये।

बाहर आया तो मम्मी ने डरते–डरते नाश्ता सामने रखा और डैडी का फ़रमान भी सुना डाला।

अमन ने मुस्कु कर जवाब दिया – "चले जायेंगे भई चले जायेंगे–ज़रा कबूतरों को पानी तो डाल आएँ"

"मगर तेरे डैडी अभी पानी डाल कर आये हैं" मम्मी ने बताया। तुम्हें क्या मालूम अब तक पानी गर्म हो गया होगा रखना है तो परिन्दों को ढंग से रखो...."। अमन ने पानी का बर्तन उठाया और ज़ीना चढ़ गया।

मम्मी हैरतज़दा आँखों से अमन के अन्दर आये बदलाव को देख रही थी। छत पर इस वक्त भी सूरज अपने कहर और जलाल के साथ चमक रहा था। मगर अमन के इश्क में इससे भी ज़्यादा गर्मी थी। उसने अपनी बेताब निगाहें इधर–उधर दौड़ाई मगर मिर्ज़ा साहब की छत सूनी पड़ी थी।

अमन कबूतरों को दाना डालता रहा मगर निगाहें सामने ही थी कि इतने में ..... ज़ीने पर किसी के नाजुक नाज़ुक कदमों की धमक सुनाई दी। पसीने में सरोबार अमन का दिल धड़कना भूल गया। इसकी निगाहें फटी की फटी रह गईं। वो गल अंदाम अपनी मरमरी बांहों में कपड़ों की बाल्टी लिए बे निजाज़ी से छत पर प्रकट हुई।

अचानक अमन पर नज़र पड़ी तो ठिठक गई। गुलाब सा चेहरा गर्मी और शर्म से और गुलाबी हो गया।

अमन ने बेकरार होकर इशारे से सलाम किया। इस रूप की रानी ने इधर–उधर देखा और अपने हिनाई हाथ से सलाम का जवाब दिया। अमन की दिल की दुनिया उलट पुलट हो गई। समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या कहा जाये। कि इतने में उसने कपड़े अलगनी पर डाल कर बाल्टी उठा ली। अमन की तरफ कुछ शर्म कुछ तबस्सुम के फूल बरसाये और नीचे चली गई।

अमन नीचे आया तो मम्मी ने घबरा कर कहा "देख तो सही पसीने से क्या हाल हो गया मेरे बच्चे का, रोज़ कबूतरों को पानी डालने न जाया करो..."।

"अरे नहीं मम्मी ! इंसान को गर्मी बर्दाश्त करने की आदत डालनी चाहिये, अभी तो मुझे अंकल की तरफ़ भी जाना है, और फिर गर्मी के दिन तो बड़े सुनहरे होते हैं मम्मी जी" मम्मी अचम्भे में रह गई उन्हें हैरत थी बेटे की तब्दीली पर। अब तो न गर्मी की चिंताथी न लू से शिकायत रोज़ उस हसीना का दीदार हो जाता था। और अंकल के साथ ठेकेदारी का काम भी खूब चल रहा था। डैडी भी खुश थे कि बेटा खुद ही सुधर गया था।

अमन अब सब की नज़रें बचाकर छोटे–छोटे लव लैटर भी इस हसीना की तरफ फेंकने शुरू कर दिये थे। वो सब वसूल करती रही मगर जवाब किसी का नहीं दिया अमन ने सोचा कि आँख मिचौली का खेल कब तक चलेगा, अब मम्मी को सब कुछ बता देना चाहिये। मगर पहले उस हसीना की मर्ज़ी मालूम कर ली जाए। रात को बैठ कर उसने एफ ख़त लिखा कि "जानेमन ! अब तो तुम्हारे बिना ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल है मैं मम्मी को सब कुछ बता रहा हूँ वो मेरा दिल नहीं तोडेंगी। और दो चार दिन में तुम्हारे यहाँ रिश्ता आयेंगी, बस तुम सर के इशारे से इक़रार कर देना, तुम्हारा बेक़रार आशिक– अमन "

सुबह लैटर हाथ में लेकर अमन ऊपर जाने वाला था। तभी मालूम हुआ डैडी ने आज छुट्टी ली है।

और वो कबूतरों के काबुक साफ़ कर रहे थे। अमन को आज की नाकामी पर बहुत गुस्सा आया। लेकिन फिर सोचा कि चलो लैटर कल ही दे देंगे। अमन का दिल काम में भी नहीं लगा। और वो घर रवाना हो गया। घर के पास पहुंचा तो मिर्ज़ा साहब के घर से बाहर तांगा खड़ा देख कर सटपटा गया।

तांगे पर सामान रखा जा रहा था। और शन्नो दरवाज़े पर खड़ी सारी कार्रवाई देख रही थी अमन घर के अंदर दाख़िल हुआ।

शन्नो खुद ही बोली "भैया ! मिर्ज़ा साहब की बहन और भांजी वापस मुज़फ़्फ़र नगर जा रहे है।।

मिर्ज़ा साहब की भांजी के लिए किसी फौजी कप्तान का रिश्ता आया है। दोनों माँ–बेटियाँ खुशी–खुशी वापस जा रही हैं।" अमन ने साइकिल एक तरफ फेंकी कमरे में आकर पंखा ऑन किया और जेब से लव–लेटर निकाला और टुकड़े–टुकड़े कर दिया फिर आराम से जूते उतारते हुए बड़बड़ाने लगा "साली, बेवफ़ा ! इतने दिन से मुझे उल्लू बनाती रही और जैसे ही कप्तान का रिश्ता आया मुझे मक्खी की तरह निकाल दिया, मैं पागल कड़ी तपती दोहपर में उस पर मुहब्बत के फूल निछावर करता रहा और वो बिना बताए रवाना हो गई .. सही है ज़माना बड़ा मतलब परस्त है। ख़ैर खाक डालो इस कहानी पर। सच्ची बात तो ये है कि अंकल की बेटी ज़ीनत कौन सी बुरी है। आँखें भैंगी हैं तो क्या हुआ ... इससे क्या फ़र्क पड़ता है। नज़र तो आता है ना .... और फिर सबसे बडी बात तो ये है कि दहेज़ में एयर कण्डीशन लेकर आयेगी बस यही आज कल मौहब्बत है। मैं कल ही मम्मी से बात करता हूँ कि अगली गर्मियाँ आने से पहले शादी हो जानी चाहिये। ये गर्मी तो जैसे–तैसे गुज़र गई। लेकिन ये याद रहेगा कि –

एक धूप थी जो साथ गई आफ़ताब के

❑ **नसीमा काज़ी**
पाकिस्तान

इंसान के जीवन में शब्द 'द' का महत्त्व

- जब पैदा होता तो माँ का 'दूध' पीता है।
- बड़ा होकर 'दौलत' जमा करनी शुरू करता है।
- जीवन में अनगिनत लोगों से 'दोस्ती' करता है कभी 'दुश्मनी'।
- बड़े अरमान से 'दुल्हा' बनता है।
- धूम–धाम से 'दुल्हन' लाता है
- यार–दोस्त 'दावत' खाते हैं।
- फिर अपनी खुद गर्ज़ी के लिये जाने कितने लोगों का 'दिल' 'दुखाता' है।
- 'दिमाग़' में टेंशन पैदा करता है
- अन्तिम क्षणों में 'दवा' भी और 'दुआ' करता है।
- और फिर मनों मिट्टी तले 'दफ़ना' दिया जाता है।

प्रस्तुति : आमिर कुरैशी
पुरकाज़ी–मुजफ़्फर नगर

एक मुलाकात अर्जुमन्द अली ख़ान से

❑ वार्ताकार : बबलू कश्यप
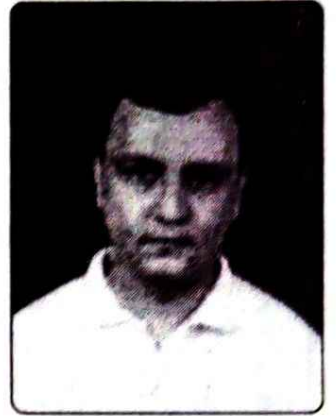
प्र०— सबसे पहले आदाब कबूल फरमायें एवं अपना परिचय दें।

उ०— आदाब बबलू भाई, मेरा नाम अर्जुमन्द अली ख़ान है।

प्र०— अपनी जन्मतिथि हमें बतायें ?

उ०— 8 फरवरी सन् 1974

प्र०— शिक्षा आपने कहाँ तक प्राप्त की है ?

उ०— मैंने बी०कॉम किया है ज़ाकिर हुसैन कॉलेज से। मैंने सेल्स एण्ड मार्केटिंग में डिप्लोमा भी किया है।

प्र०— एफ.एम. रेडियो में कब से काम कर रहे हैं ?

उ०— 2001 से काम कर रहा हूँ। १ वर्ष कोर्स करने के बाद सोचा तो ये था कि किसी बैंक में नौकरी करूँगा। लेकिन रेडियो से जुड़ना मुझे एक तरह से विरासत में मिला क्योंकि मेरे पिता ज़ाहिद अली ३० वर्षों से आकाशवाणी से जुडे हुए हैं।

प्र०— पहला प्रोग्राम कौन सा किया था ?

उ०— एफ.एम. में पहला प्रोग्राम मैंने थीम ट्रैक किया था। थीम थी 'इन्तज़ार'।

प्र०— एफ. एम. पर आपने कौन–कौन से प्रोग्राम्स किये हैं ?

उ०— बहुत अलग–अलग प्रोग्राम्स किये हैं और इसका श्रेय हमारी हैड ऋतुराजपूत जी को जाता है कि उन्होंने मुझे अच्छे–अच्छे प्रोग्राम करने का मौका दिया। थीम ट्रैक, पो० बॉक्स 503, दिल से, कुछ खट्टी–कुछ मीठी, हॉट लाइन, जीरो ऑर शो, ज़िन्दगी के रंग कई रे, रेम्बो रोड शो, कलाकार कैसे–कैसे और वर्तमान में मैं लम्हा–लम्हा ज़िन्दगी करता हूँ।

प्र०— सबसे पसन्दीदा प्रोग्राम कौन सा लगता है ?

उ०— 'लम्हा–लम्हा ज़िन्दगी' क्योंकि यह अब जीवन का हिस्सा बन गया है। रविवार को अपने श्रोताओं से बात न हो तो अधूरा सा लगता है।

प्र०— आपके शौक क्या–क्या हैं ?

उ०— सबसे बड़े शौक तो रेडियो और टी वी रेडियो सुनता बहुत हूँ, टी वी देखता बहुत हूँ और दोनों के लिए काम भी करता हूँ। किताबों का शौक है, हाँ क्रिकेट का कुछ ज़्यादा दीवाना हूँ। यदि मुझे इस समय भी बैट व गेंद दिख जाये तो मैं अभी भी खेल सकता हूँ।

प्र०— ईश्वर में यकीन रखते हैं ?

उ०— बिल्कुल, क्योंकि जितना कुछ मेरी मेहनत से मुझे मिला है सब ऊपर वाले के करम से मिला है।

प्र०— दोस्ती आपकी नज़र में क्या है ?

उ०— दोस्ती करना आसान है निभाना मुश्किल है। दोस्ती अपने आप हो जाती है, व्यक्ति मिला, बातें हुई दोस्ती हो गई, यह कोई सोची समझी चीज़ नहीं होती। बस हो जाती है।

प्र०— क्या जीतना चाहते हैं ?

उ०— (हंसते हुए) आप सब श्रोताओं का दिल।

प्र०— आपके प्रेरणा स्रोत कौन हैं ?

उ०— मेरे प्रेरणा स्रोत आस–पास के वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ताला ने कुछ अधूरा बनाया है मतलब जैसे किसी व्यक्ति के अंग नहीं है और इसके बावजूद वे अपनी रोटी रोज़ी कमा रहे हैं जहाँ मैं रहता हूँ वहां एक रिक्शा वाला है मैं एक बार उसे रिक्शे में बैठा, जब मैं उसके रिक्शे से उतरा तो मैंने देखा उसके एक हाथ नहीं है फिर भी वह काम कर रहा है। तो ऐसे लोग मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।

प्र०— आपने अभी तक जो सपने देखे थे उनमें कितने पूरे हुए हैं ?

उ०— अभी तक तो जो सपने देखे सभी पूरे हुए हैं।

प्र०— अन्त में श्रोताओं के लिए सन्देश ?

उ— जितनी मौहब्बत आप लोगों ने दी है। मैं चाहूँगा आगे भी मिलती रहे। जब तक एफ.एम. रैनबो में हूँ आपके बिना अधूरा है। अब तक मैंने किया आपने सराहा है। अब जो कर रहा हूँ उसे भी आप सब सराह रहे हैं। आपके पत्र मिलते हैं। हाँ एक बात ज़रूर जो नापसन्द हो हमारी कमज़ोरियाँ हमें ज़रूर बतायें।

प्र०— अर्जुमन्द भाई हमसे बात करने के लिए शुक्रिया

उ०— आपका भी बहुत–बहुत शुक्रिया बबलू भाई।

 o o o

वापसी

मेरे पास कुछ नहीं
अब कुछ भी नहीं खास है
'चीज़' के बस नाम पर
बदन में कुछ सांस है
या है फिर वो दास्तां
है जिससे हर कोई भंागता
इसीलिये तो मुकरने लगी
तुझसे मैं आजकल
ख़्याल था कि आप भी
अब कुछ तो सुधर जायेंगे
मगर ऐसा हुआ नहीं
या फिर तुमने किया नहीं
मैं भी एक 'खुदा' नहीं
इसीलिये तो हार कर
खुद से ही तकरार कर
बचा था बाकी जो सफर
उसको 'निभा' रही हूँ
मुड के पीछे देखिये
मैं भी आ रही हूँ
करोगे फिर तुम कबूल
उतने ही उमहा से
उतनी ही 'चाह' से
क्यूँ जाने मुझको मगर
ऐसी ही कुछ आस है
मेरे पास कुछ भी नहीं
अब कुछ भी नहीं खास है।

प्रस्तुति : अन्नू चौधरी
ट्यौढ़ी, बागपत, उ०प्र०

शेर

और भला क्या इससे बढ़कर
मेरी सज़ा ओ जां होगी
कि और किसी के ख़ातिर एक दिन
तेरी तरफ से हाँ होगी

***

ख़ालिस ही ना मुझे
यूँ तो तू बदनाम कर
अपना भी तो साथ मेरे
थोडा सा तू नाम कर

***

रह जाती है एक कसर सी
हर दफा
बाद बिछडने के चलता है
पर पता

- हसीन यादें ज़िन्दगी का सरमाया है।
- एहसासात, जज़्बात और ख़्यालात यह ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें कोई किसी से नहीं छीन सकता।
- अगर तुम किसी से नेकी नहीं कर सकते तो उसकी बुराई भी न करो।
- ज़िन्दगी के आधे ग़म इंसान दूसरों से गलत उम्मीदें करके खरीदता है।
- इंसान की हर ख़्वाहिश का पूरा होना नामुमकिन है।
- ज़िन्दगी में वो राहें अपनाओ जहाँ से तुम कुछ हासिल कर सको।
- तुम्हारा राज़दार तुम्हारा कैदी है लेकिन राज खुलने के बाद तुम उसके कैदी हो।
- इंसान वही है जो ज़िन्दगी में आये हुए हादसों को हंसी खुशी बर्दाश्त कर जाये।
- जिससे प्यार करते हैं उसे आज़माते नहीं।
- खुशी किसी की मोहताज नहीं होती फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि खुशी को अपनाने वाला उसे किस रंग में अपनाता है।
- कामयाबी उनके कदम चूमती है जिन्हें कामयाबी पर यकीन होता है।
- अगर किसी से मौहब्बत करो तो उसका सिला ना मांगों क्योंकि तुमने मौहब्बत की है तिजारत नहीं।
- सबसे बड़ा गुनाह किसी का दिल दुखाना है।
- जिस दिल में बर्दाश्त की ताकत हो वो दिल कभी नहीं टूटता।
- मौत एक बेख़बर साथी है।
- दिल अगर उदास हो तो सारी दुनिया उदास नज़र आती है और जब दिल खुश हो तो सारी दुनियाँ खुश।
- जो शख़्स तुम्हारे सामने दूसरों की बुराई करता हो तो जान लो कि वो शख़्स दूसरों के सामने तुम्हारी बुराई भी ज़रूर करता होगा।

प्रस्तुति : (यू०पी गर्ल) रूपम त्यागी

मेरठ

टॉप टैन कार्यक्रम रैनबो के........

1.	कुछ खट्टी कुछ मीठी	:	सुधीर त्यागी
2.	पोस्ट बॉक्स 503	:	आकाश एण्ड वाणी
3.	गीत आपके नाम से	:	मनीषा दुबे
4.	गाने के बहाने	:	ओ.पी. राठौर
5.	सपने कितने अपने	:	तपस्या
6.	तेरे सुर मेरे गीत	:	रमा पाण्डे
7.	हैलो एफ.एम. रैनबो	:	राजेश काम्बोज
8.	कलाकार कैसे-कैसे	:	मोहन लाल शर्मा
9.	ढ़ोल-धमाका	:	महक
10.	हंसतों के घर बसते	:	नरेन्द्र जोशी

दिल्ली, हरियाणा, मेरठ, बाग़पत, बड़ौत, गाज़ियाबाद, मुज़फ़्फर नगर, बुलंद शहर, गौतम बुद्ध नगर के श्रोताओं की राय पर आधारित।

ज़िन्दगी की गाड़ी

यदि आप ज़िन्दगी की गाड़ी को कामयाबी से चलाना चाहते हैं तो आपको दिल के एक्सीलेटर पर काबू पाना होगा। दिमाग़ के ब्रेक मज़बूत रखने होंगे। गुस्से की स्पीड पर कन्ट्रोल रखना होगा।

टायर उम्दा क्वालिटी के लगाने होंगे। आपके ख़्यालात की टयूब पंक्चर होने से बची रहे आँखों की हैड लाईट में खुलूस की रोशनी होनी चाहिए। अपनी तबियत की डिग्गी को बड़ा रखना होगा। अपनी ज़बान की स्पीडो–मीटर में शराफ़त की सुई लगानी होगी।

इन तमाम चीज़ों के लिए ज़रूरी है कि आपके पास खुश अख़लाक़ी का लाईसेंस हो तब जाकर आप दुनिया के रोड़ पर अपनी ज़िन्दगी की गाड़ी आसानीसे चला सकते हैं।

प्रस्तुति : नुज़हत, फ़ात्मा, तबस्सुम

काँधला, मु० नगर

कलयुग का अविष्कार "कैमरा मोबाइल फोन"

सुबह सवेरे ऑफिस जाते वक्त
पति ने पत्नी को आवाज़ लगाई
पत्नी ने किया सुना अनसुना
पति झल्लाया, ज़ोर से चिल्लाया
ज़रा सी बात पर रूठ जाती हो
सब कुछ तो है पास तुम्हारे अब क्या चाहती हो
पत्नी ज़रा सी खिली, फिर झट से बोली
बस इतनी सी ख्वाहिश है
इक कैमरा फोन की फरमाइश है
पति हैरानी से बोला, कैमरा भी है घर में
और मोबाइल भी लिए फिरती हो
फिर ये नयी फ़रमाइश क्यों करती हो
पत्नी ने समझाया, मोबाइल फोन का फायदा बताया
किटटी पार्टी में जाऊँगी
सब सखियों के गहने कपड़ों की
चुपके से फोटो खींच लाऊँगी
पति बुदबुदाया क्या बेकार की ज़िद है
पत्नी ने सुन मुँह फुलाया, झट से कह सुनाया
बस इतना ही करते हो प्यार, कुछ मांगों तो कर देते हो इंकार
शाहजहाँ भी तो पति था, जिसने पत्नी के लिए ताजमहल बनवाया
तुमसे तो इक कैमरा फोन भी नहीं जाता दिलवाया
पत्नी की खुशी कहाँ सोचते हो हर चीज़ को पैसों में तोलते हो
पति ने प्यार से समझाया, शाहजहाँ तो था इक बादशाह
दौलत थी उसके पास बेइंतहा
मैं कहाँ इस लायक हूँ, सीमित सी आया का मालिक हूँ।
पत्नी ने थोड़ा प्यार जताया, अपनी वाणी में कुछ शहद मिलाया।
बोली कैमरा फोन से तुम्हारी ही इज्ज़त बढेगी
महफिल में तुम्हारे नाम की धाक जमेगी
फिर मैं ज़्यादा ख़र्च भी तो नहीं करूँगी
जो न होगा किसी दूसरी के पास
बस वो ही नया लूँगी
पति बेचारा हो गया लाचार, पत्नी की दलीलों से वो गया हार
काट कर चेक बोला, प्रिय प्राणेश्वरी
तुम्हें कैसे मैं नाराज़ कर सकता हूँ
तुम पर तो बस मैं नाज़ ही कर सकता हूँ
मन ही मन पति बेचारा सोच रहा, हाय ये कैमरा फोन
इस नये अविष्कार का शिकार बनेगा, न जाने और कौन–कौन

सुखविन्द्र कौर

माँ

जिसने अपने सुख को गला के मुझसा वृक्ष लगाया,
जल की जगह पर जिसने मुझको अपना खून पिलाया।

जिसके अंक में पलकर मैं मस्ती में रहा मगन
त्यागमूर्ति ममतामयी माँ को मेरा शत–शत बार नमन।

जिसने उर में छिपा मुझे जाड़े गर्मी से बचाया,
जिसने अपने जीवन का सुख मेरे ऊपर लुटाया।

जिनकी छाया में रहकर मैं हरदम रहा प्रसन्न,
त्यागमूर्ति ममतामयी माँ को मेरा शत–शत बार नमन।

खुद को भूखा रख कर जिसने सदा मुझको खिलाया
गोद में रखकर जिसने मुझ पर अपना प्यार लुटाया

मेरे दुख से दुखी हुई जो मेरे सुख में मगन,
त्यागमूर्ति ममतामयी माँ को मेरा शत–शत बार नमन।

पुत्र कलुष को सृजनहारी जग को जीवन देने वाली,
मेरे लिए तुम अमृत प्याली तुम रखती मेरी रखवाली।

तेरे प्यारे चरण कमल में अर्पित मेरा श्रद्धा सुमन,
त्यागमूर्ति ममतामयी माँ को मेरा शत–शत बार नमन।
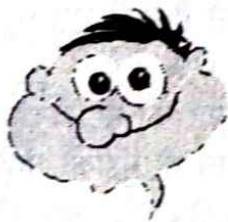
हंसना मना है

एक बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्री से जब टिकट चेकर ने टिकट मांगा तो वह बोला : श्रीमान रेलें भी जनता की हैं और टिकटें भी फिर टिकट लेने की क्या ज़रूरत है।

इस पर टिकट चेकर बोले : श्रीमान जेलें भी तो आप की हैं चलिये।

संजय कुमार मालाकार
आकोपुर, बेगुसराय, बिहार

शेर

छोटी सी ज़िन्दगी में क्या–क्या
दु:ख हमने झेले हैं
कभी समुन्दर के तूफां से
तो कभी आग के शोलों से खेले हैं
लाखों लोगों की भीड़ है आस–पास
फिर भी हम बहुत ही अकेले हैं

★★★

दिल में ग़म का समुन्दर
होंठो पर हंसी सजा रखी है
क्या करें सदा खुश रहेंगे हम
इस बात की तुम्हारी कसम जो उठा रखी है।

★★★

रोक दो कुछ देर के लिए मेरा जनाज़ा
कि सामने ही मेरे याद का घर है
हो जायेगा दीदार उसका जाते–जाते
कि ये ही तो मेरे रकीब का दर है
मौत के बाद तो न रोको ए दुनिया वालों मुझे
अब तुम को किस शह का डर है

★★★

इन आँखों को तेरा इंतज़ार है
इसलिए पलकें मेरी बन्द होती नहीं
मेरा दिल तेरे लिए बेकरार है
इसलिए बढ़ी हुई धड़कन धम होती नहीं
खुद चुकी है कब्र मेरे नाम की कब से
मगर तेरे इंतज़ार में मय्यत मेरी उठती नहीं
जिस्म में रूह नहीं है अब बाकी,
वो तो तेरे पास है।
हाय रे बदकिस्मत,
वो भी हवा है तुझे छू नहीं सकती नहीं।

★★★

सुखविन्द्र कौर

आँसू

दु:खों का इज़हार करते हैं आँसू
खुशी में भी आँखों से छलकते हैं
जुदाई में याद आता है जब कोई अपना
सम्भलते नहीं है पलकों में फिर ये आँसू
बिछड़े हुए मिल जाते हैं अचानक जब
ख़ामोश जुबां का काम करते हैं आँसू
दिल की कोई बात, जब होंठों से न कही जाए
आंख से कतरा कन कर छलक जाते हैं आँसू

★★★

सुखविन्द्र कौर

शिकायत किस जुबां से मैं करूँ उनके ना आने की
यही अहसां कौन सा कम है वो मेरे दिल में रहते हैं।

★★★

कभी ख़ामोश बैठोगे कभी कुछ गुनगुनाओगे
मैं उतना याद आऊँगा जितना तुम भुलाओगे।

★★★

मुझे ग़म नहीं इस बात का कि बदल गया ज़माना
मेरी ज़िन्दगी तुम्हीं ही से है कहीं तुम ना बदल जाना।

★★★

तुम्हारी चांद सी सूरत की मेरे घर ज़रूरत थी
चलो जब ग़ैर के आंगन तो मुझको याद कर लेना।

★★★

क्या ख़बर थी इस तरह से वो जुदा हो जायेगा
ख़्वाब मैं भी उसका मिलना ख़्वाब सा हो जायेगा।

शाहिद जमाल अंसारी
जुलेपुरा

देवदास - तब से अब तक

विमल दा मीनाकुमारी को पारो का रोल अपनी फिल्म में देना चाहते थे, लेकिन मीनाकुमारी के पति कमाल अमरोही नहीं चाहते थे कि कोई भी नायक मीना के शरीर को छुए भी और उन्होंने मीना को 'आउटडोर शूटिंग' पर भेजने से मना कर दिया। बाद में मधुबाला के नाम पर विचार हुआ लेकिन तब दिलीप साहब से उनकी खटास बढ चुकी थी। अन्त में कोलकाता से सुचित्रा सेन बुलाई गई। उन्होंने पारो के किरदार को अमर कर दिया। चन्द्रमुखी के रोल को वैजयन्ती माला ने बड़ी खूबसूरती के साथ निभाया। फिल्म में देवदास थे दिलीप कुमार।

पहली बार 'देवदास' उपन्यास पर नरेशचन्द्र मित्र ने 1928 में फिल्म बनाई। तारक बाला, नीहार बाला, रमा देवी और कर्णा वर्मा के साथ खुद मित्र ने इस मूक फिल्म में अभिनय किया।

1935 में इसी उपन्यास को केन्द्र में रखकर प्रथमेश बरूआ ने सवाक फिल्म का निर्माण किया। बरूआ खुद देवदास की भूमिका में थे। पारो का रोल 'जमुना' ने और चन्द्रमुखी का रोल 'चन्द्रावती' ने निभाया। जमुना 67 साल बाद फिल्म समारोह में दोबारा इसे देखकर अभिभूत हुई। फिल्म बंग्ला में थी।

1935 में ही बरूआ ने 'देवदास' हिन्दी में बनाई। देवदास बने कुन्दनलाल सहगल, चन्द्रमुखी का रोल राजकुमारी ने निभाया लेकिन पारो जमुना ही रही। इस फिल्म के कैमरामेन थे हिन्दी की देवदास हिट होते ही बरूआ की पहचान बन गई।

1936 में तमिल में पी वी राव ने इसी कथानक को आजमाया। दो गाने सहगल ने इसके तमिल संस्करण में गाए। फिल्म दक्षिण में सफल रही।

1953 और 1974 में तेलुगू भाषा में भी 'देवदास' की लहर चल निकली। 1953 में बनी फिल्म में ए0 नागेश्वर राव देवदास बने। इसकी सफलता से प्रभावित होकर 1974 में विजय निर्मला ने एक और देवदास कृष्णा को मुख्य भूमिका सौंपकर बना डाली। वी0 निर्मला ने निर्देशक की कुर्सी संभाली। यही पहली रंगीन 'देवदास' बनी थी।

बीस साल बाद 1955 में विमल राय ने दिलीप कुमार को लेकर ऐसी 'देवदास' बनाई, जिसमें अभिनय और निर्देशन कला की मास्टरी देखने को मिली। फिल्म में दिलीप कुमार (देवदास), सुचित्रा सेन (पारो), वैजयन्ती माला (चंद्रमुखी) की तिकड़ी ने सिनेमा जगत को एक कालजयी कृति प्रदान की। इसकी पटकथा नवेन्दु घोष और संवाद राजेन्द्र सिंह बेदी ने लिखे।

विमल राय के सहायक रहे गुलजार ने 1977 में धर्मेन्द्र, शर्मिला टैगोर और हेमामालिनी के त्रिकोण को सामने रख देवदास बनानी शुरू की। तीन गीत रिकॉर्ड होने के बावजूद कैलाश चोपड़ा की यह प्रस्तुति कभी पूरी नहीं हो पाई।

2002 में संजय लीला भंसाली शरतचन्द्र के उपन्यास में कुछ परिवर्तन कर 50 करोड का जुआं खेला। शाहरूख (देवदास) ऐश्वर्या (पारो) और माधुरी दीक्षित (चंद्रमुखी) की शोहरत और देवदास के प्रति नई पीढ़ी के निराले जुनून ने इस नए किस्म के देवदास को 'सर–आँखों' पर बिठा लिया। इस फिल्म को अपार सफलता मिली। इसी साल शक्ति सामंत ने बांग्ला में देवदास बनाई। लेकिन फिल्म अपना कोई जलवा नहीं दिखा पाई।

विमल दा की 'देवदास' ही सर्वाधिक चर्चा में रही। इसके सितारे दिलीप कुमार (सर्वश्रेष्ठ अभिनेता), वैजयन्ती माला (सहायक अभिनेत्री) और मोतीलाल (सहायक अभिनेता) 1956 के फिल्म फेयर पुरस्कार से नवाज़े गए।

❑ **प्रस्तुति : त्रिदीप गुप्ता (देवदास)**
सूरजकुंड रोड़, मेरठ
रूचियाँ : एफ.एम. सुनना, कम्प्यूटर पर काम करना

* * *

सप्रेम नमस्कार !

"हमारी आवाज़" का गुलदस्ता

नया भारत

आओ हम सब मिलकर नये भारत का निर्माण करें
जहाँ सूर्य के उगते ही, हर मानव अपना काम करे
आत्म निर्भर बने सभी जन, इस पर सभी विचार करे
आओ हम सब मिलकर ऐसे भारत का निर्माण करे
जहाँ आलस का नाम न हो, हर वृद्ध एक आदर्श बने
बालक महके फूल समान, नारी रानी झाँसी बने
आओ हम सब मिलकर ऐसे भारत का निर्माण करें
जहाँ न भूखा सोये कोई न ही हाथ फैलाये कोई
ऊँच नीच का भेद त्याग कर निर्मल और पावन बने सभी
आओ हम सब मिलकर ऐसे भारत का निर्माण करें।।

◆◆◆

मनुष्य जाति एक है

मनुष्य एक जाति है
उसकी संरचना में कोई अंतर नहीं है।
सभी का रक्त, मांस एक जैसा है
फिर उसे भाषा, जाति, क्षेत्र और मज़हब
के नाम पर बाँटना गलत है
हिन्दू और मुसलमान के नाम पर बाँटना
और फिर आपस में लड़ना मनुष्यता के खिलाफ है
याद रखे धर्म लड़ना नहीं लाड़ करना सिखाता है।

Two Bright Hearts
मीनू सरोहा, तनु सरोहा
शेरपुर लुहारा, बाग़पत (यूपी)

चन्द अशआर

मेरे दिल पर क्या गुज़र रही है ये खुदा जानता है
जानेगी क्या ये दुनिया मेरा दिल जानता है
लाख चाहता हूँ उसे भूल जाऊँ
मगर कम्बख़्त ये दिल नहीं मानता है।

* * *

अरमा ये जो दिल में आंसूओं में ढल गये
खुशियाँ थी जो चन्द वो ग़मों में बदल गये।
उनकी चाहत में हम हो जाते बर्बाद
अच्छा हुआ जो वक्त रहते संभल गये।

* * *

मैं ज़िन्दगी का साथ निभाऊँ कैसे
दर्दे ग़म अपना ज़माने को दिखाऊँ कैसे
ज़िन्दगी ने सफ़र में जिसने धोखा दिया
नाम उसका वसीम ज़माने को बताऊँ कैसे।

ग़ज़ल

यूँ ज़िंदगी उधार जिये जा रहे हैं हम
जैसे किसी से कर्ज़ लिये जा रहे हैं हम

होंठों से छीन ली है हंसी वक़्त ने मगर
खुशफहमियों की बात किये जा रहे हैं हम

है ज़िन्दगी की नाव भंवर में फंसी हुई
मांझी पे एतबार किये जा रहे हैं हम

बहला रहे हैं ग़म से दिले बेक़रार को
इक दुश्मनी सी खुद से किये जा रहे हैं हम

जिस दिन से तेरे नाम से मंसूब हुए है
तन्हा से अजनबी से हुए जा रहे हैं हम

कुछ भी नहीं मिला है महताब तुझसे आज तक
फिर भी तुझी से प्यार किये जा रहे हैं हम

❑ **महताब ख़ान**
टोली मौहल्ला, लोनी

ज्ञान की बातें

- फूलों की तमन्ना करोगे तो कांटों से भी वास्ता पड़ेगा।
- खुश रहना चाहते हो तो अपना ग़म छुपाकर दूसरों को खुश रखो।
- हर शख़्स सच्चा दोस्त तलाश करता है मगर खुद सच्चा दोस्त बनने की कोशिश नहीं करता।
- सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको याद नहीं रखना पड़ता कि किससे क्या कहा था।
- बेकार है वह क़ौम जिसमे इत्तेफाक न हो
- बेकार है वह आँख जिसमें हया न हो
- बेकार है वह दिल जिसमें दर्द ना हो
- बेकार है वह औलाद जिसे माँ–बाप का ख़्याल नहीं।
- बेकार है वह इल्म जो अमल से ख़ाली हो।
- बेकार है वह ज़िन्दगी जिसका कोई मक़सद ना हो।
- बेकार है वह सफ़र जिसकी कोई मंज़िल ना हों।
- बेकार है वह कमाई जिसमें ज़कात न हों।

❑ **वसीम ख़ान**

आँखें
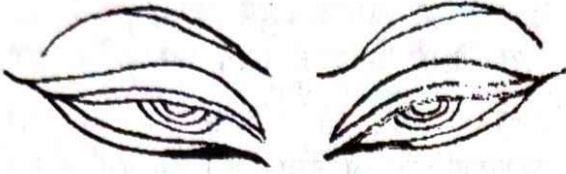
दिल ने आँखों से कही, आँखों ने दिल से कह दी,
बात चल निकली है, अब देखें कहां तक पहुंचे।

मेरी आँखों में ज़रा ग़ौर से देखो तो सही
किसकी तस्वीर छुपा रखी है मैंने दिल में।

चश्म–ए–साक़ी की, हक़ीक़त कोई मुझसे पूछे,
आँख की आँख है, पैमाने का पैमाना है

आँखों–आँखों में इक बात क्या होती है,
कितनी शाइस्ता मौहब्बत की जबां होती है।

मैंने देखी है किसी शोख़ की मस्ती भरी आँख,
मिलती जुलती है, छलकते हुए पैमाने से।

ज़माना कहता है फिरदौस गुमशुदा जिसको,
कभी–कभी आँखों में पाई जाती है।

दिल का खूं आँखों में उतर आया, चलो अच्छा हुआ,
मेरी आँखों को मेरा अहवाल कहना आ गया।।

जीने न देंगी आँखें तेरी दिलरूबा मुझे,
इन खिड़कियों से झांक रही है कज़ा मुझे।।

न और खोल अभी नीम बाज़ आँखों को,
तेरे निसार यह जादू अभी जगाए जा।।

तेरी सूरत से है आलम में बहारों को सवाल,
तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है।।

देखिए आंखों में अब आंसू नहीं है
अब तो रोने का सलीका आ गया।

✪✪✪

पुनीता भाटी कैमराला, गौतम बुद्ध नगर

सर से चादर बदन से क़बा ले गई
ज़िन्दगी हम गरीबाँ से क्या ले गई
मेरी मुट्ठी में सूखे हुए फूल हैं
ख़ुश्बू को उड़ा कर हवा ले गई
चाँद ने रात मुझे जगा कर ये कहा!
एक लड़की तुम्हारा पता ले गई

* * *

लहर आती है किनारे से पलट जाती है
याद आती है दिल में सिमट जाती है
लहर और याद में फ़र्क सिर्फ़ इतना है
लहर बे वक्त आती है याद हर वक्त आती है।

* * *

आपस में जब भी ज़िक्र तुम्हारा करेंगे लोग
मेरी तरफ ज़रूर इशारा करेंगे लोग
मेरा क्या है मैं तो उन पे ज़माना नवाज़ दूँ
लेकिन ये बात कैसे गंवारा करेंगे लोग

* * *

बारिश हो और धरती गीली न हो
धूप निकले और सरसों पीली न हो
ये आपने कैसे सोच लिया
आप की याद आए और आँखे गीली न हों।

* * *

प्रस्तुति : फ़िदा उर्रहमान ख़ान "छैला"
पोस्ट बॉक्स नं० 31253
सलेबिया खत–कुवैत

ना करें

- ☞ किसी की बुराई ना करें।
- ☞ किसी का दिल ना दुखायें।
- ☞ कभी झूठ ना बोलें।
- ☞ दो लड़ने वालों में सुलह करायें।
- ☞ शराब ना पियें।
- ☞ हराम कमाई ना खायें।
- ☞ ज़िना ना करें।
- ☞ किसी की चुग़ली ना करें।
- ☞ किसी के साथ बेईमानी ना करें।
- ☞ गुरूर ना दिखायें।
- ☞ दूसरे को कम ना आँके।
- ☞ सब से प्यार करें।
- ☞ किसी को बुरी नज़र से ना देखें।
- ☞ कोई ऐसा काम ना करें जिस पर बाद में पछतावा हो।

❑ **प्रस्तुति : शफ़ीक़ भारती, एम. साकिब**
एग पोल्ट्री सेंटर, बजाजा पिलखुवा,
ज़िला गाज़ियाबाद

जब इश्क करोगे मेरी तरह एक दिन
खुद को ग़ैर पाओगे मेरी तरह एक दिन

ख़्वाबों की दुनिया में मस्त रहने वाले
नीदं से जागोगे मेरी तरह एक दिन

जब इश्क़ के दरिया में तुम भी कूद जाओगे
ख़त लहू से लिखोगे मेरी तरह एक दिन

उनकी हर बात सोचोगे मेरी तरह एक दिन
फिर दिन रात सोचोगे मेरी तरह एक दिन

अकेले में बैठ के रात भर यादों से
बातें करने लगोगे एक दिन

मत करो इश्क कहती है अब 'चाँदनी'
तुम भी चहक जाओगे मेरी तरह एक दिन

❑ **प्रस्तुति : 'चाँदनी' अरशीद साकिब**
बारा मुल्ला (कश्मीर)

सैम्पिल

एक नेताजी के घर एक साथ तीन बच्चे पैदा हुए।

एक बहरा, एक गूंगा और एक अंधा। नेता घबरा गये, ये गांधी जी के तीन बन्दर मेरे घर में कैसे आ गये।

उन्होंने कहा – कि हे बजरंग बली, तुझे इन भिखारियों को जन्म देने के लिए कोई और जगह नहीं मिली?

आवाज़ आयी – आम आदमी को मिला है– बहरा कानून, गूंगा संविधान और अन्धी योजनाएँ।

बेटे तू बेकार घबराया है, मैने कोई करिश्मा नहीं दिखाया है। मैंने तो बच्चों के रूप में तेरे पास भारतवर्ष का सिर्फ़ एक सैम्पिल भिजवाया है।

❑ **प्रस्तुति : रचना त्यागी**

शादी का विज्ञापन

लडके वालों की तरफ से विज्ञापन : उम्र कब्र के आसपास, शक्ल से सूरदास, अक्ल से कालिदास, व कृपा से मैट्रिक पास है, अपना नाम नहीं, घर पर कुछ काम नहीं, तिनके सा स्वास्थ्य है। जैसे दहेज से प्यार नहीं, होगातो इन्कार नहीं, कहना ये है कि लड़की किसी भी जाति की चलेगी। विधवा हो तो देखी जायेगी, न ही तो शीघ्र ही विधवा हो जायेगी। उम्मीद है कि हमारी जोड़ी की मिल ही जायेगी।

मिलने के लिए पधारे – मकान नं गायब, मौहल्ला–गायब, गांव पर्दाफास, डाकखाना खास।

लड़की वालों की तरफ से विज्ञापन – मित्र पढ़कर तुम्हारा विज्ञापन खिल गया हमारा तन मन, हमें भी चाहिये कन्या के लिए वर। जिसका घर हो ना दर, कन्या हमारी की भी यह है बात, जो औरों में नहीं है। एक बहुत पढ़ी हुई है, लेकिन सब भूल गई है। ज़िन्दगी में केवल चार दिन स्कूल गई है। साक्षात देवी की मूरत है। शक्ल से तवे से भी खूबसूरत है। बाल धूप में सफेद हो गये हैं। चार दांत थे वे भी खो गये हैं। हमें विश्वास है जो भी हमारी लड़की से शादी करेगा, वह शीघ्र ही मरेगा। अतः हमें आपका रिश्ता मंजूर है।

❑ **पुनीता भाटी**
कैमराला

हम सब एक है

हर बनी चार दीवारों में
एक ही पत्थर है एक ही इमारत है
फिर किसने इसको नाम दिया
यह मन्दिर, मस्जिद, चर्च या गुरूद्वारा है।
एक ही धरती एक ही अम्बर
और एक ही ईश्वर है।
फिर किसने इसको नाम दिया
यह भारत, चीन, या जापान है
एक ही देह से जन्मा
हर इन्सान समान।
फिर यह क्यूँ कहलाया
हिन्दू, सिख, ईसाई या मुसलमान
एक ही क़लम से एक
ही पुस्तक पर लिखता है। इन्सान समान
फिर यें क्यूँ कहलाये।
गीता वेद या कुरआन

❑ **नीरू भाटी**

दोस्तों हम बताने जा रहे हैं "क" और "ख" की लड़ाई कि किस तरह से इनमें लड़ाई हुई तो पेश है आपकी खिदमत में

"क" और "ख" की लड़ाई

एक बार क और ख में लड़ाई हो गई। सदियों पुराना उनका साथ टूटने पर आ गया बात बढ़ते बढ़ते गाली गलौच तक पहुंच गई। 'क' अपने आप को महत्वपूर्ण बताकर 'ख' में दोष निकालने लगा। वह बोला कहाँ मैं कनक और कंचन सा कीमती और कहाँ तू केवल खंडहर मेरी महिमा कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैली हुई है। जब कि तू केवल खड़कपुर वाला। मैं कबूतर तू खटमल मैं कमाऊँ तू खर्चीला अब 'ख' को भी गुस्सा आ गया वह बोला अरे चुप हो जा कपटी, क्रूर, कंस वर्ना मुझसे बुरा कोई न होगा तू मेरी बराबरी क्या करेगा? मैं खरबूजे सा मीठा तू करेले सा कड़वा। मैं खरगोश सा सफेद तू काला कौआ मैं खनिज सा उपयोगी तू बेकार कंकड। 'ख' ज़रा ज़ोर से बोला ओर खपची खच्चर अपनी जुबानको खींच कर रख। ऐसे कान कतरूँगा कि खुजली करते नज़र आयेगा कहाँ में कोमल कवि और कहाँ तू खुरपि खर। मैं नाजुक कली तू बेरहम खंजर। मैं कलम तू खड़िया। इस पर गुस्से से दांत पीसते हुए 'ख' दहाड़ा काले कलूटे कबाड़ी मैं तुझे मार मार कर कुबड़ा बना दूँगा। तू अब ज्यादा मेरे मुँह मत लग। मैं खाना देने वाला खलिहान हूँ तू केवल कचरा है मैं ऊँचा खम्भा तू काल है मैं खिचड़ी तू कीचड़ है, 'क' गुस्से से लाल पीला हो गया और बोला ख़बरदार खोखले खड्डे मैं तेरी जुबान खींच लूंगा तेरे दांत खट्टे कर दूँगा। मैं कर्ण सा दानी तू खूंसट है। मैं पूज्य कृष्ण कन्हैया तू मेरी खड़ाऊ। गुस्से में पैर पटक कर आंखें तरेरते हुए 'ख' ने जवाब दिया –अबे तू काला कुत्ता कुलक्षण मैं तुझे कच्चा चबा जाऊँगा। मैं प्रसिद्ध खिलाड़ी तू कामचोर है। मैं खनक तू कलंक है मैं खटमीण तू कच्चा है।

ऐसे उनकी लड़ाई बढ़ती गई। अन्य सारे अक्षर परेशान हो गए। अब क्या किया जाए? अगर ये दोनों अक्षर अलग अलग हो गए तो अक्षर सीखने वाले बच्चे अक्षरों का ज्ञान क ख कैसे सीखेंगे। सभी अक्षरों ने मिलकर किसी तरह इन्हें समझा बुझाकर जज 'ज' के पास भेजा। जज ने जौहरी की तरह दोनों के मामले की जांच की और ज़ोर से बोले "जड़ मूर्खो जान बूझकर जंगली जानवरों की तरह जंग करते करते ज्वालामुखी से जर्जर जीर्ण हो जाओगे पर जीत न पाओगे और न ही जीवित रह पाओगे इसलिए जागृत बनो। जगत में जगत गुरू बनकर जन्म–जन्म तक जनहित में जगमगाओ। तुम्हारी जुगल जोड़ी पर ज़बरदस्त ज़िम्मेदारी है। ज़रा सांस लेकर 'ज' ने फिर कहना शुरू किया। तुम एक दूसरे के गुणों को देखो। तुम दोनों जग को जीवन देने वाले हो। यह सुनकर 'क' और 'ख' शान्त हो गए। 'क' ने पूछा "वह कैसे" ज मुस्कुराया और बोला "तुम कन्हैया यह खुदा है तुम कर्ता हो यह जीवनदायी खून है। तुम कल्याण तो यह खुशी है। 'ज' साहब फिर बोले सबकी ज़रूरत रोटी कपड़ा और मकान रहती है। तो तुम दोनों मिलकर पूरी कर सकते हो। कैसे जज साहब क और ख एक साथ मिलकर बोले। केसर मिली खीर खिलाओ और खादी के कपड़े पहनाओ अब कुटिया में जाकर खाट पर आराम करो। जज 'ज' ने अपना फैसला सुना दिया। सारे अक्षर फैसले की तारीफ़ करते हुए जज 'ज' ने जयजयकार करने लगे। 'क' और 'ख' की दास्तान तो दोस्तो कैसी गले मिल गए। ये भी 'क' और 'ख' की दास्तान तो दोस्तो कैसी लगी ये दास्तान ज़रूर बतायें।

शाहिद जमाल अंसारी
जुलेपुरा
बुलंदशहर

सच्चा किस्सा

अंधा साँप

एक बार की बात है कि डाकुओं का एक गिरोह डाका डालने के लिए ऐसी जगह पहुँचा जहाँ खजूर के तीन दरख़्त थे। उन दरख़्तों में से एक दरख़्त सूखा था और दो फलदार थे डाकू वहाँ आराम के लिये लेटे कि डाकुओं के सरदार ने देखा कि एक चिड़िया फलदार दरख़्त से उड़कर सूखे दरख़्त पर जा बैठी और थोड़ी देर के बाद वहाँ से फिर उडती है और फलदार दरख़्त पर जा बैठती है इसी तरह उसने कई चक्कर लगाये सरदार को यह बात जानने की तमन्ना हुई यह जानने के लिए सरदार दरख़्त पर चढ़ा उसने देखा देखकर हैरान रह गया कि एक अंधा साँप सबसे ऊँची टहनी पर लिपटा बैठा है अपना मुँह खोले हुए है वह चिड़िया उसके लिए कुछ लाती है उसके मुँह में डाल देती है। सरदार ने जब यह मंज़र देखा तो उस पर इस बात का बहुत गहरा असर हुआ और कहने लगा या इलाही एक ज़हरीला साँप है जो देख नहीं सकता उसके रिज़्क के लिए तूने चिड़िको मुक़र्रर कर रखा है फिर मेरा डाका डालना कहाँ तक मुनासिब है। ग़ैब से आवाज़ आई "मेरी रहमत का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है" तुम अब भी तौबा कर लो मैं तुम्हारी तौबा क़बूल कर लूँगा यह सुनकर डाकू की आँख से आँसू बहने लगे और वह रो–रोकर अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करने लगा या इलाही! मैं अपने गुनाहों से बाज़ आया मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले, ग़ैब से फिर आवाज़ आई "हमने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली" सरदार ने अपनी तलवार तोड़ डाली। उसके साथियों ने सरदार को देखा तो बोले क्या बात है? सरदार ने सारा वाक़िया सुनाया उसके साथियों ने भी अपनी तलवारें तोड़ दीं और नेक काम करने लगे।

इरशाद बिजनौरी
शमशाद रोड, पिलखुवा

टूटो नहीं हार से

जीवन में जीत क्या और हार क्या ?
जीत यदि पुरस्कार है तो हार मन में उपजा
एक अदम्य विश्वास है
हार में ही निहित है जीत
है छिपा इसी में जीत का बीज
हार में ही जीत की ललकार है
जीत अगर परवाज़ है
तो हार की भी तेज़ धार है
पथरीली ज़मीन पर यह उगती घास है
माना कि हार से हार जाता है मन
पर यही तो बना देता है मन को कुंदन
और जगाता मन में दृढ़ विश्वास है
तभी तो हार बन जाती है जीत की उड़ान
और फिर मिलती है जीवन को चिर परिचित मुस्कान

शाहिद जमाल अंसारी
जुलेपुरा, बुलन्दशहर, यू०पी०

F.M. Rainbow

एफ.एम. है क्या हम बतलायेंगे।
समझो तुम तो हम समझायेंगे।।

एफ.एम. सुमन संगीत का है।
(Flower of Music)
ये ना हमारे मीत का है।।
(Friend of mine)

एफ.एम. जनक है बुद्धि का
(Father of mind)
एफ. एम. तान है शुद्धि का।।
(Fair melody)

एफ.एम. पिता और माता है।
(Father and mother)
ये अपना भाग्य विधाता है।।
(Fortune maker)

एफ. एम. खुशी और मस्ती है।
(Fun and marroment)
मशहूर बड़ी ये हस्ती है
(Famout master mind)

एफ. एम. कहे पीछे हट आओ।
(Follow me)
सब मस्त रहो नाचो गाओ।।
जो अपनी समझ में आया है,
वो मैंने तुम्हें बताया है।।

मौहब्बत

खुदा खुद प्यार करता है,
मौहब्बत एक इबादत है

ये ऐसा ख़्वाब है जिस ख़्वाब की ताबीर जन्नत है।
फरिश्ते प्यार कर सकते तो फिर इंसान क्यूं आते
ना ये दुनिया बनी होती, ना तारे रोशनी पाते।
हर एक शै को ज़माने में मौहब्बत की ज़रूरत है,
मौहब्बत फूल है खुशबू है दरिया की रवानी है।
हर एक जज़्बा अधूरा है हर एक शै आनी जानी है,
क़यामत तक रहेगी जो ये एक ऐसी हकीकत है।।

• • •

हँसो मगर दिल खोलकर

या तो दीवाना हँसे, या वह जिसे तू तौफ़ीक दे।
वर्ना, इस दुनिया में रहकर मुस्कुराता कौन है ?

शायर ने क्या खूब कहा है। विज्ञान और प्रविधि विकास के इस युग में मनुष्य को तमाम सुख–सुविधाएं, धन–दौलत और ऐशो–आराम के सभी साधन जुटा दिए हैं। छीनी है तो उसके होंठों की हंसी। परन्तु यह हँसी ईश्वर का वरदान है। यह बहुत कीमती है। इसे छिनने मत दीजिए।

"प्रसन्न मुद्रा और उल्लास प्राकृतिक सौन्दर्य का अथाह समुन्द्र है। मनुष्य को चाहिये कि इसमें जी भरकर स्नान करे।"

"यदि कभी–कभी खिलखिलाकर हँसने की प्रवृत्ति मेरी न हो तो मैं मर जाऊँ।"

❑ प्रस्तुति : रचना

बात

बात से बात उलझ जाती है।
बात से बात सुलझ जाती है।
बात ही दिल को ज़ख्म देती है।
बात ही नस्तरों को धोती है।
बात अपनों को जुदा करती है।
बात ग़ैरों को मिला देती है।
बात काँटो सी चुभन देती है।
बात शोलों सी जलन देती है।
लोग दिल को मसोस लेते हैं।
बात जब मुख से निकल जाती है।
और किस्मत को कोस लेते हैं।
बात जब बन के बिगड जाती है।
बात रिश्ता है बात बन्धन है।
बात मन की दशा का दर्पण है।
एक बात के दो मतलब हैं।
बात ही मृत्यु है बात ही जीवन है।

निशा बर्गोती
बुलन्दशहर

ग़ज़ल

वक्त के हाथों हम कितने मज़बूर हैं,
पास रहते हुए आज उनसे कितने दूर हैं।
कल तक जो थी माहताब मेरे आंगन की,
आज किसी और की आँख का वह नूर है।
यह जो हल्की सी लाली है मेरी आँखों में,
उन के हुस्न के मय का बस सुरूर है।
कर के तमाम कोशिशें जुदाई की वह खुश हैं,
डालने में दरार यकीनन हाथ उन का ज़रूर है।
देख कर उतरा हुआ चेहरा उन का अब,
लगता कि अब के टूटा ज़रूर उन का ग़रूर है।
अब तो हमने कर ली है तसल्ली इसी में,
उन की रज़ा में ही 'बेदिल' की रजा भरपूर है।

परवेज़ आलम

शेर

खिड़कियाँ खोल दो हवा आए
घर के अन्दर मेरा खुदा आए

दोस्ती दोस्ती नहीं रहती
दरमियाँ जब हिसाब आ जाए

साथ के घर में आग लगा के खुश हैं क्यों,
खुद भी जो कागज़ के मकानों वाले हैं।

शहर वालों की मौहब्बत का मैं कायल हूँ मगर
मैंने जिस हाथ को चूमा वो ही खंजर निकला।

सुना है बोले तो बातों से फूल झडते हैं
ये बात है तो चलो बात करते देखते हैं।

हर हवा दर्द को बढ़ा ही दे,
अब तो ए दिल उसे भुला ही दे।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए।

वो दिल ही क्या तेरे मिलने की जो दुआ न करे,
मैं तुझको भूल के ज़िंदा रहूँ खुदा न करें।

यह सच है कि नहीं मरता कोई जुदाई में
खुदा किसी को किसी से मगर जुदा न करे।

जब भी आता है तेरा नाम मेरे नाम के साथ,
जाने क्यों लोग मेरे नाम से जल जाते हैं।

परवेज़ आलम
गली नं. 1, शहीद भगत सिंह
कॉलोनी, पश्चिमी करावल नगर,
दिल्ली

आधुनिक डिक्शनरी

पड़ोसी : तुम को तुम से ज़्यादा जानने वाला

बीवी : शॉपिंग की शौकीन मख़्लूक

सास : तुम्हारे घर की इस्कीमें बनाने वाला कम्प्यूटर

साली : बिना पैसा लगाए घर की हिस्सेदार

इश्क : समय गुज़ारने का बेहतर तरीका

नौजवान स्टूडेंटस : भविष्य का डाकू

साल गिरह : कम लागत ज़्यादा बचत

हसबैंड : एक तरह का बैंड जो बेलन से बजता है।

प्रस्तुति : ज़ीशान बेग

काँधला, मु० नगर

"टक्कर"

एक रोज़ जा रहे थे कहीं साईकिल से हम।
पहुंचे जो एक मोड़ पे तो नाज़िल हुआ सितम।।
साईकिल के पैडल से जो पैर उखड़ गए।
हम जा के एक शोक हसीना से लड़ गए।।
सम्भली जो वो हत्थे से उखड़ गई।
गोया हुई हवाओ में फौरन बिगड़ गई।।
कहने लगी कि अंधे हैं आता नहीं नज़र।
ये हरकतें जनाब की ये रेशे मोतेवर।।
फिरते हैं क्या शरीफ़ों की सूरत बना के आप।
यूँ लड़कियों पे गिरते हैं दाढ़ी लगा के आप।।
हमने कहा ऐ नाज़नी थूक दो गुस्से को नाज़ से।
साईकिल लड़ी है आपसे दाढ़ी नहीं लड़ी।।
दाढ़ी का नाम लेके हमें क्यों है टोकती।
दाढ़ी कोई ब्रेक नहीं जो साईकिल को रोकती।।

प्रस्तुति : मौ० नदीम आफ़रीदी

ज़ाकिर नगर, ओखला

पुकार

मुझ को इज़्ज़त दे मोला
दौलत शोहरत दे मोला
गैरों के भी काम आऊँ
ऐसी आदत दे मोला
मेरे सारे सजदों की
कुछ तो कीमत दे मोला
नज़रे करम कुछ मुझ पर कर
अपनी चाहत दे मोला
करके गुनाह शर्मिंदा हूँ
दोज़ख़, जन्नत दे मोला
तेरी इबादत रोज़ करूँगा
ऐसी हिम्मत दे मोला
धूप पड़े जब अपनों पर
बादल सी छत दे मोला
पाँचों वक्त रहूँ सजदे में
इतनी ताकत दे मोला
तुझ से 'रोशन' मांग रहा हूँ
मुझ को इज़्ज़त दे मोला

❑ सतपाल 'रोशन'

प्रिय भाई, मुजाहिद ख़ान जी, आदाब

न्यू फ्रेंड्स लिस्नर क्लब निकट भविष्य में "हमारी आवाज़" का द्वितीय अंक प्रकाशित करने जा रहा है, ये जानकर बेहद खुशी हुई। धन्यवाद।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस प्रकाशन से निश्चय ही हमारे श्रोता समाज को नई दिशा प्रदान होगी। तथा हज़ारों की संख्या में श्रोता लाभान्वित होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

आपका श्रोता भाई, **एल्बर्ट जॉनसन**

भाई मुजाहिद ख़ान अस्सलामअलैकुम

आपने जो पत्रिका के माध्यम से F.M. के प्रजैन्टर व दोस्तो से मिलवाया उसके लिए शुक्रिया। मैं इस पत्रिका (हमारी आवाज़) को शुभकामनाऐं देना चाहती हूँ कि ये दिन दौगुनी रात चौगुनी तरक्की करे। मैं भी इस पत्रिका में हिस्सा लेना चाहती हूँ। मैं इस पत्रिका के द्वारा अपने दिल की बात कहना चाहती हूँ।

मैं तुम्हें चाहती नहीं लेकिन
फिर भी जब पास तू नहीं होता
खुद को इतना उदास पाती हूँ
गुम अपने हवास पाती हूँ
जाने क्या धुन समाई रहती है
इक ख़ामोशी सी छाई रहती है
दिल से भी गुफ्तगू नहीं होती
मैं तुम्हें चाहती नहीं लेकिन

अगर मेरी ग़ज़ल पसंद ना आए तो इन लैटरों को जलाकर चाय मत बनाना वर्ना हमारे अरमान भी जल कर राख़ हो जायेंगे प्लीज ऐसा कभी मत करना मैं वैसे ही बहुत तन्हा,उदास, ख़ामोश, ग़मज़दा हूँ अगर आपने ऐसाकिया तो हम तो जीते जी मर जायेंगे प्लीज़, ज़रूर शामिल करें। शुक्रिया।

शरमीन अलवी, शबाना अलवी

बडौली रोड़, बडौत, बागपत

श्रीमान जी नमस्कार।

आपकी कुशलता की कामना के साथ यह पत्र भेज रहे हैं आप का प्रेषित पेम्पलेट मिला यह जानकर खुशी हुई कि आप का क्लब द्वितीय पुष्प "हमारी आवाज़" निकालने जा रहा है हमारी तरफ से आपको हार्दिक शुभकामनायें। क्योंकि प्रकाशन के कोई निश्चित कॉलम नहीं हैं इस वजह से रचनायें भेजने की परेशानी हो रही है फिर भी चाहे जहां हमारा नाम व पता इस्तेमाल कर लें। सवाल जवाब, मित्रता कॉलम क्या नहीं छाप नहीं रहे हैं।

आभारी होंगे।

भूपेन्द जुनेजा

A-397/I पश्चिम पुरी, नई दिल्ली–110063

Phone : 9891069681, 9818571449

मेरी नज़र में

दुनिया क्या है ?

ये इक मेला है।

ज़िन्दगी क्या है ?

ये लुत्फ़ उठाने की चीज़ है।

दिल क्या है ?

इसमें जज़्बात और प्यार का समुन्दर है।

मौहब्बत क्या है?

ये खुदा का दिया वो अनमोल तोहफा है जो किसी बेहद प्यारे को दिया जाता है।

दोस्ती क्या है ?

ये दुःख सुख बांटने का ज़रिया है।

अहसास क्या है ?

किसी दूसरे के दर्द को खुद महसूस करना अहसास है।

दर्द क्या है ?

दिल का टूटना जिस्म की तकलीफ दर्द है।

ग़म क्या है ?

अपनों से बिछड़ना और उनके न मिलने की आस, बेहद प्यारी वस्तु का खो जाना ग़म है।

उम्मीद क्या है ?

जो न मिल पाया फिर भी उसके मिल जाने की 'आस' उम्मीद है।

याद क्या है ?

अपनों का ध्यान उनका हर पल ख़्याल आना याद है।

इन्तज़ार क्या है ?

जो आंखों से दूर चला गया हो उसका रास्ता देखना इन्तज़ार है।

सपने क्या हैं ?

सुखविन्द्र कौर

ज़िन्दगी में कुछ पाना, कर दिखाना है इस बात को पूरा होते दिखाते हैं सपने।

मृत्यु क्या है ?

जीवन का अन्त, एक ऐसी हक़ीकत है, जिसे इंसान आसानी से क़बूल नहीं करता।

A.I.R. F. M.

रविवार का दिन था 10 बजने में पांच मिनट थे कि अचानक लाईट चली गई तभी याद आया कि आज तो हमारा फेवरेट प्रोग्राम गाने के बहाने लेकर हमारे प्रिय प्रेज़ेन्टर ओ.पी. राठौर जी आयेंगे। हम भाग कर फोन के पास गये और लगे ए.आई.आर.का नम्बर लगाने। मगर हमने पाया कि घंटी बराबर जा रही है मगर कोई फोन रिसीव नहीं कर रहा फिर दूसरे नम्बर पर ट्राई किया। मगर उसका भी वही हाल। इसी क्रम में एक घंटा बीता और फिर दूसरा घंटा भी बीत गया हमारा नम्बर नहीं लगा तो हमने सोचा अगले सप्ताह फिर ट्राई करेंगे मगर फिर वही क्रम चला और समय गुज़रता रहा कोई बात नहीं बनी तो हमने सोमवार को काजल जी के प्रोग्राम में लैटर भेजे और बीस लैटर लिखने पर भी हमें कोई सफलता हाथ नहीं लगी तो हमने सोचा कि क्यों ना इस बात की शिकायत आकाश और वाणी जी से की जाए और हमने चार पत्र आकाशवाणी यानी पोस्ट बॉक्स 503 को लिखे मगर उन्होंने भी हमारी सुनवाई नहीं की तो हम निराश होकर बैठने वाले थे क़ि तभी हमने सिराज़ भाई से फोन पर बात की तो पता चला कि ऐसे ही नम्बर ट्राई करो एक दिन सफलता मिल ही जायेगी। खैर हमने बबलू कश्यप जी का नम्बर सिराज़ मिथुन जी से लिया और बबलू से बात की तो पता चला कि मुजाहिद खान और बबलू कश्यप जी "हमारी आवाज़" नामक पत्रिका का भाग–2 प्रकाशित कर रहे हैं तो सोचा अपनी बात हमारी आवाज़ के ज़रिए सभी लिस्नर व प्रेज़ेंटर तक पहुँचाऊँ तो यह शिकायती पत्र लिखने लगा मेरी शिकायत सभी लिस्नर से यह है कि अपने पुराने मित्रों को कभी भूलना नहीं चाहिये।

और प्रेज़ेटर यानी ए.आई.आर. एफ.एम. टीम से शिकायत है कि एक तो वह प्रोग्राम ज़्यादा से ज़्यादा लैटर शामिल करा करें और फोन की सुविधा को दुरूस्त रखें। उम्मीद है इस ओर ध्यान अवश्य देंगे।

धन्यवाद !

सलीम राही, टोली मौहल्ला, लोनी

चंद अशआर

हज़ार खुशियाँ कम है। एक ग़म भुलाने के लिए
एक ग़म काफ़ी है। ज़िन्दगी भर रूलाने के लिए

मैं तेरे सामने ख़ामोश हूँ। पत्थर भी तरह।
मेरे सीने में बहुत ग़म है। समन्दर की तरह।

नज़र झुका के वो दिल को लूट लेती है।
क्या खूब अदा दी है। खुदा ने सादगी देकर।

मैं सो जाऊँ तो इन आँखों पे अपने होंठ रख देना।
यकीं आ जायेगा पलकों ते भी दिल धडकता है।

ऐ मौत उन्हें भुलाए ज़माने गुज़र गये।
आ जा कि ज़हर खाये ज़माने गुज़र गये।

तू कहाँ ग़म है। तेरे रोशनी आँचल की क़सम
आंसू अब आँखों में कंकर की तरह लगते हैं।

❑ गुलज़ार अहमद कैरानवी

क्या आप जानते हैं ?

1. समुन्द्र के भीतर मौजूद होटल संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा में मियामी से थोड़ी दूर पर जैल्स अंडर सी लॉज नाम का होटल है।
2. जहाज़ मन्दिर पश्चिम राजस्थान के जालौर ज़िले के माण्डवला गांव में मौजूद है।
3. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इन्स्टीटयूट ऑफ स्पोर्टस पटियाला में है।
4. भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण 1 जनवरी 1949 को हुआ था।
5. अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा पाकिस्तान यात्रा में प्रयुक्त बस का नाम सदा–ए–सरहद रखा गया है।
6. दुनिया का सबसे पुराना राजतंत्र जापान है।
7. भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन थे।
8. गैस इंजन का अविष्कारक डेमलर था।
9. आदमी में सर्वाधिक शक्तिशाली माँसपेशिया जबड़ों में होती हैं।
10. औसत सालना बहाव की बुनियाद पर दुनिया का सबसे बड़ा आबशार जाइर में बोपोमा आबशार है जिसका पुराना नाम इस्टाइले था।

सबसे ज़्यादा बहाव वाला दरिया

दुनिया के जिस दरिया में सबसे ज़्यादा मिक़दार में पानी बहताहै वह अमेज़न है। इस दरिया से हर सैकेंड में 42 लाख क्यूसिक पानी बहरे ओकियानूस में गिरता है और जब इस दरिया में मौजें भरपूर ठाठें मारती हैं और ज़बरदस्त बाहव आया हुआ हो तो पानी की मिक़दार 70 लाख क्यूसिक तक पहुँच जाती है। अमेज़न के नीचे ही नीचे नौ सौ मील के हिस्से में इस दरिया की गहराई पचपन फुट है लेकिन कुछ हिस्सों पर यह दरिया तीन सौ फुट तक गहरा है। अमेजन की रवानी और बहाव की तेज़ी नील दरिया के मुकाबले में साठ गुणा ज़्यादा है।

नसीहतें

- ☞ किसी को नुकसान पहुँचाना खुद नुकसान उठाने से भी बुरा है।
- ☞ ज़िन्दगी बहुत छोटी है मगर परेशानियाँ हो तो लम्बी नज़र आती है।
- ☞ याद रखो, जीत ताकत की नहीं सदाकत (सच्चाई) की होती है।
- ☞ सच्ची बात को ग़ौर से सुनो चाहे कहने वाला कोई भी हो।
- ☞ अक़्लमंद की पहचान गुस्से के वक़्त होती है।

प्रस्तुति : आसिफ़ा

चिरोडी, गाज़ियाबाद

प्रस्तुति
नम्रता डबास
ज़िला झज्जर, हरियाणा

- ★ नरमी दूसरों को मारती है व मर्ज़ी अपने आपको।
- ★ जिस व्यक्ति के पास संकल्प की दृढ़ता है, भाग्य उसके पास मित्र बनकर रहता है।
- ★ राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हमें राष्ट्रभाषा का सम्मान करना चाहिए।
- ★ दो बातें मानसिक दुर्बलता प्रकट करती हैं– एक तो बोलने के अवसर पर चुप रहना, दूसरे चुप रहने के अवसर पर बोलना।
- ★ मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात मन्दिर है, इसलिए साकार देवता की पूजा करो।
- ★ सम्भव असम्भव से पूछता है "तुम्हारा निवास कहाँ है?" उत्तर मिलता है "निर्बलों के सपनों में"।
- ★ कभी–कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं जो क्षणमात्र में मनुष्य का रूप पलट देती हैं।
- ★ मनुष्य की महत्ता उसके कपड़ों से नहीं, उसके आचरण से जानी जाती है।
- ★ दूसरों के दुख दर्द को समझने वाला ही इंसान कहलाने का अधिकारी है, अन्य नहीं।
- ★ असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।
- ★ जो अपने पद के लिए गर्व करता है वह उस पद के योग्य नहीं होता।
- ★ दिल के दर्पण पर नफरत की धूल मत पड़ने दो।
- ★ आत्मविश्वास वह चाबी है जिसके द्वारा विपत्ति के किसी भी ताले को खोला जा सकता है।
- ★ बुराई करने के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं, भलाई करने का अवसर वर्ष में एक बार आता है।
- ★ जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाईयां मनुष्य को शक्ति सम्पन्न बनाती हैं।

चुटकुले

❑ नम्रता डबास

✪ जज ने महिला से कहा–तो तुमने अपने पति के सिर पर कुर्सी मारी और वह टूट गई।
औरत बोली – मगर मेरा इरादा यह नहीं था।
जज ने कहा – यानी तुम्हारी नीयत हमला करने की नहीं थी ?
औरत ने कहा – जी नहीं मेरी नीयत कुर्सी तोड़ने की नहीं थी।

✪ एक बै के घर में चोर बड़गे। त उसकी घरवाली न्यू बोली अक देखिये मनै त किमै गड़बड़ लागै से। त वो आदमी बोल्या – अक तू ऐ देख ले मनै त डर लागै स। फैर उसकी घरवाली बोली – फेर तू किसा मर्द होया। त वो न्यू बोल्या – मैं मर्द तेरा सूं इन चोरांका कोन्या।

आवाज़-ए-दिल

जीवन की यह बहार तुमसे है,
हर दिन हर त्यौहार तुमसे है
कोई माने या ना माने, मेरी सांसों की धार तुमसे है।
तुम जब पास हो तो सवेरा है,
तुम जब दूर हो तो अंधेरा है।
जीवन का ये जो घेरा है,
इस पर सिर्फ़ तुम्हारा ड़ेरा है।
आज मैं कहता हूँ कि यह दिल जो हमारा है
यह अब हमारा कहाँ ये तो सिर्फ़ तुम्हारा है
उम्र भर चाहे हम रहें कांटों में,
पर खुदा करे आपका दामन फूलों से भरा रहे।

तुम्हारे लिए

तुम्हारे लिए हर पल हज़ारों फूलों की महक और हज़ारों खुशियों की खनक लेकर आए, तुम मुझे हर दुःख में एक अच्छी बात सिखाते हो और हर खुशी में ईश्वर का स्मरण कराते हो, हर कठिनाई में उससे जुझने की हिम्मत दिलाते हो।
तुम हर रूप में मुझे अच्छे दोस्त से भी ज़्यादा नज़र आते हो।

* * *

तुम दूर हो लेकिन करीब भी हो
हम तो हर नज़र में तुम्हें देखा करते हैं
ख़्वाब देखने छोड़ दिए थे बहुत पहले से
मगर तुम्हें देखने के लिए अब ख़्वाब देखा करते हैं।

❑ **हैप्पी हार्ट हरभगवंत सिंह,** विष्णु गार्डन

अन्दाज़

अन्दाज़ उस पल का
उस लम्हात का
जो जी लिया मुश्किलातों के बीच
ख़ामोशी में खुद से की बातें
यादों की भीनी तन्हाई में
अहसास उस पल का
जो जिया तमन्नाओं के बीच
खूश्बू रही जिसमें
यादों से भीगे पलों की
बेहद मसरूफ़ियत में भी
ज़िक्र करना नहीं भूले
यही अंदाज़ रहा जीने का
खुद से की बातें
खुद से ही शिकायतें
रहे अपने में ही सिमटे हुए
तो ज़हन में तैरने लगी यादें
फिर याद हो आईं जब
बिसरी बातें
अन्दाज़
उस
पल
का

❑ **सविता भारद्वाज**

सब खोने को जी चाहता है
मस्त होने को जी चाहता है
जब रोने को जी चाहता है
मैं बरखा सी बरसाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

प्रेम सन्देशा लाती हैं
प्रीत का रस बरसाती हैं
जब हिचकियाँ मुझ को आती हैं
मैं बेखुद सा हो जाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

जब देखता हूँ छुप जाती हो
मैं जानता हूँ शरमाती हो
तुम सपने में आ जाती हो
जब रोके मैं सो जाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

कर–कर के बहाने आती हो
रो–रो के रूलाने आती हो
तुम मुझ को मनाने आती हो
जब रूठ के मैं आ जाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

तुम नाजुक सा एक मोती हो
ये फूल सी जाँ क्या खोती हो
तुम छुप–छुप के क्यों रोती हो
परदेस में जब मैं आ जाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

शरमाती लजाती आती हो
महफ़िल को सजाने आती हो
तुम साज़ बजाती आ जाती हो
मैं नग़में जब बरसाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

तुम मेरे मन की ज्योति है
हर आंसू तेरा मोती है
ए शमा तू क्यों रोती है
जब लौ पे मैं जल जाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

तू दामन–ए–गुल पे सोती है
तू आरिज़–ए–गुल का मोती है
ए शबनम तू क्यों रोती है
जब दर्द के गाने गाता हूँ
क्या याद तुम्हें मैं आता हूँ

स्वः अब्दुल माबूद ख़ान
कुलिनजन (मेरठ)

"कुछ खट्टी, कुछ मीठी"

"कुछ खट्टी, कुछ मीठी है बहुत इम्पोटेंट।
करता है, सबका मनोरंजन।
देता है सबको, खूब प्यार।
इसलिए हम हैं इसके सखा,
मित्र और यार

आशू वर्मा
होली चौक, सिसौली,
ज़िला मुज़फ्फर नगर, (उ०प्र०)
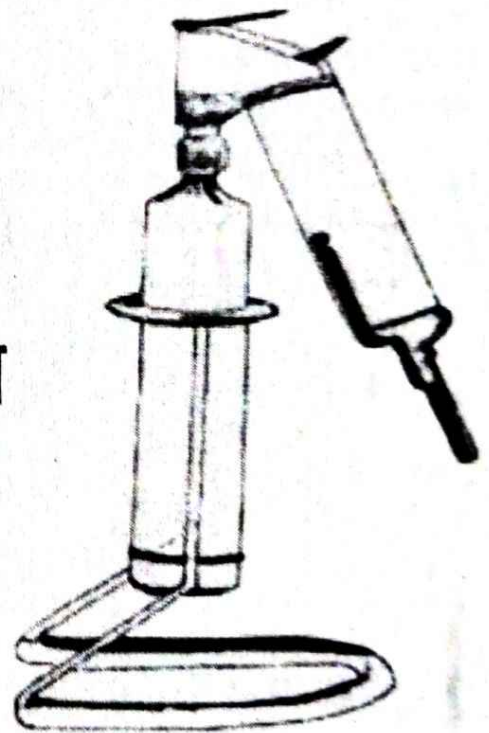
भारत में आकाशवाणी केंद्रों के पते

❑ संकलन कर्ता : सिराज मिथुन
बाड़ा हिन्दू राव,
दिल्ली–6
Mobile : 9811441104
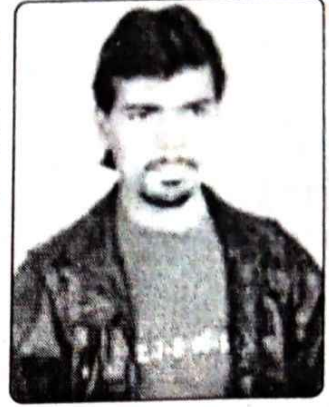
* उर्दू सर्विस पो. बॉक्स 500
  ऑल इंडिया रेडियो, पार्लियामेंट स्ट्रीट
  नई दिल्ली–110001

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी राष्ट्रीय प्रसारण सेवा
  जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम लोधी रोड
  नई दिल्ली–110003

* विविध भारती विज्ञापन प्रसारण सेवा
  आकाशवाणी भवन, संसद मार्ग
  नई दिल्ली–110001

* विविध भारती सेवा, पो बॉक्स 11178
  आकाशवाणी, बम्बई 400020

* C/o स्टेशन डायरेक्टर
  रेडियो कश्मीर जम्मू–180001

* C/o केन्द्र निदेशक, पो. बॉक्स 70
  संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001
  (दिल्ली ए.बी.डी. का एक ही पता है)

* केन्द्र निदेशक पो बॉक्स 6
  आकाशवाणी शिमला – 4

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी जालन्धर – 144001
  (इंचार्ज, युववाणी विभाग,
  इंचार्ज, देश पंजाब प्रोग्राम
  स्काई रेडियो पंजाबी सर्विस)

* हिन्दी एकांश, विदैशिक प्रसारण सेवा
  पो. बॉक्स 500, आकाशवाणी भवन
  संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी रोहतक – 124001
  (इंचार्ज, संसार कार्यक्रम)

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी, रोहतक–124001
  (इंचार्ज, युवा संसार कार्यक्रम)

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी आगरा – 282001

* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी, नजीबााद–246763

* C/o केन्द्र निदेशक
  पो. बॉक्स 26
  आकाशवाणी, गोरखपुर–273001

* C/o केन्द्र निदेशक
  पो बॉक्स 3
  आकाशवाणी ग्वालियर – 474002

* केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी केन्द्र पो बॉक्स 14
  कटंगी जबलपुर–48315

* C/o स्टेशन डायरेक्टर
रेडियो कश्मीर
श्रीनगर 190001

* C/o केन्द्र निदेशक
मालवा हाउस
आकाशवाणी इन्दौर

* C/o केन्द्र निदेशक, पो बॉक्स 97
आकाशवाणी रायपुर – 492001

* C/o केन्द्र निदेशक
शामलाहिल
आकाशवाणी भोपाल – 462002

* C/o केन्द्र निदेशक
आकाशवाणी रामपुर – 244901

* C/o केन्द्र निदेशक
आकाशवाणी लखनऊ–226001

देशी-विदेशी प्रसारण पते व मीटर बैंड्स

* हिन्दी सेक्शन रेडियो जापान, N.H.K.
नई दिल्ली कार्यालय 6वीं मंजिल
मेरीडियन कमर्शियल 8, विंडसर प्लेस
जनपथ, नई दिल्ली–110001
Hindi Section Radio Japan, N.H.K.
Tokyo 150001, Japan
SW -:25 Mtr. Band

* हिन्दी सर्विस वाइस ऑफ अमेरिका
पो बॉक्स 564, नई दिल्ली–110001
Hindi Service Voice of America
Washington D.C., Post Box 20547-330
Independence Avenue South West, U.S.A.
SW : 41, 49, 31 & 25 Mtr. Band

* हिन्दी सर्विस रेडियो रूस
C/o श्री गेओर्गी किरिचाती
रेडियो रूस संवाददाता सो0 94
आनन्द निकेतन, नई दिल्ली–110057

* हिन्दी प्रसारण सत्यस्वर, रेडियो वेरीटास एशिया
सत्य प्रकाशन संचार केन्द्र पो. बॉक्स 507
भंवरकुंआ, इन्दौर (म0प्र0) 452 001
Radio Veritas Asia, Hindi Dept.
Post Box 2642, Quezone City- 1166
Phillippines
SW : 19 & 31 Mtr. Band

* हिन्दी विभाग रेडियो काहिरा
एम्बेसी ऑफ इजिप्ट (मिश्र)
नीति मार्ग
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110021
Hindi Service Radio Cairo
External Service Post Box 566
Cairo (Egypt)
SW : 16 Mtr. Band

* हिन्दी विभाग रेडियो वोइचे वैले
द वाइस ऑफ जर्मनी पो बॉक्स 5211
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110021
Hindi Section Deutshe Welle-50588
Koln- Deutchland
SW : 49, 41, 31 & 22 Mtr. Band
MW : 1548 Khz

* बी0बी0सी0 हिन्दी अनुष्ठान
पो बाक्स 3035, नई दिल्ली–110003
Hindi Service B.B.C. Post Box 76
Bush House, London We-23, 4 PH
SW : 41, 31, 25, 19 Mtr. Band & MW

* Radio Vatican Indian Office Hindi Service
Loyola College P. Box 716, Madras - 600034
Indian Sector Radio Vatican
00120, Vatican City (Italy)

* C/o स्टेशन डायरेक्टर
  रेडियो कश्मीर
  श्रीनगर 190001
* C/o केन्द्र निदेशक
  मालवा हाउस
  आकाशवाणी इन्दौर
* C/o केन्द्र निदेशक, पो बॉक्स 97
  आकाशवाणी रायपुर – 492001
* C/o केन्द्र निदेशक
  शामलाहिल
  आकाशवाणी भोपाल – 462002
* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी रामपुर – 244901
* C/o केन्द्र निदेशक
  आकाशवाणी लखनऊ–226001

देशी-विदेशी प्रसारण पते व मीटर बैंड्स

* हिन्दी सेक्शन रेडियो जापान, N.H.K.
  नई दिल्ली कार्यालय 6वीं मंजिल
  मेरीडियन कमर्शियल 8, विंडसर प्लेस
  जनपथ, नई दिल्ली–110001
  Hindi Section Radio Japan, N.H.K.
  Tokyo 150001, Japan
  SW -:25 Mtr. Band
* हिन्दी सर्विस वाइस ऑफ अमेरिका
  पो बॉक्स 564, नई दिल्ली–110001
  Hindi Service Voice of America
  Washington D.C., Post Box 20547-330
  Independence Avenue South West, U.S.A.
  SW : 41, 49, 31 & 25 Mtr. Band
* हिन्दी सर्विस रेडियो रूस
  C/o श्री गेओर्गी किरिचाती
  रेडियो रूस संवाददाता सो0 94
  आनन्द निकेतन, नई दिल्ली–110057
* हिन्दी प्रसारण सत्यस्वर, रेडियो वेरीटास एशिया
  सत्य प्रकाशन संचार केन्द्र पो. बॉक्स 507
  भंवरकुंआ, इन्दौर (म0प्र0) 452 001
  Radio Veritas Asia, Hindi Dept.
  Post Box 2642, Quezone City- 1166
  Phillippines
  SW : 19 & 31 Mtr. Band
* हिन्दी विभाग रेडियो काहिरा
  एम्बेसी ऑफ इजिप्ट (मिश्र)
  नीति मार्ग
  चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110021
  Hindi Service Radio Cairo
  External Service Post Box 566
  Cairo (Egypt)
  SW : 16 Mtr. Band
* हिन्दी विभाग रेडियो वोइचे वैले
  द वाइस ऑफ जर्मनी पो बॉक्स 5211
  चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–110021
  Hindi Section Deutshe Welle-50588
  Koln- Deutchland
  SW : 49, 41, 31 & 22 Mtr. Band
  MW : 1548 Khz
* बी0बी0सी0 हिन्दी अनुष्ठान
  पो बाक्स 3035, नई दिल्ली–110003
  Hindi Service B.B.C. Post Box 76
  Bush House, London We-23, 4 PH
  SW : 41, 31, 25, 19 Mtr. Band & MW
* Radio Vatican Indian Office Hindi Service
  Loyola College P. Box 716, Madras - 600034
  Indian Sector Radio Vatican
  00120, Vatican City (Italy)

* हिन्दी सर्विस रेडियो ताशकन्द रूम नं 20
जनपथ होटल, नई दिल्ली–110001
Hindi Service S.L.B.C.] Colombo-7 Srilanka
SW : 25 & 41 Mtr. Band

* हिन्दी सर्विस फैमिली रेडियो
C/o एम.जे. एलेकजेंडर
तैक्काली (आ.प्र.) 532201
Hindi Service Family Stations, Okland
California - 94621 U.S.A.
SW : 25 Mtr. Band

* फीबा रेडियो पो. बॉक्स 6
नई दिल्ली 110001
SW : 25 & 19 Mtr Band

* विश्ववाणी पो. बॉक्स 316
लखनऊ उ0प्र0 226001
SW : 25 & 41 Mtr Band

* इब्रा रेडियो हिन्दी विभाग
पो बॉक्स 124, देहरादून– 248001
SW : 19 & 25 Mtr Band

* Hindi Service
Adventist World Radio Post Box 17
Salisbury Park, Pune - 411 001 (India)
SW : 41' 22 & 49 Mtr. Band

* उर्दू सर्विस रेडियो तेहरान
5, बारा खम्भा रोड,
नई दिल्ली–110001
SW : 25 & 31 Mtr. Band

* उर्दू सर्विस रेडियो जद्दा
कोड 21161 जद्दा (सऊदी अरब)
SW : 19 & 16 Mtr. Band

* Hindi Service
C/o Director, External Service
Radio Bangladesh Post Box 2204
Dhaka (Bangladesh)

* रेडियो पाकिस्तान हिन्दी सर्विस
पाकिस्तान ब्रॉडकॉस्टिंग हाउस
प्रोग्राम डायरेक्टर, पाकिस्तान दूतावास
6, शान्ति पथ, नई दिल्ली–110021

* Radio Netherlands
Post Box 5257, Chanakya Puri
New Delhi-110021
Radio Netherlands Post Box 222
1200 J.G. Hilversum, The Netherlands

* Radio Romania International
Embassy of Romania A-52 Vasant Marg,
VasantVihar New Delhi-110057
Radio Romania International
Str. General Bethelast 60-62
Post Box 111, 70749, Bucuresti, Romania

* Voice of Combodia
Embassy of Combodia
B-47, Soami Nagar, New Delhi-17

* Voice of Combodia
28 AV, Sandech Chou Nath
Phnom Penh (Combodia)

* Radio Thailand, Royal Embassy of Thailand
56-N, Nyaya Marg, Chanakyapuri
New Delhi-110021

* Radio Thailand External Service
236, Vithavadi Rangsit Highway
Huay Khwang, Bangkok-10400 Thailand

* English Service Letter Box
Monitor Radio International
Post Box 1881, Bombay - 400001
English Service
Monitor Radio Letterbox
58, Boston M.A. 02123-0058 U.S.A.

* Net Work Post Box 25111
Bangalore - 560025

* Radio Swedan, S-105, Stockhaln
(Swedan)

फैन मेल

★ पंडित मेवालाल 'परदेसी' महोबा

सवाल : प्यार करने वाले भी दहेज़ क्यों मांगते हैं ?

उत्तर : 'परदेसी' भाई जी ! माना कि इंसानी दिल बड़ा हरकती है। लेकिन ये ज़रूरी तो नहीं कि हर प्यार करने वाले (प्रेमी) की ऐसी मानसिकता हो। एक साधु–सन्त के पास से चोरी, स्मगलिंग का माल बरामद हो जाये तो वह साधु–सन्त उसी समय चोर–स्मगलर हो जाता है। इसी प्रकार प्यार करने वाला–प्रेमी दहेज़ चाहने या दहेज़ की मांग करने से पूर्व अपनी संज्ञा खो बैठता हे अर्थात् वह प्यार करने वाला नहीं रहता। अतः प्यार करने वाले – प्रेमी पर यह आरोप क्यो कर वाजिब होगा ?

सवाल : क्रोध से क्या लाभ ? क्या हानि है ?

उत्तर : मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण कहे गए हैं जिन में दसवां लक्षण है –अक्रोधा यानि क्रोध न करना। आमर्ष, आक्रोष किसी भी प्रकार से क्रोध करना मानसिक तनाव उत्पन्न करता है। यह शरीर, मन–बु; और मस्तिष्क को भीषण क्षति पहुंचाता है और व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को अस्वस्थ कर देता है। क़ौम और वतन के दुश्मनों, हमलावरों, गद्दारों, तथा मानवता के शत्रुओं पर क्रोध करना जायज़ भी होता है, लाभप्रद और सराहनीय थी।

★ श्लोक सक्सेना अक्के, अलीगढ़

सवाल : कई लड़कियाँ सवाल करती हैं कि आज के युग में प्यार का क्या महत्व है। प्रकाश डालें।

उत्तर : ये सोच स्वार्थपरक मानसिकता की दलील है। विशेषण अर्थ की व्यापकता को संकीर्ण करता है। प्यार को विशेषण करता है। प्यार को विशेषण लगाना, उसका मूल्य आंकना चांद पर थूकने के बराबर होगा। प्यार–शाश्वत अपरिवर्तनशील, अन्तरात्मा की मृदुलतम एवं सूक्ष्मतम अनुभूति अशेष है। इस में न अन्य कुछ समा सकता है और न ही इसे मथ कर 'प्यार' के अतिरिक्त अन्य कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

★ इसहाक़ नबी, बिसलपुर

सवाल : आज के दौर में मियां–बीवी का बुढ़ापा सुख चैन से कैसे कटे ?

उत्तर : बे–औलाद होने पर ये मुमकिन हो सकता है। किसी को 'नामुराद' कहना गाली देना माना जाता रहा है लेकिन सन्त फक़ीरों का क़ौल है कि जिसकी कोई मुराद बाकी नहीं रहती वो दुनिया से निजात पा जाता है। ऐन मुमकिन लगता है कि आने वाली सदी में लोग बे–औलाद रहने की मन्नतें माना करेंगे।

- सम्पादक

आमिर कुरैशी

रैनबो फ्रेन्ड
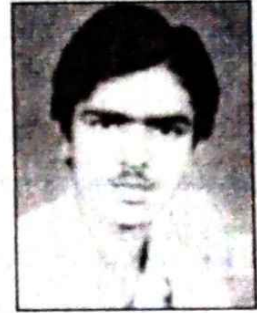
रामकिशन

आशू वर्मा

परवेज़ आलम
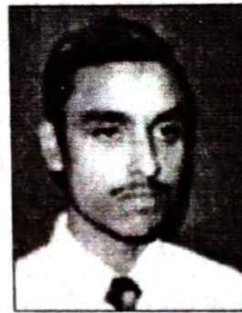
इरशाद

वकील अंसारी

सलीम राही

बबलू बादशाह

आफ़ताब अमरोही

गौतम प्रकाश

कृपया ध्यान दें

यह पत्रिका केवल मनोरंजन के उद्देश्य से छपवाई गई है, इस पत्रिका का कोई भी उद्देश्य व्यापारिक हितों के लिए नहीं किया गया है। इस पत्रिका में छपवाये गये शेर, कविता, कहानी व चुटकुले इत्यादि केवल अपनी पसंद व्यक्त करते हैं, किसी भी प्रकार के स्वामित्व का दावा नहीं करते हैं।

- द्वारा सम्पादक मंडल

खुशी | विपिन और जोनी कश्यप | काशिफ खान | अमृता भाटी | प्रनीता भाटी

नीरु भाटी | चन्द्रपाल कश्यप | दिग्दर्शन | जरगाम उल्ला खान | फिदा-उर-रहमान

एजाज़ अहमद | हरभगवंत सिंह | तपन गुप्ता | त्रिदीप | विभोर
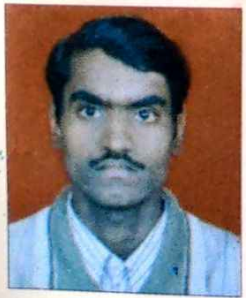
संजय कुमार | मेहताब खान | वसीम खान | शाहीद जमाल | अनिल तामकर

गिरधारी विश्वकर्मा | शफीक भारती | प्रेम प्रकाश | विजेन्द्र सिंह | बेबी रिंकी और बेबी पिंकी

13 दिसम्बर 2003 गौहर परवेज़ की शादी के अवसर पर 'हमारी आवाज़' के प्रथम अंक का विमोचन किया गया

खुशी — काशिफ खान — विपिन और जोनी कश्यप — मुजाहिद खान

बबलू कश्यप — तुषार गुप्ता — पिन्टू दीवाना — बेबी रिंकी और बेबी पिंकी